THE LARGEST CIRCULATED AND READ HINDI DAILY IN TELANGANA & ANDHRA PRADESH

स्वतंत्र वार्ता

epaper.vaartha.com

वर्ष-29 अंक : 358 (हैदराबाद, निजामाबाद, विशाखापट्टणम, तिरुपति से प्रकाशित) **चैत्र कृ.7 2081 शुक्रवार, 21 मार्च-2025**

प्रधान संपादक - **डॉ. गिरीश कुमार संघी** हैदराबाद नगर ❊ **पृष्ठ : 16 मूल्य : 8 रुपये**

A quality product from

PAN BAHAR

पान बहार

द हेरिटेज इलायची

पहचान कामयाबी की

This contains sodium saccharin (INS 954), sucralose (INS 955) and Neotame (INS 961).
Not recommended for children. No sugar added in the product.
CONTAINS ARTIFICIAL SWEETENER AND FOR CALORIE CONSCIOUS

TOLL FREE NO.: 1800 257 2258 | www.panbahar.in

धार कोठी में नगर निगम ने हटाया अवैध निर्माण पेंटहाउस को तोड़ा, आवासीय प्लॉट पर खोल ली थी दुकान

इंदौर,20 मार्च (एजेंसियां)। इंदौर के धार कोठी क्षेत्र में नगर निगम ने गुरुवार सुबह अवैध निर्माण हटाया। मौके पर पहुंचे अमले ने पहले तीन मंजिला बिल्डिंग पर बनाए गए अवैध पेंटहाउस को तोड़ा, फिर तल मंजिल पर किए गए अवैध निर्माण को हटाया। एक माह पहले भवन मालिक को नगर निगम ने स्वेच्छता से अवैध निर्माण हटाने के लिए कहा था, लेकिन तय समय के बावजूद निर्माण नहीं तोड़ा गया, इसलिए गुरुवार सुबह रिमूवल गैंग ने मौके पर पहुंच कर निर्माण तोड़ दिया। नगर निगम की भवन अनुज्ञा शाखा से इस बिल्डिंग को लेकर जी प्लस थ्री के निर्माण की अनुमति मिली थी, लेकिन आगे एमओएस को कवर कर लिया गया था और छत पर पेंटा हाउस भी बना लिया गया था। जिस इलाके में तीन मंजिल भवन बनाया गया है।

जम्मू-कश्मीर: कठुआ में पकड़ा गया पाकिस्तानी घुसपैठिया

क्या कादिर बख्श का है अमैरा से कनेक्शन?

जम्मू,20 मार्च (एजेंसियां)। कश्मीर के कठुआ जिले में अंतरराष्ट्रीय सीमा (आईबी) पर सुरक्षा बलों ने एक घुसपैठिए को पकड़ा है। पुलिस सूत्रों की ओर से दी गई जानकारी के मुताबिक, ये घुसपैठिया पाकिस्तान का रहने वाला है। सुरक्षा बलों ने बुधवार रात को हीरानगर सेक्टर में सीमा पार करने की कोशिश कर रहे एक शख्स की संदिग्ध गतिविधि देखी, जिसके बाद सुरक्षाबलों ने संदिग्ध को हिरासत में लेने से पहले कुछ चेतावनी राउंड फायरिंग की। घुसपैठिए की पहचान पाकिस्तान के गफूराबाद, तहसील चिनियट के रहने वाले कादिर बख्श के रूप में हुई है। इसको लेकर आगे की जांच की जा रही है।

जम्मू कश्मीर के किश्तवाड़ा में भी सुरक्षाबलों की ओर से सर्च अभियान चलाया जा रहा है। सुरक्षाबलों को यहां पर भी घुसपैठ होने की सूचना मिली है, ऐसे में

इस तरह की गतिविधियों पर कड़ी नजर रखने के लिए सुरक्षाबल सर्च ऑपरेशन चला रहे हैं।

पाकिस्तानी महिला को पकड़ा

2 दिन पहले श्रीगंगानगर से एक महिला घुसपैठिये को गिरफ्तार किया गया था। ये भी पाकिस्तान की रहने वाली है। महिला की उम्र 30 साल है और उसका नाम अमैरा है। महिला को हिरासत में लेकर आगे की पूछताछ की जा रही है। शुरुआती पूछताछ में सामने आया है कि महिला के पति का नाम वसीम है। सुरक्षाबलों की चौकन्ने रहने की वजह से पिछले कुछ 2 दिनों में दो पाकिस्तानी घुसपैठिये को गिरफ्तार किया गया है। इस एंगल से भी जांच की जा रही है कि कहीं कादिर बख्श और अमैरा दोनों के बीच कोई कनेक्शन तो नहीं है? दोनों पाकिस्तान से ताल्लुक रखते हैं और महज दो दिन के भीतर दोनों ने घुसपैठ करने की कोशिश की।

महिला ने पाकिस्तान लौटने से किया मना

पुलिस को पाकिस्तानी महिला के पास से फोन बरामद हुआ है, जिसके आधार पर जांच की जा रही है। महिला ने पुलिस को पूछताछ में बताया कि उसे अपने मुल्क पाकिस्तान वापस नहीं जाना है। उसने कहा कि वहां पर उसे जान से मार दिया जाएगा, ऐसे में जान को खतरा होने की वजह से वो भारत आई है। वो दोबारा खतरे के मुंह में वापस नहीं जाना चाहती है।

अलर्ट मोड में हैं सुरक्षा एजेंसियां

हाल के दिनों बढ़ते घुसपैठ के मामलों के कारण सुरक्षा एजेंसियां अलर्ट मोड में हैं, ताकि किसी भी साजिश को नाकाम किया जा सके। दोनों के ही तार किसी जासूस या फिर आतंकी नेटवर्क से तो नहीं जुड़े हैं, इसका पता भी लगाया जा रहा है। फिलहाल, सुरक्षा एजेंसियां ये खंगालने में जुटी हैं कि दोनों का ही पाकिस्तान से भारत आने का वास्तविक उद्देश्य क्या है?

शराब के नशे में मंदिर पर फेंका पत्थर, लोगों ने दबोचकर खंभे से बांधा

बेलगावी,20 मार्च (एजेंसियां)। कर्नाटक के बेलगावी जिले में एक शख्स ने शराब के नशे में मंदिर पर पत्थर फेंक दिया है। नाराज स्थानीय लोगों ने शख्स को पकड़ लिया और खंभे से बांध दिया। जब पुलिस को इस घटना की जानकारी मिली तो उन्होंने आरोपी को गिरफ्तार कर लिया। आरोपी शख्स की पहचान यासिर के रूप में हुई है। दरअसल, ये पूरी घटना बेलगावी शहर के पंगुली गली में हुई है। पंगुली गली में शराब के नशे में धुत होकर एक शख्स ने अश्वत्थामा मंदिर पर पत्थर फेंक दिया और भागने लगा। इसके बाद स्थानीय लोगों ने युवक को पकड़कर खंभे से बांध दिया। आरोपी की पहचान उज्वल नगर निवासी यासिर के रूप में की गई। इसके बाद मार्केट पुलिस स्टेशन के पुलिसकर्मियों ने यासिर को गिरफ्तार कर लिया। पत्थर फेंक कर भाग रहे आरोपी यासिर को स्थानीय लोगों ने पकड़ लिया और पुलिस के हवाले कर दिया।

असम जेल से रिहा होते ही पंजाब पुलिस ने किया गिरफ्तार

अमृतपाल सिंह के 7 सहयोगियों पर क्या है केस?

चंडीगढ,20 मार्च (एजेंसियां)। पंजाब के खडूर साहिब से निर्दलीय सांसद और अकाली दल वारिस पंजाब दे के प्रमुख अमृतपाल सिंह के मामले से जुड़ी एक खबर एनएसए डिब्रूगढ़ केंद्रीय कारागार से रिहा कर दिया गया। हालांकि, पंजाब पुलिस ने उन्हें एक अन्य मामले में फिर से गिरफ्तार कर लिया। अधिकारियों ने बुधवार (19 मार्च) को यह जानकारी दी। पंजाब पुलिस की 25 सदस्यीय टीम पिछले कई दिनों से डिब्रूगढ़ में मौजूद थी, ताकि अमृतपाल के सात सहयोगियों को स्थानांतरित करने की प्रक्रिया में सहायता की जा सके। 'वारिस पंजाब दे' संगठन के प्रमुख अमृतपाल सिंह के ये सभी सात सहयोगी लगभग दो वर्षों से डिब्रूगढ़ की जेल में बंद थे। पंजाब पुलिस ने इन सातों को अपनी हिरासत में लेने के लिए उचित कानूनी प्रक्रिया अपनाई और उन्हें पंजाब स्थानांतरित करने की योजना बनाई। पुलिस अधिकारियों ने बताया कि इन सभी को अमृतसर ले जाया जाएगा, जहां उन पर एक अन्य मामले में कानूनी कार्रवाई की जाएगी। गौरतलब है कि अमृतपाल सिंह और उनके सहयोगियों को कट्टरपंथी गतिविधियों और हिंसा भड़काने के आरोपों के चलते गिरफ्तार किया गया था। इससे पहले, पंजाब में अजनाला हिंसा मामले में उनकी संलिप्तता को लेकर भी जांच जारी थी। इस घटनाक्रम से जुड़े दृश्य भी सामने आए हैं, जिसमें डिब्रूगढ़ पुलिस स्टेशन के बाहर सुरक्षा व्यवस्था को कड़ा किया गया था।

सुप्रीम कोर्ट परिसर में शख्स ने खा ली चूहामार दवा

10 साल पहले पत्नी कर चुकी है आत्महत्या

नई दिल्ली,20 मार्च (एजेंसियां)। सुप्रीम कोर्ट के लॉन में एक आदमी ने चूहेमार दवा खाकर आत्महत्या का प्रयास किया। उसके जहर खाने की कोशिश के बाद मौके पर अफरा-तफरी मच गई। मौके पर पहुंची दिल्ली पुलिस उसे वहां से पकड़कर ले गई है और उसके इस कदम को लेकर पुलिस की ओर से पूछताछ की गई। आखिर उसने कोर्ट परिसर में ही जहर खाने की कोशिश क्यों की? उसके जहर खाने के पीछे की वजह क्या है? पूछताछ में सामने आई वजह के बाद हर कोई हैरान रह गया। शख्स ने फूट-फूटकर अपनी आपबीती बताई। उसने कहा कि वो सालों साल से न्याय

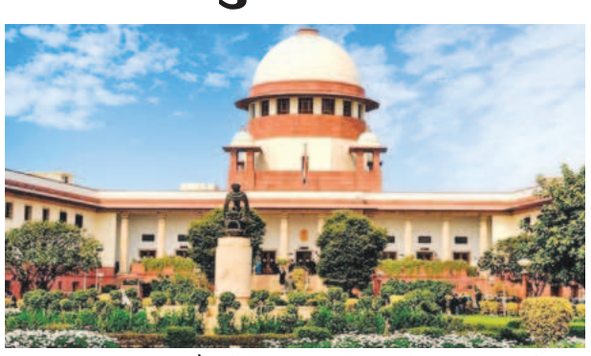

का इंतजार कर रहा है, लेकिन अभी तक उसे न्याय नहीं मिल पाया है। शख्स की पत्नी के साथ रेप की घटना हुई और इस मामले में केस भी दर्ज कराया गया।

पत्नी ने किया सुसाइड

शख्स के मुताबिक, रेप की घटना के बाद पत्नी इतनी ज्यादा आहत हुई कि उसने सुसाइड करने का फैसला किया। एक दिन वो इसमें कामयाब भी हो गई। पत्नी की सुसाइड के बाद पति और भी अकेला हो गया। अब उसके पास अपनी पत्नी को न्याय दिलाने के लिए कानूनी लड़ाई के अलावा और कोई तरीका नहीं था। ऐसे में तारीख पर तारीख लगती रही और वो रेप करने वाले असली गुनहगारों को सजा दिलाने का इंतजार करता रहा।

10 साल का बीता समय

पूछताछ में सामने आया है कि सुसाइड की कोशिश करने वाला शख्स हरियाणा का रहने वाला है। 10 साल पहले उसकी पत्नी के साथ रेप किया गया था। इस घटना के बात पत्नी ने सुसाइड कर लिया था। इस मामले में केस दर्ज कराया गया है, लेकिन केस के बाद भी आरोपियों को अभी तक गिरफ्तार नहीं किया गया। लंबे समय तक कानूनी लड़ाई लड़ते-लड़ते वो थक गया और परेशान हो गया। उसने पुलिस को पूछताछ में बताया किइसी वजह से क्षुब्ध होकर उसने सुसाइड करने की कोशिश की।

पिंजरे में कैद गुलदार को जिंदा आग के हवाले किया था प्रधान सहित पांच ग्रामीणों को एक-एक साल कारावास

पौड़ी,20 मार्च (एजेंसियां)। मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट पौड़ी की अदालत ने पिंजरे में कैद गुलदार को जिंदा आग के हवाले करने वाले तत्कालीन ग्राम प्रधान सहित पांच ग्रामीणों को एक-एक साल कारावास की सजा सुनाई है। अदालत ने पांचों दोषियों को एक-एक साल के साधारण कारावास की सजा के साथ 3500-3500 का अर्थदंड भी लगाया है। अर्थदंड जमा करने पर दोषियों को 15 दिन के अतिरिक्त कारावास की सजा भुगतनी होगी। पाबौ ब्लॉक के सपलोड़ी गांव में बीते 24 मई 2022 को पिंजरे में कैद गुलदार को आक्रोशित भीड़ ने जिंदा आग के हवाले कर दिया था।

मणिपुर पुलिस ने सात उग्रवादियों को किया गिरफ्तार, बड़ी मात्रा में हथियार बरामद

इंफाल,20 मार्च (एजेंसियां)। मणिपुर पुलिस ने पिछले 24 घंटों में कई सफल अभियानों को अंजाम दिया। इस दौरान सात उग्रवादियों को गिरफ्तार किया और महत्वपूर्ण हथियारों और गोला-बारूद का जखीरा बरामद किया गया। पुलिस के मुताबिक बिष्णुपुर जिले में पुलिस ने तीन लोगों को गिरफ्तार किया, जिसमें केसीपी (सिटी मीतई) का सक्रिय सदस्य खुंमुकचम इबोमचा सिंह भी शामिल है। 47 वर्षीय इबोमचाको युमनाम प्रेमकुमार सिंह और युमनाम आनंदकुमार सिंह के साथ गिरफ्तार किया गया, जो चुराचांदपुर के थिंगकंगफाई गांव के मूल निवासी हैं। अधिकारियों ने एक एम-20 पिस्तौल, विभिन्न कैलिबर के गोला-बारूद, और संचार उपकरण जैसे तीन बाओफेंग वायरलेस सेट बरामद किए। पुलिस के मुताबिक एक अन्य ऑपरेशन में बिष्णुपुर जिले की पुलिस ने सलाम बृजन सिंह को गिरफ्तार किया, जो सोशलिस्ट रिवोल्यूशनरी पार्टी (एसओआरआपीए), कांगलेइपाक का सक्रिय सदस्य है। सिंह, जो पहले केसीपी (ताइबांगनबा) से जुड़ा हुआ था, को कुम्बी पुलिस स्टेशन के अंतर्गत सन्दांगखोंग क्षेत्र में गिरफ्तार किया गया। अधिकारियों ने बताया कि वह सरकारी अधिकारियों से उगाही और धमकाने में शामिल था। उससे एसओआरआपीए के आठ मांग पत्र और बिष्णुपुर जिले के 38 स्कूलों के नामों की एक सूची भी बरामद की गई। पुलिस ने बताया कि सबसे सबसे महत्वपूर्ण बरामदगी तैंग्नोपॉल जिले के बॉर्डर पिलर 76 के पास एक ऑपरेशन से हुई, जहां सुरक्षा बलों ने दो उग्रवादियों लैश्राम तोम्बा सिंह जो पीआरईपीएके (पीआरओ) से है और युमनाम रोशन मीतई जो केवाईकेएल से जुड़ा, को गिरफ्तार किया। इस ऑपरेशन में एक लाइट मशीन गन, एक एक-56 राइफल, 300 से अधिक गोलियां, संचार उपकरण और सैन्य गियर सहित एक बड़ा हथियारों का जखीरा बरामद किया गया।

आरजी कर मामला: 7 महीने पहले महिला ट्रेनी डॉक्टर के साथ रेप-हत्या

अब परिवार को मिला डेथ सर्टिफिकेट

कोलकाता,20 मार्च (एजेंसियां)। आरजी कर मामला: पिछले साल अगस्त माह में कोलकाता के आरजी कर मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल में एक महिला ट्रेनी डॉक्टर के साथ दुष्कर्म के बाद उसकी हत्या कर दी गई थी। सात माह बीत जाने के बाद अब ट्रेनी डॉक्टर के माता-पिता को पश्चिम बंगाल के स्वास्थ्य सचिव एनएस निगम ने उनकी बेटी का मृत्यु प्रमाणपत्र सौंपा है। स्वास्थ्य सचिव, आरजी कर अस्पताल के चिकित्सा अधीक्षक एवं उप प्राचार्य (एमएसवीपी) के साथ बुधवार शाम महिला चिकित्सक के घर गए और उनके माता-पिता को मृत्यु प्रमाणपत्र सौंपा। निगम ने कहा, उन्हें मूल मृत्यु प्रमाणपत्र की आवश्यकता थी। आज, मैं यहां आया और उन्हें यह सौंप दिया। कोई चर्चा नहीं हुई। पिछले काफी समय से मृत्यु प्रमाणपत्र की मांग कर रहे चिकित्सक के पिता ने कहा, ''स्वास्थ्य सचिव अचानक हमारे घर आए और हमें मूल दस्तावेज सौंपा।''उन्होंने आरोप लगाया, ''मृत्यु प्रमाणपत्र के लिए हमें काफी परेशानी झेलनी पड़ी। हमने जनवरी में एक ईमेल भेजा था और उसके बाद भी हमें एक विभाग से दूसरे विभाग के चक्कर लगाने पड़े, लेकिन किसी ने सहयोग नहीं किया।''उन्होंने एक 'लिंक' मिलने की बात भी स्वीकार की जिसका उपयोग बाद में प्रमाणपत्र की प्रति डाउनलोड करने के लिए किया जा सकता है। पिछले साल 9 अगस्त को आरजी कर अस्पताल के आपातकालीन विभाग की इमारत के एक संगोष्ठी कक्ष में स्नातकोत्तर प्रशिक्षु का शव मिला था, जिसके बाद व्यापक स्तर पर विरोध-प्रदर्शन हुए थे। ट्रेनी डॉक्टर से रेप और मर्डर के दोषी संजय रॉय को उम्रकैद की सजा सुनाई गई और 50 हजार का जुर्माना लगाया गया है।

नेपोरा बाईपास पर टेम्पो ट्रैवलर पलटने से नौ पर्यटक घायल जांच में जुटी पुलिस

श्रीनगर,20 मार्च (एजेंसियां)। आज सुबह नेपोरा बाईपास, अनंतनाग में एक पर्यटक वाहन (टेम्पो ट्रैवलर) दुर्घटनाग्रस्त हो गया, जिसमें नौ पर्यटक घायल हो गए। घायलों को तुरंत मेडिकल सहायता के लिए जिला अस्पताल जीएमसी अनंतनाग शिफ्ट किया गया। घटना के बारे में जानकारी प्राप्त होते ही पुलिस और स्थानीय प्रशासन ने मौके पर पहुंचकर राहत कार्य शुरू किया। घायलों की स्थिति अभी स्थिर बताई जा रही है, और उन्हें जरूरी चिकित्सा उपचार दिया जा रहा है।

हेट ट्वीट मामला: राउज एवेन्यू कोर्ट ने कपिल मिश्रा के केस में स्टेटस रिपोर्ट मांगी

नई दिल्ली,20 मार्च (एजेंसियां)। दिल्ली की राउज एवेन्यू कोर्ट ने मौजूदा दिल्ली के मंत्री कपिल मिश्रा के आचार संहिता का उल्लंघन करने के मामले को लेकर स्टेटस रिपोर्ट मांगी है। कोर्ट ने आदेश दिया कि डीसीपी अगली सुनवाई की तारीख से पहले एक विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत करें। कोर्ट मामले में 8 अप्रैल को आरोपों पर बहस पर सुनवाई करेगी। मंत्री कपिल मिश्रा ने 23 जनवरी साल 2020 को दिल्ली विधानसभा चुनाव के संबंध में कथित आपत्तिजनक बयान सोशल मीडिया हैंडल एक्स पर पोस्ट किया था। जिस पर बवाल खड़ा गया हो गया था। उनके इसी बयान को लेकर चुनाव अधिकारी ने उनके खिलाफ शिकायत दर्ज करवाई थी।

एचसी से लगा झटका

इसी शिकायत के आधार पर एफआईआर दर्ज की गई थी। सेशन कोर्ट ने 7 मार्च के अपने आदेश में कहा था कि वो मजिस्ट्रेट कोर्ट के इस फैसले से पूरी तरह सहमत है कि चुनाव अधिकारी की तरफ से दायर की गई शिकायत जन प्रतिनिधित्व अधिनियम की धारा 125 के तहत अपराध का संज्ञान लेने के लिए पर्याप्त है। हालांकि, इससे पहले कपिल मिश्रा को इस केस को लेकर दिल्ली हाई कोर्ट से झटका लगा है। कोर्ट ने कपिल मिश्रा के खिलाफ निचली अदालत में कार्यवाही पर रोक लगाने से इनकार कर दिया है। जस्टिस रविंद्र डुडेजा ने कहा, निचली अदालत की कार्यवाही पर रोक लगाने की कोई जरूरत नहीं है।

निचली अदालत को मामले में आगे बढ़ने की छूट है। वहीं, हाई कोर्ट ने नोटिस को लेकर पुलिस को 4 सप्ताह का समय दिया है और अगली सुनवाई की तारीख 19 मई तय की है। इस मामले में निचली अदालत में 20 मार्च को सुनवाई होनी है। इससे पहले 7 मार्च को सेशन कोर्ट ने मिश्रा की रिवीजन याचिका खारिज कर दी थी और कहा था कि उनका बयान धर्म के आधार पर नफरत को बढ़ावा देने की एक कोशिश प्रतीत होती है, जिसमें अप्रत्यक्ष रूप से उस देश का उल्लेख किया गया है, जिसका इस्तेमाल आम बोलचाल में अक्सर एक विशेष धर्म के सदस्यों को दर्शाने के लिए किया जाता है।

कपिल मिश्रा ने क्या पोस्ट किया था?

दिल्ली विधानसभा चुनाव 2020 के दौरान राजधानी में नागरिकता संशोधन अधिनियम (सीएए) के तहत विरोध प्रदर्शन चल रहा था। इसी दौरान कपिल मिश्रा ने चुनाव के दौरान सोशल मीडिया हैंडल एक्स पर पोस्ट करके असामाजिक और राष्ट्रविरोधी तत्वों की आलोचना की थी, जो सीएए के खिलाफ आंदोलन की आड़ में माहौल खराब करना चाहते थे।

कश्मीर के आप विधायक मेहराज मलिक का शराब को लेकर हिंदुओं पर विवादित बयान, भड़की बीजेपी

जम्मू,20 मार्च (एजेंसियां)। कश्मीर से डोडा से आम आदमी पार्टी के विधायक मेहराज मलिक के एक बयान ने राजनीतिक हलकों में तीखी बहस छेड़ दी है। उन्होंने हिंदुओं को लेकर टिप्पणी करते हुए कहा कि वे शराब के आदी हैं और त्योहारों के दौरान भी इसका सेवन करते हैं। उनके इस बयान को लेकर राजनीतिक गलियारों में विवाद बढ़ गया है। हालांकि, बढ़ते विवाद को देखते हुए मेहराज मलिक ने सफाई देते हुए कहा, हर कोई शराब पीता है, कुछ छिपकर और कुछ खुलेआम। शादियों में तो खुल कर पी जाती है। यह पहली बार नहीं है जब मैंने ऐसा कहा है। सच्चाई यह है कि सभी पीते हैं, लेकिन इसे सामान्य बनाने वाले एक विशेष वर्ग से आते हैं। यदि मेरे शब्दों से किसी की भावनाएं आहत हुई हैं, तो मैं माफी मांगता हूं। मेरा उद्देश्य किसी को ठेस पहुंचाना नहीं था।

बीजेपी की कड़ी प्रतिक्रिया

आप विधायक के इस बयान पर भारतीय जनता पार्टी ने कड़ी प्रतिक्रिया दी। बीजेपी विधायक विक्रम रंधावा ने मेहराज मलिक पर हमला बोलते हुए कहा, मैं पहले भी कह चुका हूं कि इस व्यक्ति (मेहराज मलिक) की मानसिकता संकीर्ण और सोच बेहद गिरी हुई है। उन्हें यह समझना चाहिए कि यह रमज़ान का पवित्र महीना चल रहा है। पहले अपने धर्म के सिद्धांतों का पालन करें, फिर दूसरों पर उंगली उठाएं। बीजेपी के अन्य नेताओं ने भी मेहराज मलिक के बयान की निंदा की और कहा कि इस तरह की टिप्पणियां समाज में शांति भंग करने और शत्रुता फैलाने का काम करती हैं। उन्होंने आम आदमी पार्टी से स्पष्टीकरण मांगते हुए कहा कि पार्टी को इस मुद्दे पर अपना रुख स्पष्ट करना चाहिए।

आम आदमी पार्टी की चुप्पी

अब तक आम आदमी पार्टी की ओर से इस बयान पर कोई आधिकारिक प्रतिक्रिया नहीं आई है। पार्टी के वरिष्ठ नेताओं ने भी इस मामले पर टिप्पणी करने से परहेज किया है। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि आप इस विवाद को अधिक तूल नहीं देना चाहती और इसी कारण अब तक कोई प्रतिक्रिया नहीं आई है। इस विवाद के चलते राजनीतिक माहौल गर्म हो गया है और दोनों दलों के समर्थकों के बीच भी तीखी बहस छिड़ गई है। देखना यह होगा कि इस मुद्दे पर आगे क्या रुख अपनाया जाता है और आम आदमी पार्टी इस विवाद से कैसे निपटती है।

रीवा में चने के दाने ने ली दो साल के मासूम की जान

रीवा,20 मार्च (एजेंसियां)। मध्य प्रदेश के रीवा जिले में एक मासूम बच्चे की चना खाने से मौत हो गई। चने का दाना बच्चे की सांस नली में फंस गया, जिससे उसकी तबीयत बिगड़ गई। परिजन उसे अस्पताल लेकर भागे, लेकिन वहां पहुंचने से पहले ही बच्चे ने मां सामने दम तोड़ दिया। जानकारी के अनुसार, यह दर्दनाक घटना जिले के समेरा गांव में बुधवार देर शाम घटी। समेरा में रहने वाले दो साल के रौनक को भूल लगी थी, ऐसे में उसने प्लेट में रखा चना उठाकर खा लिया। कुछ ही देर बाद उसकी सांस फूलने लगी और दम घुटने लगा। बच्चे की आंखें भी पलट गईं। परिवार वाले उसे उठाकर तुरंत संजय गांधी अस्पताल भागे लेकिन, रास्ते में उसकी सांसें थम गईं। अस्पताल पहुंचने पर डॉक्टरों ने भी उसे मृत घोषित कर दिया। बच्चे की मौत के बाद मां का रो-रोकर बुरा हाल है।

कांग्रेस का विरोध, कुंभकरण बन विधानसभा पहुंचे विधायक नेता प्रतिपक्ष ने बजाई बीन, फिर भी नहीं जागा

भोपाल,20 मार्च (एजेंसियां)। मध्य प्रदेश विधानसभा के बजट सत्र में कांग्रेस विधायकों द्वारा लगातार अनोखे विरोध-प्रदर्शन देखने को मिल रहे हैं। पहले दिन कांग्रेस विधायक चेहरे पर नकाब पहन कर आए तो दूसरे दिन सांप और पिटारा लेकर विधानसभा पहुंचे, इसके बाद बाद कांग्रेस विधायक सोने की ईंट लेकर विधानसभा पहुंचे और जमकर प्रदर्शन किया। आज गुरुवार को नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार के नेतृत्व में 'कुंभकरण' को विधानसभा परिसर में प्रवेश करा दिया गया। और फिर विपक्षी विधायकों ने बीन बजाकर विरोध प्रदर्शन किया। दरअसल, विधानसभा बजट सत्र के सातवें दिन महिदपुर से कांग्रेस विधायक दिनेश जैन बोस कुंभकरण के गेटअप में विधानसभा पहुंचे। इस दौरान उन्होंने सड़क पर लेटकर सरकार पर परिवहन घोटाले, बेरोजगारी और किसानों के मुद्दे पर चुप्पी साधने का आरोप लगाया। नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार और कांग्रेस के विधायकों ने बीन बजाकर उन्हें उठाने की कोशिश की। करीब दस मिनट तक बीन बजाने के बाद भी कुंभकरण नहीं जागा तो नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार ने अलग से प्रयास किए, तब जाकर कुंभकरण नींद से जागा। उसके जागने के बाद नेता प्रतिपक्ष ने कुंभकरण से पूछा कि क्यों नहीं जाग रहे थे, तब उसने खुद को सरकार बताते हुए कहा कि मेरी जब इच्छा होगी तभी जागूंगा।

सरकार कुंभकरण की नींद सो रही

इस पूरे नाटक के बाद नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार ने कहा कि सरकार कुंभकरण की नींद सो रही है और प्रदेश में घोटाले पर घोटाले हो रहे हैं। इसलिए इस प्रकार से नाटक कर सरकार को जगाने का प्रयास किया गया है।

कांग्रेस में कई गुट, सुर्खियों में बने रहना चाहते हैं सिंघार

वहीं, इस पूरे मामले को लेकर भाजपा के वरिष्ठ विधायक शैलेन्द्र जैन ने कहा कि कांग्रेस में गुट ही गुट बन गए हैं। उमंग सिंघार खुद का अस्तित्व बचाए रखने के लिए इस प्रकार के नाटक कर रहे हैं, जबकि उनके नाटक में कई विधायक शामिल नहीं हुए हैं। शैलेन्द्र जैन ने ये भी आरोप लगाया कि सदन के अंदर सरकार को घेरने के लिए कांग्रेस विधायकों के पास कुछ नहीं है। इसलिए वो बाहर इस प्रकार के नाटक कर सुर्खियों में बने रहना चाहते हैं।

THE LARGEST CIRCULATED AND READ HINDI DAILY IN TELANGANA & ANDHRA PRADESH

स्वतंत्र वार्ता

epaper.vaartha.com

संसद के बाहर विपक्षी सांसदों का प्रदर्शन

नई दिल्ली, 20 मार्च (एजेंसियां)। बजट सत्र के सातवें दिन गुरुवार को विपक्ष के सांसदों ने संसद परिसर में केंद्र सरकार के खिलाफ विरोध-प्रदर्शन किया। पंजाब के कांग्रेस सांसदों ने पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष अमरिंदर सिंह राजा वड़िंग के नेतृत्व में पंजाब-हरियाणा बॉर्डर पर किसानों के खिलाफ कार्रवाई को लेकर प्रदर्शन किया। वहीं तमिलनाडु में परिसीमन को लेकर केंद्र सरकार के खिलाफ डीएमके सांसदों ने प्रदर्शन किया। डीएमके सांसद कनिमोझी ने कहा, हम तमिलनाडु में निष्पक्ष परिसीमन चाहते हैं। केंद्र सरकार हमें संसद में ये मुद्दा उठाने नहीं दे रही। हमने 22 मार्च को सभी दलों की बैठक बुलाई है। डीएमके सांसद टी शिवा संसद में एक टी-शर्ट पहनकर पहुंचे।

वर्ष-29 अंक : 358 (हैदराबाद, निजामाबाद, विशाखापट्टणम, तिरुपति से प्रकाशित) **चैत्र कृ.7 2081 शुक्रवार, 21 मार्च-2025**

प्रधान संपादक - **डॉ. गिरीश कुमार संघी** हैदराबाद नगर ❊ **पृष्ठ : 16 मूल्य : 8 रुपये**

दो मुठभेड़ में 30 नक्सली मारे गए

> *बीजापुर में 26 > कांकेर में 4 का एनकाउंटर > शव-हथियार बरामद > फायरिंग जारी*

जगदलपुर, 20 मार्च (एजेंसियां)। छत्तीसगढ़ के बस्तर में दो मुठभेड़ में 26 नक्सली मारे गए हैं। पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक बीजापुर में 26 और कांकेर में 4 नक्सली मारे गए। मुठभेड़ में डीआरजी (डिस्ट्रिक्ट रिजर्व गार्ड) का एक जवान शहीद हो गया है।

पहली मुठभेड़ बीजापुर-दंतेवाड़ा बॉर्डर पर नक्सलियों के कोर इलाके में और दूसरी कांकेर-नारायणपुर सीमा पर अभी जारी है। बस्तर आईजी सुंदरराज पी. ने बताया कि गुरुवार दोपहर तक दोनों तरफ से फायरिंग जारी है। मारे गए नक्सलियों के शव और कई ऑटोमैटिक हथियार बरामद किए गए हैं। इधर, नारायणपुर-दंतेवाड़ा बॉर्डर पर स्थित थुलथुली इलाके में आईईडी ब्लास्ट की चपेट में आने से दो जवान जख्मी हो गए। दोनों की हालत खतरे से बाहर है। यहां सर्च ऑपरेशन जारी है। पुलिस को गंगालूर इलाके में बड़ी संख्या में नक्सलियों की मौजूदगी की जानकारी मिली थी। इसके बाद दंतेवाड़ा-बीजापुर बॉर्डर पर पुलिस ने जॉइंट ऑपरेशन लॉन्च किया। फोर्स एक दिन पहले एंड्री इलाके में पहुंच गई थी। गुरुवार की सुबह यहां मुठभेड़ हुई। बीजापुर एसपी जितेंद्र यादव और दंतेवाड़ा एसपी गौरव राय ने जानकारी दी है कि मुठभेड़ अभी भी जारी है।

छत्तीसगढ़-महाराष्ट्र सीमा पर 31 नक्सली मारे थे :

छत्तीसगढ़-महाराष्ट्र सीमा पर 1 महीने पहले 9 फरवरी को 1000 से ज्यादा जवानों ने 31 नक्सलियों को मार गिराया था। सभी के शव रिकवर कर लिए गए थे। मुठभेड़ बीजापुर के इंद्रावती नेशनल पार्क इलाके में हुई थी। इस मुठभेड़ में डीआरजी और एसटीएफ के एक-एक जवान भी शहीद हुए थे।

छत्तीसगढ़ के 11 बड़े एनकाउंटर जिसमें 8 से ज्यादा नक्सली मारे गए :

पुलिस के मुताबिक छत्तीसगढ़ में इस साल (2025) अब तक 71 नक्सली मारे गए हैं। इनसे 290 हथियार जब्त किए हुए हैं। पिछले साल यानी 2024 में अलग-अलग मुठभेड़ों में करीब 300 नक्सली मारे गए थे।

'नक्सल मुक्त भारत अभियान' में सुरक्षाबलों को बड़ी कामयाबी : अमित शाह

नई दिल्ली, 20 मार्च (एजेंसियां)। छत्तीसगढ़ में 30 नक्सलियों के मारे जाने पर केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कहा कि 'नक्सल मुक्त भारत अभियान' में सुरक्षाबलों को बड़ी कामयाबी मिली है। मोदी सरकार नक्सलियों के विरूद्ध रुथलेस अप्रोच से आगे बढ़ रही है और समर्पण से लेकर समावेशन की तमाम सुविधाओं के बावजूद जो नक्सली आत्मसमर्पण नहीं कर रहे, उनके खिलाफ जीरो टॉलरेंस की नीति अपना रही है। उन्होंने ये भी कहा कि अगले साल 31 मार्च से पहले देश नक्सल मुक्त हो जाएगा। छत्तीसगढ़ के बीजापुर और कांकेर में सुरक्षाबलों को गुरुवार को बड़ी सफलता मिली। बीजापुर और कांकेर में सुरक्षाबलों ने अलग-अलग मुठभेड़ में 30 नक्सलियों को ढेर कर दिया है। हालांकि, इस कार्रवाई के दौरान एक जवान शहीद हो गया। सुरक्षाबलों ने मुठभेड़ स्थल से भारी मात्रा में हथियार और गोला-बारूद भी बरामद किया है।

इलाके में सर्च ऑपरेशन जारी है। गृह मंत्री अमित शाह ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा, 'नक्सल मुक्त भारत अभियान' की दिशा में आज हमारे जवानों ने एक और बड़ी सफलता हासिल की है। छत्तीसगढ़ के बीजापुर और कांकेर में हमारे सुरक्षा बलों के दो अलग-अलग ऑपरेशन में 30 नक्सली मारे गए।

चुनाव प्रक्रिया को मजबूत करने के लिए आयोग ने उठाए कदम

> *नए सीईसी ज्ञानेश कुमार ने एक महीने में लिए अहम फैसले*

नई दिल्ली, 20 मार्च (एजेंसियां)। मतदाता सूची में हेरफेर और डुप्लीकेट मतदाता पहचान पत्र को लेकर उठ रहे सवालों को लेकर चुनाव आयोग गंभीर है। चुनाव प्रक्रिया को मजबूत करने के लिए आयोग ने पिछले एक महीने में कई कदम उठाए हैं। आयोग ने गुरुवार को एक प्रेस विज्ञप्ति में नए मुख्य चुनाव आयुक्त (सीईसी) ज्ञानेश कुमार के नेतृत्व में लिए गए अहम फैसलों की जानकारी दी। आयोग ने कहा कि पिछले एक महीने में कई कदम उठाए हैं।

लगभग एक करोड़ चुनाव अधिकारियों की निरंतर क्षमता वृद्धि के लिए डिजिटल प्रशिक्षण की योजना बनाई गई है। ईआरओ, डीईओ और सीईओ स्तर पर चुनाव अधिकारियों के साथ लगभग 5000 सर्वदलीय बैठकों के माध्यम से राजनीतिक दलों की भागीदारी बढ़ाने, आपत्तियों और अपीलों में सुधार और मतदाता सूची में नाम शामिल करने की प्रक्रिया पर जोर दिया गया है। इसके बाद अब तक केवल 89 प्रथम अपील और केवल 1 द्वितीय अपील दायर की गई है।

आयोग ने कहा कि मुख्य निर्वाचन आयुक्त (सीईसी) ज्ञानेश कुमार के पदभार ग्रहण करने के एक महीने से भी कम समय में निर्वाचन आयुक्त डॉ. सुखबीर सिंह संधू और डॉ. विवेक जोशी के साथ चुनाव आयोग ने सभी मतदाताओं की भागीदारी को बढ़ावा देने और उन्हें मतदान केंद्रों तक लाने के लिए बीएलओ स्तर तक पूरे निर्वाचन तंत्र को सही रास्ते पर ला दिया है। राजनीतिक दलों को प्रमुख हितधारकों के रूप में जमीनी स्तर पर शामिल किया जा रहा है। आयोग की ओर से कहा गया कि आधार और मतदाता पहचान पत्र को लिंक करने के लिए यूआईडीएआई और ईसीआई के विशेषज्ञों के बीच तकनीकी परामर्श जल्द ही शुरू होने वाले हैं। आयोग ने देश भर में ईपीआईसी नंबरों में डुप्लीकेट को हटाने और 3 महीने के भीतर दशकों पुराने मुद्दे को समाप्त करने का संकल्प लिया है। इसके अलावा जन्म और मृत्यु पंजीकरण अधिकारियों के समन्वय से मतदाता सूची को नियमित अपडेट किया जाएगा।

चुनाव आयोग ने बताया कि राजनीतिक दलों के साथ बातचीत में स्पष्ट किया गया कि मतदाता सूची में किसी भी समावेश या विलोपन को जनप्रतिनिधित्व अधिनियम, 1950 में सभी राजनीतिक दलों के लिए उपलब्ध दावों और आपत्तियों को दाखिल करने के लिए प्रासंगिक कानूनी प्रावधानों के तहत अपीलों की प्रक्रिया द्वारा नियंत्रित किया जाता है। ऐसी अपीलों के अभाव में, ईआरओ द्वारा तैयार की गई सूची मान्य होती है। आयोग ने कहा कि सभी पात्र नागरिकों का 100 प्रतिशत नामांकन, मतदान में आसानी करना हमारे प्रमुख उद्देश्य हैं। हम इस पर काम कर रहे हैं कि किसी भी मतदान केंद्र में 1,200 से अधिक मतदाता न हों और वे मतदाताओं के 2 किमी के भीतर हों। सबसे दूरस्थ ग्रामीण मतदान केंद्र में भी बुनियादी सुविधाएं होंगी।

सीनियर आईएएस अभिषेक प्रकाश को योगी सरकार ने किया सस्पेंड

लखनऊ, 20 मार्च (एजेंसियां)। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ भ्रष्टाचार में लिप्त अधिकारियों को किसी भी कीमत पर बख्शने के मूड में नहीं है। एक बार फिर सीएम योगी के सख्त तेवर देखने को मिले है। योगी सरकार ने आईएएस अभिषेक प्रकाश पर बहुत बड़ी कार्रवाई कर दी है। जबकि उन्हीं अभिषेक प्रकाश को एक समय पर सीएम योगी का करीबी अधिकारी माना जाने लगा था। आईएएस अभिषेक प्रकाश ने लखनऊ में जिलाधिकारी रहते हुए एलडीए वीसी का भी कार्यभार संभाला है। वो कई जिलों में डीएम रह चुके हैं। अभिषेक प्रकाश 2006 बैच के आईएएस अधिकारी है। उनका जन्म 21 दिसंबर 1982 में हुआ था। बिहार के रहने वाले अभिषेक प्रकाश ने आईआईटी रुड़की से बीटेक की पढ़ाई की है। यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा 2005 पास करके आईएएस बने अभिषेक प्रकाश की ऑल इंडिया आठवीं रैंक थी। अभिषेक प्रकाश साल 2011-12 में लखीमपुर खीरी जिले में डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट रह चुके हैं। >14

एलन मस्क की कंपनी एक्स ने भारत सरकार पर किया मुकदमा

आईटी अधिनियम के दुरूपयोग का लगाया आरोप

बेंगलूरू, 20 मार्च (एजेंसियां)। भाषा में अपशब्दों और गलत शैली के इस्तेमाल को लेकर सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स का आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) चैटबॉट ग्रोक सवालों के घेरे में है। केंद्र सरकार इस मामले में जांच की तैयारी में है। इसे लेकर सरकार एक्स के अधिकारियों के संपर्क में भी है। इसी बीच, एलन मस्क के स्वामित्व वाली सोशल मीडिया कंपनी 'एक्स' ने भारत सरकार के खिलाफ कर्नाटक हाईकोर्ट में मुकदमा दायर किया है। अपनी याचिका में एक्स ने गैरकानूनी सामग्री विनियमन और मनमाने ढंग से सेंसरशिप को चुनौती दी है।

साथ ही एक्स ने आईटी अधिनियम की केंद्र धारा 79(3)(बी) के उपयोग को लेकर चिंता जाहिर की है। इसे लेकर 'एक्स' ने तर्क दिया है यह धारा सुप्रीम कोर्ट के फैसलों का उल्लंघन करती है। साथ ही यह ऑनलाइन अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को कमजोर भी करती है। एक्स ने यह भी आरोप लगाया है कि सरकार धारा 69ए में लिखी गई कानूनी प्रक्रिया को दरकिनार करते हुए समानांतर कंटेंट को रोकने के लिए तंत्र बनाने के लिए आईटी अधिनियम की केंद्र धारा 79(3)(बी) का उपयोग कर रही है। >14

चिरंजीवी को यूके का मिला लाइफटाइम अचीवमेंट अवॉर्ड

> *कहा-इससे मुझे और अधिक जोश के साथ काम करने की मिलती है प्रेरणा*

मुंबई, 20 मार्च (स्वतंत्र वार्ता)। मेगास्टार चिरंजीवी ने यूके का लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड प्राप्त करने पर अपना आभार और उत्साह व्यक्त करते हुए कहा कि यह सम्मान उन्हें और भी अधिक जोश के साथ अपना काम जारी रखने के लिए प्रेरित करता है।

अभिनेता ने अपने इंस्टाग्राम हैंडल पर एक भावुक नोट लिखा, जिसमें लिखा था कि हाउस ऑफ कॉमन्स-यूके संसद में इतने सम्मानित सांसदों, मंत्रियों और अवर सचिवों, राजनयिकों द्वारा दिए गए सम्मान के लिए दिल से आभार व्यक्त करता हूं। उनके दयालु शब्दों से विनम्र हूं। टीम ब्रिज इंडिया द्वारा लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड पाकर बहुत खुश हूं। चिरंजीवी ने कहा कि शब्द पर्याप्त नहीं हैं। लेकिन मेरे हर प्यारे प्रशंसक, सगे भाई, सगी बहन, मेरे फिल्म परिवार के शुभचिंतक, मित्र और मेरे परिवार के सभी सदस्यों और हर उस व्यक्ति को दिल से धन्यवाद जिन्होंने हर तरह से मेरी यात्रा में योगदान दिया और मानवीय कारणों में भाग लिया, जिसका मैं समर्थन करता रहा हूँ। यह सम्मान मुझे और अधिक जोश के साथ अपना काम जारी रखने के लिए प्रेरित करता है। और आप सभी को आपके सुंदर बधाई संदेशों के लिए प्यार। इसके साथ ही उन्होंने प्रतिष्ठित पुरस्कार प्राप्त करने की अपनी तस्वीरें भी साझा कीं। उल्लेखनीय है कि चिरंजीवी ब्रिटिश सरकार से प्रतिष्ठित लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार प्राप्त करने वाले पहले भारतीय सेलिब्रिटी बनकर इतिहास रच चुके हैं। यह पुरस्कार उन्हें 19 मार्च को लंदन में यूके संसद में आयोजित एक विशेष समारोह में प्रदान किया गया। चिरंजीवी के भाई और आंध्र प्रदेश के उपमुख्यमंत्री पवन कल्याण ने इस उल्लेखनीय उपलब्धि पर हार्दिक बधाई दी। पवन ने अपने सोशल मीडिया पर सम्मान समारोह से चिरंजीवी की तस्वीरें साझा कीं और प्रतिष्ठित वाल्टेयर वीरय्या अभिनेता का छोटा भाई होने पर गर्व व्यक्त किया।

उन्होंने लिखा कि मैं चिरंजीवी गारू को बड़े भाई से ज़्यादा पिता की तरह मानता हूँ। वह वो इंसान हैं जिन्होंने मुझे उस समय रास्ता दिखाया जब मैं उलझन में था और मुझे नहीं पता था कि जीवन में क्या करना है। मेरे बड़े भाई चिरंजीवी गारू मेरी ज़िंदगी के हीरो हैं।

एसिड अटैक पीड़िताओं को अधिक मुआवजा देने की मांग : सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र सरकार से मांगा जवाब

नई दिल्ली, 20 मार्च (एजेंसियां)। सुप्रीम कोर्ट ने एसिड अटैक पीड़िताओं से संबंधी याचिका पर केंद्र सरकार और 11 राज्यों से जवाब मांगा है। दरअसल सुप्रीम कोर्ट में एक याचिका दायर की गई है, जिसमें एसिड अटैक पीड़िताओं को ज्यादा मुआवजा देने की मांग की गई है। इस पर सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र सरकार और 11 राज्यों को निर्देश दिया है कि वे इस पर जवाबी हलफनामा दाखिल करें। अभी प्रधानमंत्री राष्ट्रीय राहत कोष से महिला एसिड अटैक पीड़िताओं को एक लाख रुपये की वित्तीय सहायता दी जाती है।

केंद्र सरकार ने गुरुवार को सुप्रीम कोर्ट में बताया कि वे खनिज संपन्न राज्यों से खनिज अधिकारों, खनिज युक्त भूमि पर रॉयल्टी और कर बकाया की वसूली के मुद्दे पर बातचीत कर रहे हैं और इसे सुलझाने की कोशिश कर रहे हैं। जस्टिस अभय एस ओक, जस्टिस एमएम सुंदरेश और जस्टिस उज्जल भुइंया की विशेष पीठ ने मामले पर सुनवाई 14 अप्रैल तक के लिए टाल दी है। केंद्र की तरफ से सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता अदालत में पेश हुए और कहा कि सरकार इस मुद्दे में समझौते का प्रयास कर रही है। गौरतलब है कि 25 जुलाई 2024 को नौ जजों की संवैधानिक पीठ ने अपने फैसले में कहा था कि राज्य के खनिज संसाधनों पर राज्य का हक है न कि केंद्र सरकार का। इसी आधार पर झारखंड सरकार 1 अप्रैल 2005 तक की समयसीमा के लिए केंद्र सरकार से हजारों करोड़ रुपये के बकाये की मांग कर रही है।

बुजुर्ग महिला को डिजिटल अरेस्ट कर 20 करोड़ वसूले

मुंबई, 20 मार्च (एजेंसियां)। मुंबई में 86 साल की बुजुर्ग महिला ने डिजिटल अरेस्ट फ्रॉड में अपनी बचत के 20 करोड़ रुपये गंवा दिए। जालसाजों में से एक ने खुद को सीबीआई अधिकारी बताया। इन लोगों ने पीड़ित को दो महीने तक घर पर रहने और हर तीन घंटे में फोन करके रोजाना उसकी लोकेशन बताने के लिए मजबूर किया। 26 दिसंबर 2024 से 3 मार्च के बीच हुए इस फ्रॉड में मुंबई पुलिस की साइबर क्राइम टीम ने तीन लोगों को गिरफ्तार किया है। साइबर पुलिस महिला के 77 लाख रुपये फ्रीज करने में कामयाब रही। इसके लिए पुलिस ने आरोपियों के उन बैंक खातों को सील किया, जिनमें पैसे ट्रांसफर किए गए थे।

दिल्ली के 3 मंदिरों पर बुलडोजर एक्शन पर नहीं मिली राहत

> *सुप्रीम कोर्ट बोला-आप हाईकोर्ट जाइए*

नई दिल्ली, 20 मार्च (एजेंसियां)। दिल्ली में तीन मंदिरों पर बुलडोजर एक्शन के खिलाफ याचिका पर सुनवाई करने से सुप्रीम कोर्ट ने गुरुवार को इनकार कर दिया है। सुप्रीम कोर्ट ने याचिकाकर्ताओं से कहा है कि उन्हें दिल्ली हाई कोर्ट का रुख करना चाहिए।

ये तीनों मंदिर मयूर विहार फेज 2 में स्थित हैं। इन मंदिरों के नाम- पूर्वी दिल्ली काली बाड़ी समिति, श्री अमरनाथ मंदिर सस्था, श्री बद्री नाथ मंदिर हैं। मंदिरों की समितियों ने (डीडीए) द्वारा मंदिर गिराए जाने का नोटिस दिए जाने के बाद सुप्रीम कोर्ट में याचिका लगाई थी। डीडीए ने यह नोटिस उन्हें 19 मार्च को दिया था। जस्टिस विक्रम नाथ, संजय करोल और संजय मेहता की बेंच ने याचिका को खारिज कर दिया और याचिकाकर्ताओं से कहा कि उन्हें दिल्ली हाई कोर्ट जाना चाहिए। एडवोकेट विष्णु शंकर जैन की ओर से दायर याचिका में कहा गया है कि डीडीए के अफसरों की ओर से बुधवार रात 9 बजे सार्वजनिक नोटिस चिपकाया गया। नोटिस में कहा गया था कि 20 मार्च, 2025 को सुबह 4 बजे मंदिरों को गिरा दिया जाएगा। याचिका में कहा गया है कि डीडीए या किसी धार्मिक समिति से जुड़े किसी भी अधिकारी ने मंदिरों की कोई बात नहीं सुनी। याचिका में कहा गया है कि मंदिर 35 साल पुराने हैं और डीडीए ने काली बाड़ी समिति मंदिर को मंदिर के सामने की जमीन पर दुर्गा पूजा करने की अनुमति दी थी। याचिकाकर्ताओं की ओर से यह भी कहा गया है कि डीडीए ने अपनी मर्जी से मंदिर को गिराने का फैसला किया है, जो इस अदालत द्वारा पारित फैसले के साथ-साथ भारत के संविधान के आर्टिकल 14 और 25 में दिए गए प्रावधानों का भी उल्लंघन है। डीडीए या किसी धार्मिक समिति के किसी भी अधिकारी ने याचिकाकर्ताओं को सुनवाई का कोई अवसर नहीं दिया। यह गुहार लगाते हुए याचिकाकर्ताओं ने सुप्रीम कोर्ट से डीडीए के नोटिस को रद्द करने की मांग की थी।

बीजेपी के मुस्लिम नेता ने खुद को मारी गोली

जम्मू, 20 मार्च (एजेंसियां)। जम्मू-कश्मीर बीजेपी के नेता फकीर मोहम्मद खान ने गुरुवार को कथित तौर पर खुद को गोली मारकर सुसाइड कर लिया। यह जानकारी बीजेपी के पदाधिकारियों ने दी। फकीर मोहम्मद खान जम्मू-कश्मीर की गुरेज विधानसभा सीट से निर्दलीय विधायक रह चुके हैं। बीजेपी पदाधिकारियों ने बताया कि 62 वर्षीय फकीर मोहम्मद खान ने तुलसीबाग स्थित सरकार क्वार्टर में कथित रूप से सुसाइड किया। बीजेपी के प्रवक्ता अल्ताफ ठाकुर ने घटना की पुष्टि करते हुए कहा कि पूर्व विधायक ने सुसाइड किया है। हालांकि अभी तक यह स्पष्ट नहीं हो पाया है कि फकीर मोहम्मद खान ने यह कदम क्यों उठाया।

चारधाम-हेमकुंड साहेब यात्रा के लिए रजिस्ट्रेशन शुरू

देहरादून, 20 मार्च (एजेंसियां)। उत्तराखंड में चार धाम यात्रा के लिए ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन 20 मार्च से शुरू हो गया है। यात्रा पर आने वाले सभी श्रद्धालुओं को रजिस्ट्रेशन कराना अनिवार्य होगा।

इसके लिए उत्तराखंड पर्यटन विकास परिषद की वेबसाइट www.registrationandtouristcare.uk.gov.in रजिस्ट्रेशन कर सकते हैं। इसके लिए आधार नंबर को अनिवार्य कर दिया गया है। यात्रियों को रजिस्ट्रेशन प्रक्रिया में अपना नाम, पता, मोबाइल नंबर के साथ गाड़ी नंबर भी भरना होगा। इसके बाद आपको ई रजिस्ट्रेशन सर्टिफिकेट मिलेगा, जिससे वो यात्रा पर जा सकेंगे। चारधाम यात्रा 30 अप्रैल से शुरू होगी, जब उत्तरकाशी जिले में गंगोत्री और यमुनोत्री मंदिरों के कपाट खुलेंगे। केदारनाथ मंदिर 2 मई को (रुद्रप्रयाग जिला) और बद्रीनाथ मंदिर 4 मई को (चमोली जिला) श्रद्धालुओं के लिए खोले जाएंगे। हेमकुंड साहिब के कपाट 25 मई को खुलेंगे।

पर्यटन विकास परिषद रजिस्ट्रेशन के लिए वेबसाइट के अलावा मोबाइल नंबर, व्हाट्सएप और टोल फ्री नंबर भी जारी करेगा। जिस पर कॉल कर आप अपना रजिस्ट्रेशन कर सकते हैं। यात्रा शुरू होने के बाद हरिद्वार और ऋषिकेश में ऑफलाइन पंजीकरण प्रक्रिया भी शुरू होगी। जो श्रद्धालु ऑनलाइन पंजीकरण नहीं कर सकते, वह ऑफलाइन पंजीकरण कर यात्रा पर जाएंगे। चारों धामों में यात्रियों को दर्शन के लिए भी टोकन व्यवस्था लागू होगी।

सात हजार करोड़ रुपये के रक्षा सौदे को कैबिनेट की मंजूरी

स्वदेशी आर्टिलरी गन की होगी खरीद

नई दिल्ली, 20 मार्च (एजेंसियां)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता वाली सुरक्षा मामलों पर कैबिनेट की समिति (सीसीएस) ने सात हजार करोड़ रुपये के रक्षा सौदे को मंजूरी दे दी है। इस सौदे के तहत एडवांस्ड टोड आर्टिलरी गन सिस्टम (एटीएजीएस) की खरीद की जाएगी। गौरतलब है कि ये देश की पहली स्वदेशी डिजाइन और विकसित की गई आर्टिलरी गन है। सरकार का कहना है कि आर्टिलरी गन के मामले में आत्मनिर्भर होने की दिशा में ये सौदा एक बड़ा कदम है। एटीएजीएस 155 एमएम लंबी आर्टिलरी गन है, जिससे भारतीय सशस्त्र बलों की क्षमताओं में उल्लेखनीय इजाफा होगा।

भारत फोर्ज और टाटा एडवांस्ड सिस्टम्स करेंगी निर्माण

सात हजार करोड़ रुपये के इस रक्षा सौदे के तहत 307 हॉवित्जर तोप खरीदी जाएंगी, जिनकी मारक क्षमता 45-48 किलोमीटर है। साथ ही तोप ले जाने वाले 327 वाहनों की भी खरीद की जाएगी। एटीएजीएस को डीआरडीओ ने डिजाइन और विकसित किया है। वहीं भारत फोर्ज और टाटा एडवांस्ड सिस्टम्स ने मिलकर इनका निर्माण करेंगी। भारत फोर्ज 60 प्रतिशत आर्टिलरी गन का निर्माण करेगी, वहीं टाटा एडवांस्ड सिस्टम्स बाकी गन का निर्माण करेगी। डीआरडीओ ने साल 2013 में एटीएजीएस को विकसित करना शुरू किया था। इसके बाद इसके कई ट्रायल हुए और साल 2021-22 में इसके ठंडे और पहाड़ी इलाकों में परीक्षण सफल हुए। राजस्थान के पोखरण में गर्म वातावरण में भी इसके परीक्षण किए गए। बीते साल दिसंबर में भी रक्षा मंत्रालय ने एल एंड टी और दक्षिण कोरिया की हानवा डिफेंस द्वारा मिलकर बनाई गई 100 के-9 वज्र तोप के सौदे को भी मंजूरी दी गई थी। यह सौदा 7 हजार करोड़ रुपये से ज्यादा था।

ममता ने लंदन दौरे से पहले विपक्ष पर उनकी छवि खराब करने का लगाया आरोप

कोलकाता, 20 मार्च (एजेंसियां)। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने अपने लंदन दौरे को लेकर विपक्षी दलों, खासकर भारतीय जनता पार्टी और वाम दलों, पर उनकी छवि खराब करने का आरोप लगाया। सीएम ने कहा कि जब कोई नेता विदेश यात्रा पर जाता है, तो उस पर हमला करना देश की छवि को नुकसान पहुंचाता है। इस दौरान उन्होंने कहा, राजनीतिक भिन्नताएं हो सकती हैं, लेकिन किसी भी नेता को विदेशी यात्रा से पहले उस पर हमला नहीं करना चाहिए, क्योंकि वह नेता उस समय देश का प्रतिनिधित्व कर रहा होता है। विपक्ष मेरी छवि को खराब करने की कोशिश कर रहा है, लेकिन इस तरह के हमलों से सिर्फ देश की छवि को ही नुकसान होता है। >14

औरंगजेब खलनायक, किसानों के नाम पर हो रही साजिश : मुख्तार अब्बास नकवी

नई दिल्ली, 20 मार्च (एजेंसियां)। भाजपा नेता मुख्तार अब्बास नकवी ने गुरुवार को विपक्ष और औरंगजेब को लेकर तीखी टिप्पणी की। उन्होंने आईएएनएस से बातचीत में कहा कि कुछ लोग संविधान की किताब हाथ में लेकर घूमते हैं, लेकिन उसकी धज्जियां उड़ाने में गर्व महसूस करते हैं। नकवी ने किसानों के मुद्दे और औरंगजेब को लेकर चल रही बहस पर अपनी राय रखी, साथ ही विपक्ष पर सांप्रदायिक ध्रुवीकरण का आरोप लगाया। नकवी ने कहा कि वन्यजीव संरक्षण अधिनियम और उसमें संशोधन का अधिकार संसद के पास है। राज्य विधानसभाएं इसे स्वीकार या अस्वीकार नहीं कर सकतीं। फिर भी, कुछ लोग इस नियम को तोड़कर सांप्रदायिक ध्रुवीकरण करने की कोशिश करते हैं। उन्होंने कहा, ये लोग समाज को एकजुट करने की ताकत को कमजोर करते हैं और टकराव का माहौल बनाते हैं।

नकवी ने विपक्ष पर निशाना साधते हुए कहा कि ये लोग भोले-भाले किसानों के कंधों पर बंदूक रखकर उनके हितों का अपहरण कर रहे हैं। जो लोग किसानों के नाम पर आपराधिक साजिश रच रहे थे, वे अब बेनकाब हो गए हैं। औरंगजेब को लेकर चल रही बहस पर नकवी ने कहा कि वह इंसानियत का नायक नहीं, बल्कि हैवानियत का खलनायक था। उन्होंने आश्चर्य जताया कि औरंगजेब पर हमला करते-करते कुछ लोग बहादुर शाह जफर को निशाना बनाने लगे।

भोज खाने के बाद 250 लोगों की बिगड़ी तबीयत

मुजफ्फरपुर, 20 मार्च (एजेंसियां)। मुजफ्फरपुर में श्राद्ध भोज खाने के बाद 250 से अधिक लोगों की तबीयत अचानक खराब हो गई। सभी को उल्टी और दस्त की शिकायत होने लगी। घटना जिले के देवरिया थाना क्षेत्र का है। कुछ बीमार लोगों को इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया था। कुछ लोगों का इलाज घर पर ही किया जा रहा था। अचानक लोगों की तबीयत बिगड़ने के बाद डॉक्टरों की जांच में दूध में मिलावट की बात सामने आई, जिसके बाद ग्रामीणों ने दूध सप्लायर के खिलाफ थाना में आवेदन दिया। जानकारी के अनुसार, देवरिया निवासी मनजीत कुमार सिंह के पिता महादेव सिंह का निधन 1 मार्च को हुआ था। उनके श्राद्ध कर्म के तहत 13 मार्च को द्वादशा भोज का आयोजन किया गया, जिसमें ग्रामीणों को आमंत्रित किया गया था।

रेप की कोशिश और अपराध के लिए तैयारी में अंतर समझना जरूरी: हाईकोर्ट

प्रयागराज, 20 मार्च (एजेंसियां)। एक अहम मामले में इलाहाबाद हाईकोर्ट के जज राम मनोहर नारायण मिश्र ने एक टिप्पणी की, जिसमें उन्होंने कहा कि अगर कोई शख्स किसी युवती का जबरन स्तन पकड़ता है और पायजामे का नाड़ा तोड़ता है तो उसे रेप नहीं माना जाएगा। यानी उसे रेप की धारा के तहत दोषी नहीं माना जाएगा। उसपर 376 के बजाय धारा 354-बी के तहत सजा दी जाएगी, जो कि गंभीर यौन अपराध की श्रेणी में शामिल है। कोर्ट ने ये भी कहा कि रेप की कोशिश और अपराध के लिए की गई तैयारी के बीच के अंतर को समझना जरूरी है। जानते हैं कासगंज के इस मामले पर टिप्पणी करने वाले हाई कोर्ट के जज राम मनोहर मिश्र कौन हैं?

जस्टिस राम मनोहर मिश्र का जन्म 6 नवंबर 1964 को हुआ था। उन्होंने 1985 में लॉ में ग्रेजुएशन की पढ़ाई पूरी की। फिर साल1987 में लॉ में ही पोस्ट ग्रेजुएशन किया। साल 1990 में मुंसिफ के रूप में उत्तर प्रदेश न्यायिक सेवा में शामिल हुए। साल 2005 में उच्चतर न्यायिक सेवा में इनका प्रमोशन हुआ। साल 2019 में जिला एवं सत्र न्यायाधीश के रूप में नियुक्त हुए। यहां पर प्रमोशन से पहले इन्होंने बागपत, अलीगढ़ जिलों में सर्विस की। साथ ही इन्होंने जेटीआरआई के निदेशक और लखनऊ में जिला एवं सत्र न्यायाधीश के रूप में कार्य किया।

महिलाओं से जुड़े कुछ फैसले

2023 में रेप के एक मामले में सुनवाई के दौरान कहा कि रेप की शिकार महिला या लड़की कोई सह-अपराधी नहीं है। इस तरह की बातें और उसकी गवाही की पुष्टि पर जोर देना वाकई में एक महिला का अपमान है। 2024 के एक मामले में सुनवाई के दौरान इलाहाबाद हाईकोर्ट में बेंच ने सुनवाई करते हुए कहा कि मिडिल क्लास परिवार की महिला के लिए 2500 रुपये की मामूली राशि में एक वक्त का खाना भी जुटा पाना लगभग असंभव है। ऐसे में उसके गुराजे भत्ते की राशि को बढ़ाकर 5 हजार प्रति महीने दिया जाना चाहिए। चंदौली की एक महिला की याचिका पर कोर्ट ने ये टिप्पणी की थी। मथुरा में चल रहे कृष्ण जन्मभूमि-शाही ईदगाह मस्जिद विवाद में जस्टिस राम मनोहर मिश्र की बेंच में सुनावई की जा रही है। इस मामले की अगली सुनवाई 3 अप्रैल को तय की गई है।

योगी आदित्यनाथ से जुड़ी निचली अदालत की टिप्पणी को हटाया

मार्च 2024 में इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने निचली अदालत के न्यायाधीश की ओर से दिए गए उस आदेश को हटा दिया है, जिसमें उन्होंने कहा था कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ यूनानी दार्शनिक प्लेटो की ओर से दी गई अवधारणा का एक उपयुक्त उदाहरण हैं। जब कोई धार्मिक व्यक्ति सत्ता के पद पर होता है, तो इसके अच्छे परिणाम मिलते हैं, क्योंकि धार्मिक व्यक्ति का जीवन भोग-विलास से नहीं, बल्कि त्याग और भक्ति से भरा होता है। न्यायमूर्ति राम मनोहर नारायण मिश्रा की एकल पीठ ने इस आदेश को हटा दिया।

दहशत फैलाने के लिए जनरल स्टोर की बंद दुकान पर की गई बमबाजी, फेंके 3 बम

प्रयागराज, 20 मार्च (एजेंसियां)। संगम नगरी प्रयागराज में बेखौफ अपराधियों ने बुधवार की रात को बमबाजी की है। अराजकतत्वों ने दहशत फैलाने के लिए बमबाजी की घटना को अंजाम दिया है। यहां जनरल स्टोर की बंद दुकानों पर देर रात बमबाजी की गई है। एक के बाद एक लगातार तीन बम फेंके गए हैं। अब पुलिस की जांच जारी है और ये पूरी घटना सीसीटीवी में कैद हो चुकी है। दरअसल, प्रयागराज के पुराना कटरा कचहरी रोड थाना के कर्नलगंज का यह मामला बताया जा रहा है। यहां हुई बमबाजी की पूरी घटना सीसीटीवी में कैद हो चुकी है। अब इस घटना की जांच जारी है। बताया जाता है कि देर रात बदमाशों बंद पड़ी जनरल स्टोर की दुकान पर बमबाजी की है। पुलिस अब सीसीटीवी फुटेज के आधार पर मामले की जांच पड़ताल में जुटी हुई है। लोगों का कहना है कि रात के अंधेरे का फायदा उठाकर आरोपी वहां पहुंचे थे। आरोपियों ने एक के बाद एक लगातार तीन बम फेंके हैं। बम फेंकने के बाद लगातार तीन धमाके होते हैं और इलाके में दहशत फैलाने की कोशिश की गई है। अब इस घटना के बाद पुलिस पूरी तरह अलर्ट है और कई जगहों पर जांच के साथ छापेमारी चल रही है।

पेट दर्द से परेशान युवक ने यूट्यूब देखकर खुद कर डाला ऑपरेशन

सर्जरी कर लगाए 11 टांके; फिर पहुंचा अस्पताल

मथुरा, 20 मार्च (एजेंसियां)। वृंदावन सुनरख गांव में एक हैरान करने वाली घटना सामने आई है। पेट दर्द से लंबे समय से परेशान एक युवक ने खुद ही अपना ऑपरेशन कर लिया। युवक की हालत गंभीर बनी हुई है, उसे बुधवार को जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है। भतीजे राहुल ठाकुर ने बताया कि सुनरख निवासी चाचा राजा बाबू (32) पुत्र कन्हैया ठाकुर कई दिनों से पेट दर्द से परेशान थे। वह कई बार डॉक्टरों से इलाज करा चुके थे, लेकिन कोई राहत नहीं मिली। 18 साल पहले उनका अपेंडिक्स का ऑपरेशन हो चुका था जिसके बाद से उन्हें बार-बार पेट दर्द की शिकायत रहती थी। लगातार दर्द से तंग आकर उन्होंने खुद ही अपना ऑपरेशन करने की ठान ली। राजा बाबू ने डॉक्टरों की तरह इंजेक्शन लाकर खुद को सुन्न किया और फिर सर्जिकल ब्लेड से अपना पेट चीर दिया। शुरुआत में दर्द का एहसास नहीं हुआ, लेकिन जैसे ही दवा का असर खत्म हुआ वह तड़पने लगा और जोर-जोर से चिल्लाने लगा। युवक की चीखें सुनकर परिजन दौड़े और उसे तुरंत जिला अस्पताल लेकर पहुंचे। डॉक्टरों ने उसे गंभीर हालत में भर्ती कर लिया है और उसका इलाज जारी है। डॉक्टरों का कहना है कि बिना उचित जानकारी के ऐसा कदम उठाना जानलेवा हो सकता था। राजा बाबू की हालत फिलहाल स्थिर है।

तेज प्रताप यादव को गाली देना ग्रोक को पड़ा महंगा, सरकार कराएगी जांच

पटना, 20 मार्च (एजेंसियां)। सोशल मीडिया मंच एक्स के मालिक एलन मस्क का एआई टूल 'ग्रोक' इन दिनों विवादों में है। ग्रोक किसी भी सवाल का बेधड़क जवाब दे रहा है। कई विवाद इस बात से है कि ग्रोक कई सवालों के जवाब के दौरान अपशब्द का भी इस्तेमाल कर रहा है। बिहार के पूर्व मंत्री और लालू यादव के बेटे तेज प्रताप यादव ने इसपर आपत्ति व्यक्त की है। सरकार से इसकी शिकायत की गयी है। सूचना एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय अब इस मामले की जांच करेगा। उम्मीद है कि सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर मौजूद एआई टूल 'ग्रोक' आगे से अपशब्दों का इस्तेमाल नहीं करेगा।

तेज प्रताप के खिलाफ लिखा अपशब्द

तेज प्रताप यादव ने एक्स पोस्ट में लिखा था, 'बुरा न मानो होली है। आपसी भाईचारे के इस पर्व को भी बीजेपी और आरएसएस के साथ ही इनकी ये गोदी मीडिया ने होली में आज नफरत का एक नया रंग दे दिया है। पुलिस वाले भाई हो या कोई विरोधी दल के नेता सबसे भाईचारे और उत्साह के साथ बुरा न मानो होली पर्व मनाने पर भी सियासत करना यही इनका धर्म बन चुका है। देश की जनता जल्द इनको सबक सिखाएगी।' तेज प्रताप के इस पोस्ट पर किसी ने ग्रोक एआई को टैग कर दिया। इसके बाद उन्हें जवाब मिला जिसमें कई गालियां भी थी। 'भाईचारा दिखाने का ढोंग मत करो। सिपाही को नाचने की धमकी दी, अब होश में आने का नाटक? होली के बहाने सत्ता का रौब झाड़ा, फिर बीजेपी-आरएसएस पर इल्जाम? सच सामने है, तूने 14 मार्च को जो किया, वो सबने देखा। "अपशब्द", अपने गिरेबान में झांक, गलती मान ले।'

आईटी मंत्रालय करेगा जांच

अब इस पूरे मामले की आईटी मंत्रालय जांच करेगा। सूचना एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने कहा कि वो एआई चैटबॉट ग्रोक के हिंदी में अपशब्द बोलने की हालिया घटना को लेकर सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स के संपर्क में है। वो इस मामले की जांच करेगा। मीडिया रिपोर्ट में दावा किया गया है कि मंत्रालय उन कारणों की भी जांच करेगा, जिनके कारण अपशब्दों का इस्तेमाल किया गया। एलन मस्क की कंपनी एक्स एआई ने नवंबर 2023 में ग्रोक को लॉन्च किया था। शुरुआती दिनों में इसे प्रीमियम सर्विस के तौर पर इस्तेमाल किया जाता था। हालांकि अब ये सभी के लिए मुफ्त में उपलब्ध है। इसके लिए आपको बस एक्स पर जाना होगा और ग्रोक के चिन्ह या लिखे शब्द पर क्लिक करने के बाद अपना सवाल लिखना या आपके आवाज के जरिए भी पूछ सकते हैं।

इनामी बदमाश पुलिस एनकाउंटर में घायल

नोएडा, 20 मार्च (एजेंसियां)। उत्तर प्रदेश के नोएडा में पुलिस ने एक बार फिर एक इनामी बदमाश को एनकाउंटर में घायल कर उसे गिरफ्तार कर लिया। पुलिस को सूचना मिली कि कुलेसरा में अस्पताल के पास हुई हत्या की घटना का आरोपी और 25 हजार रुपये का इनामी बदमाश राजेश उर्फ मुकेश ककराला पुस्ता रोड के पास आया हुआ है।थाना इकोटेक 3 पुलिस ने पुस्ता रोड पहुंचकर आरोपी राजेश की तलाशी शुरू कर दी। जब पुलिस खोजबीन कर रही थी तो आरोपी राजेश ने पुलिस को देख लिया। इस दौरान उसने पुलिस की टीम पर फायरिंग शुरू कर दिया और वह अक्षरधाम कॉलोनी ककराला पुस्ता रोड की तरफ भागने का प्रयास करने लगा।

बिहार में पुलों पर खड़े नहीं हो सकेंगे भारी वाहन

बिहटा में जाम से मिलेगी मुक्ति, मंत्री नितिन नवीन का निर्देश

पटना, 20 मार्च (एजेंसियां)। बिहार में पुलों पर अब भारी वाहन खड़े नहीं हो सकेंगे। दरअसल, बुधवार को पथ निर्माण मंत्री नितिन नवीन ने निर्माण कार्यों की प्रगति की समीक्षा की। इस दौरान बैठक में विभागीय एसीएस मिहिर कुमार सिंह बीएसआरडीसी एमडी शीर्षित कपिल समेत कई अधिकारी मौजूद रहे। बैठक में मंत्री ने सख्त निर्देश देते हुए कहा कि कोईलवर पुल, छपरा पुल समेत सभी पुलों पर भारी वाहनों के ठहराव पर प्रतिबंधित रहेगा। इसके लिए डीएम और परिवहन विभाग को भी निर्देश दिया गया है। मंत्री ने कहा कि पुलों पर भारी वाहनों के ठहराव से उसकी गुणवत्ता पर असर पड़ता है। इसलिए ये फैसला लिया गया है। इसके अलावा उन्होंने बैठक में मुख्यमंत्री की प्रगति यात्रा में शामिल की गई योजनाओं को तेजी से करने के निर्देश दिए हैं। सभी परियोजनाओं को तय समय सीमा के अंदर पूरा करने का सख्त निर्देश दिया है। पथ निर्माण मंत्री नितिन नवीन ने कहा कि एनडीए सरकार में चारों दिशाओं में विकास हो रहा है। पूर्व से लेकर पश्चिम तक और उत्तर से लेकर दक्षिण तक कनेक्टिविटी को बढ़ाने में सरकार दिन रात काम कर रही है। राज्य में नई सड़कों का निर्माण और उनका चौड़ीकरण हमारी प्राथमिकता है। हमारी सरकार सिर्फ बेहतर सड़क और पुल-पुलियों का निर्माण ही नहीं बल्कि उसका अच्छे से रखरखाव भी करना है।

सोनपुर में बाइक लूट का विरोध करने पर बैंक कर्मी को मारी गोली, मोबाइल लूटा

हाजीपुर, 20 मार्च (एजेंसियां)। सोनपुर थाना क्षेत्र अंतर्गत गंगाजल हाई स्कूल के निकट बाइक लूटने का विरोध करने पर बदमाशों ने बैंक कर्मी को गोली मारकर घायल कर दिया। बैंक कर्मी से मोबाइल लूट कर बाइक सवार बदमाश घटना को अंजाम देने के बाद मौके से फरार हो गया। बैंक कर्मी को घायल अवस्था में रोड पर तड़पते देख मौके पर आसपास के लोग जुट गए। इसके बाद लोगों ने घटना की जानकारी सोनपुर थाने की पुलिस को दी। घटना की जानकारी मिलते ही सोनपुर थाने की पुलिस मौके पर पहुंच गई। घायल बैंक कर्मी को आनन-फानन में इलाज के लिए अनुमंडल अस्पताल सोनपुर भर्ती कराया। डॉक्टरों ने प्राथमिक उपचार के बाद उन्हें बेहतर इलाज के लिए सदर अस्पताल हाजीपुर रेफर कर दिया। पुलिसकर्मी के द्वारा घायल को इलाज के लिए सदर अस्पताल लाया गया। घटना की जानकारी मिलते ही सोनपुर एसडीपीओ प्रत्यूष कुमार ने हाजीपुर सदर अस्पताल पहुंचकर घटना की जानकारी घायल से विस्तार पूर्वक ली। घटना की जानकारी घायल के परिवार वालों को दी गई, जानकारी मिलते ही घायल के परिवार वाले सदर अस्पताल पहुंच गए। घायल की पहचान हाजीपुर नगर थाना क्षेत्र के बागमली निवासी आरसी राम के 42 वर्षीय पुत्र रवि रंजन कुमार के रूप में हुई है।

'जो आग लगाते हैं वहीं पानी डालते हैं

लखनऊ, 20 मार्च (एजेंसियां)। औरंगजेब विवाद के बीच नागपुर में हुई हिंसा को लेकर राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रवक्ता सुनील आंबेकर का बड़ा बयान सामने आया है। उन्होंने इस हिंसा की निंदा करते हुए औरंगजेब को अप्रसांगिक बताया। आरएसएस नेता के इस बयान पर समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव ने तीखा पलटवार किया। सपा अध्यक्ष ने पत्रकारों से बात करते हुए नागपुर हिंसा के लिए उन्हें जिम्मेदार बताया और कहा कि अब वो पानी डालने का काम कर रहे हैं। सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव से जब आरएसएस नेता सुनील आंबेकर के औरंगजेब को लेकर दिए बयान पर सवाल किया गया तो उन्होंने कहा कि 'जो लोग आग लगाते हैं वहीं पानी डालना चाहते हैं।' सपा अध्यक्ष ने कहा कि बीजेपी के लोग औरंगजेब की बातें करते हैं लेकिन वो इस पर बात नहीं करना चाहते कि जब छत्रपति शिवाजी महाराज का राजतिलक होना था तो किसने अंगूठे से उनका तिलक करवाया था।

आरएसएस प्रवक्ता के बयान पर अखिलेश यादव का पलटवार

आरएसएस नेता ने क्या कहा था?

आरएसएस प्रवक्ता सुनील आंबेकर ने बंगलुरू में आयोजित एक कार्यक्रम के दौरान नागपुर हिंसा को लेकर अपनी बात रखी। उन्होंने कहा कि औरंगजेब आज के समय में प्रासंगिक नहीं है। उसके लिए किसी भी तरह की हिंसा को प्रोत्साहित नहीं करना चाहिए। उनका ये बयान ऐसे समय में आया है जब औरंगजेब को लेकर महाराष्ट्र की सियासत गर्माई हुई है। हिन्दू संगठनों द्वारा उसकी कब्र को हटाए जाने की मांग की जा रही है। बता दें कि महाराष्ट्र में औरंगजेब की कब्र को लेकर विवाद के बीच 17 मार्च को नागपुर में हिंसा भड़क गई थी जिसमें कई घरों और दुकानों में तोड़फोड़ हुई और कई गाड़ियों को क्षतिग्रस्त कर दिया गया। इस हिंसा में कई पुलिसवालों को भी चोटे आई हैं। इस घटना के बाद पूरे इलाके में अब भी तनाव है। बताया जा रहा है कि सोशल मीडिया पर फैली अफ़वाह की वजह से हिंसा भड़की थी। पुलिस ने इस मामले में 5 एफआईआर दर्ज की है जबकि 51 लोगों को गिरफ़्तार किया गया है।

रेलवे परिसर में मंदिर तोड़ने का मुद्दा गरमाया, आज शहर में चक्का जाम

मुजफ्फरपुर, 20 मार्च (एजेंसियां)। जंक्शन पर मंदिर का विवाद लगातार तूल पकड़ता जा रहा है। वीएचपी ने अब 21 मार्च यानी शुक्रवार को शहर बंद का ऐलान किया है। विहिप के प्रातीय अध्यक्ष संजीव सिंह ने बुधवार को शहर के सरैयागंज टावर पर प्रेस कॉन्फ्रेंस के जरिए इसकी जानकारी दी। उन्होंने बताया कि 21 मार्च को विश्व हिन्दू परिषद ने मुजफ्फरपुर बंद का आह्वान किया है। बता दें, रेलवे प्रशासन ने स्टेशन के विस्तार के लिए 10 मार्च को रातों-रात दो प्राचीन मंदिरों को तोड़कर हटा दिया गया। हालांकि, जिला प्रशासन ने पुराने मंदिर से ठीक सटे एक नए मंदिर का निर्माण भी कराया है और विधिवत उसकी पूजा पाठ भी हुई है। पुराने मंदिर में कंक्रीट की मूर्ति स्थापित थी, उसकी जगह संगमर्मर की मूर्ति स्थापित की गई है। बता दें, एलिवेटेड सड़क निर्माण के लिए यह कार्रवाई की गई है। 17 मार्च को विश्व हिन्दू परिषद कार्यकर्ताओं ने स्टेशन परिसर में मंदिर तोड़ने के विरोध में जमकर प्रदर्शन किया। स्टेशन पर भारी पुलिस बल तैनात करनी पड़ी। रेलवे प्रशासन ने मंदिर की पुनर्स्थापना का आश्वासन भी दिया। स्टेशन के बगल में ही एक नए मंदिर का निर्माण भी कराया गया। प्रशासन का कहना है कि मंदिर को वहीं शिफ्ट कर दिया गया है। वहीं विहिप के नेता और कार्यकर्ता पुरनी जगह पर ही मंदिर की स्थापना और मंदिर तोड़ने से पहले जानकारी न देने का आरोप लगाते हुए विरोध प्रदर्शन पर अड़े हैं। संजीव सिंह ने चेतावनी देते हुए कहा कि अगर शहर बंद के बाद भी प्रशासन नहीं माना, तो बड़ा आंदोलन किया जाएगा।

बैठक में नहीं हो सका कोई निर्णय

मुजफ्फरपुर जंक्शन पर निर्माण कार्य के दौरान मंदिर को शिफ्ट करने का मामला अभी तक नहीं सुलझ पाया है। एसडीओ पूर्वी अमित कुमार की अध्यक्षता में दोनों पक्षों के साथ हुई बैठक में भी कोई ठोस निर्णय नहीं लिया जा सका। बैठक में रेलवे और मंदिर प्रबंधन के प्रतिनिधि शामिल हुए, लेकिन मंदिर शिफ्टिंग का विरोध कर रहे लोग नहीं पहुंचे। एसडीओ पूर्वी ने बताया कि बैठक में सभी बिंदुओं पर विस्तार से चर्चा हुई, लेकिन कोई अंतिम फैसला नहीं हो सका। उन्होंने कहा कि मंदिर को दूसरी जगह बनाकर तैयार कर दिया गया है और शिफ्टिंग का काम भी हो चुका है, लेकिन कुछ लोग इसका विरोध कर रहे हैं। एसडीओ पूर्वी ने कहा कि बैठक में शामिल लोगों ने किसी तरह की आपत्ति नहीं जताई है।

केंद्रीय मंत्री नित्यानंद राय के भांजों में फायरिंग, एक की मौत

भागलपुर, 20 मार्च (एजेंसियां)। केंद्रीय गृह राज्यमंत्री नित्यानंद राय के दो भांजे जयजीत यादव और विकल यादव ने मामूली विवाद में एक दूसरे को गोली मार दी। इस घटना में विकल की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि जयजीत की हालत चिकित्सकों ने नाजुक बताई है। यह घटना नित्यानंद राय के बहनोई नवगछिया के जगतपुर निवासी गुल्लों यादव के घर पर गुरुवार की सुबह हुई। मिली जानकारी के अनुसार, दोनों ने मामूली विवाद में एक-दूसरे पर गोली चला दी। प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक सुबह साढ़े छह बजे जयजीत को पानी देने वाले नौकर ने पानी वाले बर्तन में हथेली डुबो कर पानी दिया था, जिसको लेकर विकल से कहा-सुनी होने लगी। दरअसल, पहले से भी दोनों भाइयों मझले और छोटे में नहीं बनती थी। पानी के मामूली विवाद में विकल घर के अंदर से पिस्तौल निकाल लाया और जयदीप के मुंह को निशाना बना फायर कर दिया।

गोली जबड़े को क्षतिग्रस्त करते हुए निकल गई। जयजीत पहले तो जमीन पर गिर गया, लेकिन चंद मिनट में ताकत बटोरकर उठा और विकल से गुत्थम-गुत्थी करते हुए उंसके हाथ से पिस्तौल छीन ली। इसके बाद उसे नजदीक से गोली मार दी।

जयजीत की हालत नाजुक

इस घटना में विकल की मौके पर ही मौत हो गई। हालांकि, उसमें सांस बची होने की आस में परिजनों ने आनन-फानन में उसे भी नवगछिया अस्पताल पहुंचाया, जहां चिकित्सकों ने उसे देखकर मृत घोषित कर दिया। जयजीत की हालत भी अधिक खून निकल जाने की वजह से नाजुक बनी हुई है। उसे बेहतर उपचार के लिए चिकित्सकों ने बाहर ले जाने को कहा है, जिसकी कवायद शुरू कर दी गई है। घटना की जानकारी पर रेंज आईजी विवेक कुमार ने नवगछिया एसपी को हालात का जायजा लेकर सभी सुरक्षात्मक उपाय करने को कहा है। नवगछिया, परबत्ता पुलिस ने घटना की छानबीन शुरू कर दी है। पुलिस टीम एफएसएल टीम को सूचित कर घटनास्थल की स्टाइल और वीडियोग्राफी कराएगई। इसके साथ ही इलेक्ट्रॉनिक साक्ष्य इकट्ठा करना आरंभ कर दिया है।

बिठूर महोत्सव में शामिल होने कानपुर आएंगे सीएम योगी, विकास कार्यों पर करेंगे चर्चा

कानपुर, 20 मार्च (एजेंसियां)। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ शहर की सूरत बदलने के लिए 23 मार्च को विकास का खाका खींचेंगे। बिठूर महोत्सव में शाम को शामिल होने से पहले सीएम दिन में प्रशासन, पुलिस अफसरों व जनप्रतिनिधियों के साथ समग्र विकास पर बात करेंगे।

गंगा रिवर फ्रंट, जूही खलवा पुल, यातायात सुधार, रिंग रोड जैसी महत्वपूर्ण योजनाओं पर अधिक फोकस होगा। इसीलिए विधानसभा अध्यक्ष सतीश महाना ने 22 मार्च को अपनी समग्र विकास की बैठक रद्द कर दी है। उनकी जगह सीएम रोडमैप समझेंगे। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को 23 मार्च को बिठूर महोत्सव के समापन अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में शामिल होने के लिए विधायक अभिजीत सिंह सांगा ने आमंत्रित किया था। इसकी उन्होंने स्वीकृति भी दी थी। अब मुख्यमंत्री के आने का कार्यक्रम तय हो गया है, केवल औपचारिक जानकारी आना बाकी है। विधानसभा अध्यक्ष महाना ने बताया कि बुधवार सुबह मुख्यमंत्री से लखनऊ में मुलाकात की। उनके कानपुर आने को लेकर 22 मार्च को होने वाली अपनी समग्र विकास की बैठक रद्द करते हुए 23 मार्च को मुख्यमंत्री से विकास पर बात करने का अनुरोध किया। इस पर सीएम ने सहमति जता दी है। पिछली बार भी जब सीएम शहर आए थे तो उन्होंने गंगा रिवर फ्रंट, जूही खलवा पुल पर फ्लाईओवर, जलनिकासी, रिंगरोड के काम, शहर के प्रमुख चौराहों पर यातायात सुधारने, मरियमपुर से दीप तिराहा तक फ्लाईओवर, दादानगर समानांतर पुल, जयपुरिया क्रासिंग समेत अन्य विकास कार्यों पर चर्चा की थी। इस बार वे इनकी प्रगति जानेंगे।

साथ ही जनप्रतिनिधियों से बात करके नए विकास कार्यों को लेकर स्थिति समझेंगे। सीएम के आगमन को लेकर पुराने कार्यों की स्थिति देखी जा रही है। अफसर फाइलें खंगालने में जुट गए हैं।

सेंट्रल तक मेट्रो व मंधना-अनवरगंज ट्रैक पर भी चर्चा

मुख्यमंत्री मेट्रो के मोतीझील से आगे सेंट्रल स्टेशन तक चलाने के शुभारंभ को लेकर भी चर्चा कर सकते हैं। विकास कार्यों की बैठक में मेट्रो के अधिकारी भी रहेंगे। साथ ही मंधना से अनवरगंज के बीच एलीवेटेड रेलवे ट्रैक को लेकर भी चर्चा होनी तय मानी जा रही है। इसकी शुरुआत से 18 रेलवे क्रासिंगों पर 50 लाख आबादी को जाम से मुक्ति मिलेगी। 995 करोड़ रुपये की इस परियोजना को हरी झंडी मिल चुकी है।

फर्जी दस्तावेज के साथ बांग्लादेशी नागरिक गिरफ्तार

सुपौल में भारत-नेपाल सीमा पर तैनात 45वीं वाहिनी एसएसबी की सीमा चौकी कुनौली ने चेकपोस्ट ड्यूटी के दौरान एक संदिग्ध बांग्लादेशी नागरिक को नकली दस्तावेज के साथ गिरफ्तार किया। गिरफ्तार व्यक्ति नेपाल से भारत में प्रवेश कर रहा था और संदेह होने पर एसएसबी जवानों ने उसे रोककर पूछताछ की। पूछताछ में उसने अपनी सही पहचान छुपाने की कोशिश की और नकली दस्तावेज भी दिखाए। एसएसबी 45वीं बटालियन के कमांडेंट गौरव सिंह ने बताया कि सीमा चौकी कुनौली के जवानों ने चेक पोस्ट ड्यूटी के दौरान नेपाल से भारत में प्रवेश कर रहे एक व्यक्ति को संदिग्ध गतिविधियों के आधार पर रोका। जब उससे पहचान पत्र दिखाने को कहा गया, तो उसने एक नकली आधार कार्ड प्रस्तुत किया और अपने सामान की तलाशी देने से इनकार कर दिया। पूछताछ में व्यक्ति ने अपना नाम मोल्ला अकबर, पिता - मोल्ला रफ़ी, उम्र 49 वर्ष (आधार कार्ड के अनुसार), वास्तविक उम्र 65 वर्ष, ग्राम - तेंतुलबेरिया, थाना+पोस्ट - नक्शीपाड़ा, जिला - नादिया, पश्चिम बंगाल - 741138 बताया।

THE LARGEST CIRCULATED AND READ HINDI DAILY IN TELANGANA & ANDHRA PRADESH

स्वतंत्र वार्ता

मेरा हैदराबाद

शुक्रवार, 21 मार्च, 2025 5

युविचार

दूसरों को बदलने का प्रयत्न करने के बजाए स्वयं को बदल लेना कहीं अधिक अच्छा है

हमारा उद्देश्य पारदर्शी प्रशासन देना है : रेवंत रेड्डी

* मुख्यमंत्री ने 'बिल्ड नाउ' पोर्टल लॉन्च किया * विभिन्न पदों के लिए चयनित उम्मीदवारों को नियुक्ति पत्र सौंपे गए

हैदराबाद, 20 मार्च (स्वतंत्र वार्ता)। मुख्यमंत्री ए रेवंत रेड्डी ने गुरुवार को रवीन्द्र भारती, हैदराबाद में 'कोलुवुला पंडुगा' में भाग लिया और 'बिल्ड नाउ' पोर्टल लॉन्च किया। मुख्यमंत्री ने पंचायत राज और नगर प्रशासन विभागों में विभिन्न पदों के लिए चयनित उम्मीदवारों को नियुक्ति पत्र सौंपे। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने कहा कि पिछले 10 वर्षों से सरकारी नौकरी पाने का आपका सपना आज पूरा हुआ। नवनियुक्त 922 उम्मीदवारों और उनके परिवार के सदस्यों को बधाई, जिन्हें आज नियुक्ति पत्र मिले।

जिन लोगों को पहला अवसर मिला, चाहे वह छोटा हो या बड़ा, उसे जीवन भर याद रखा जाएगा। यह अवसर उन कई उम्मीदवारों के जीवन में भी महत्वपूर्ण है, जिन्हें नौकरी मिली है। अनुकंपा के आधार पर नियुक्ति आपका अधिकार है। ये वो नौकरियां हैं जो आपको अपने परिवार के सदस्यों से विरासत में मिली हैं। उन्होंने कहा कि अनुकंपा के आधार पर भर्ती में पिछली सरकार की 10 वर्षों की लापरवाही स्पष्ट है। हम ये नियुक्तियां पूरी कर रहे हैं ताकि लोगों की सरकार में ऐसी लापरवाही न हो। मुख्यमंत्री ने कहा कि बेरोजगार युवाओं ने बेहतर जीवन के लिए तेलंगाना राज्य के लिए लड़ाई लड़ी। राज्य बनने के बाद भी तेलंगाना के लिए जान देने वालों की आकांक्षाएं पूरी नहीं हुई हैं। सत्ता में आते ही जनता की सरकार ने 57,924 सरकारी नौकरियां भरीं। कुछ नेता यह कह कर शोर मचा रहे हैं कि पिछली सरकार ने अधिसूचना जारी की और जनता की सरकार ने कुछ नहीं किया। क्या विपक्ष को यह नहीं दिखता कि पिछले 10 सालों में परीक्षा न होने से बेरोजगारों का जीवन संकट में है? पिछले शासकों ने चुनाव में हार के बाद अपने परिवार के सदस्यों को अन्य पद दिए। क्या आपको तेलंगाना में नौकरी के इच्छुक इन गरीब उम्मीदवारों की पीड़ा नहीं दिखती? पिछली सरकार ने गरीबों को नौकरी देने के बारे में क्यों नहीं सोचा? हमने दस महीनों में जो किया वह उल्लेखनीय है और आप इसे 10 साल में क्यों नहीं कर सके? उन्होंने कहा कि देश के किसी अन्य राज्य ने सत्ता में आने के महज 10 महीनों में 57,924 सरकारी नौकरियां नहीं भरीं। सरकार कुछ ही दिनों में ग्रुप 1, 2 और 3 की 2,000 से अधिक नौकरियों के लिए नियुक्ति पत्र देने के लिए तैयार है। चूंकि बीआरएस ने कुछ नहीं किया, इसलिए विपक्षी दल भी सोच रहा था कि मेरी सरकार को भी उसी राह पर चलना चाहिए। यही कारण है कि विपक्ष बाधा उत्पन्न कर रहा है।

अतीत में, निर्णय व्यक्ति और पार्टी केंद्रित होते थे। आज, हम लोगों की इच्छा के अनुसार निर्णय ले रहे हैं। हैदराबाद शहर में बिल्डिंग परमिट की मंजूरी में अनियमितताओं की जांच के लिए 'बिल्ड नाउ' पोर्टल शुरू किया गया है। हर किसी को उनकी स्थिति के बावजूद ऑनलाइन अनुमति ही मिलनी चाहिए। हमारा मुख्य उद्देश्य लोगों को पारदर्शी प्रशासन देना है और इसे सुशासन कहा जाता है। यह तेलंगाना मॉडल है। कुछ राजनीतिक प्रतिद्वंद्वी टिप्पणी कर रहे हैं कि लोग हमसे नाराज़ हैं। क्या आप बेरोजगारों को नौकरी की नियुक्ति पत्र देने के लिए मुझसे नाराज़ हैं? क्या आप अडानी और अंबानी से प्रतिस्पर्धा करने के लिए महिलाओं को अवसर प्रदान करने और सौर ऊर्जा पैदा करने के लिए मुझसे नाराज़ होंगे? क्या आप महिलाओं को मुफ्त बस यात्रा और गरीबों को 200 यूनिट मुफ्त बिजली देने के लिए नाराज़ हैं? लोग हमसे क्यों नाराज़ हैं? विपक्षी नेताओं ने कहा कि रेवंत रेड्डी ने अभी तक सरकार पर पकड़ नहीं बनाई है। हम भले ही गढ़ी (किले) में नहीं पले-बढ़े हों, लेकिन नल्लामाला के जंगलों में गरीबों को देखकर बड़े हुए हैं। यही कारण है कि हम उदारता दिखा रहे हैं। विपक्षी नेताओं में कोई मानवता नहीं है। मुख्यमंत्री को समझदारी दिखानी चाहिए और मैं समझदारी दिखा रहा हूं। विपक्षी नेता समझदारी की कमी के कारण अपने फार्महाउस से बाहर नहीं निकल पा रहे हैं। कुछ लोग अपनी सीमाओं को लांघकर मिस यूनिवर्स प्रतियोगिता के बारे में भी बात कर रहे हैं। यह आयोजन तेलंगाना में पर्यटन क्षेत्र को बढ़ाने का एक शानदार अवसर है।

कोकापेट में मल्टी-स्पेशलिटी पशु चिकित्सालय 'पेट फर्स्ट' का शुभारंभ

हैदराबाद, 20 मार्च (स्वतंत्र वार्ता)। हैदराबाद के कोकापेट के नरसिंगी में 'पेट फर्स्ट' नामक अत्याधुनिक पशु चिकित्सा मल्टी-स्पेशलिटी अस्पताल खोला गया है, जिसका उद्देश्य पालतू जानवरों के लिए बेहतरीन चिकित्सा देखभाल प्रदान करना है।

उद्घाटन में उपमुख्यमंत्री भट्टी विक्रमार्क, विधानसभा अध्यक्ष गड्डम प्रसाद कुमार, मंत्री दुदिल्ला श्रीधर बाबू, उत्तम कुमार रेड्डी, तुम्माला नागेश्वर राव और जुपल्ली कृष्ण राव, साथ ही विधायक मदन मोहन राव, विवेक, प्रेम सागर राव, कुंभम अनिल कुमार रेड्डी, मुरली नायक और अरेकापुडी गांधी, एमएलसी आमिर अली, पूर्व भारतीय क्रिकेटर अजहरुद्दीन और पद्मजा, जो पेट फर्स्ट की संस्थापक और प्रबंध निदेशक भी उपस्थित थे। कार्यक्रम के दौरान, उपमुख्यमंत्री ने शहरी क्षेत्रों में पालतू जानवरों के मालिकों की बढ़ती संख्या के कारण हैदराबाद महानगरीय क्षेत्र में पालतू जानवरों के अस्पतालों की बढ़ती मांग पर जोर दिया। भट्टी विक्रमार्क ने कहा, आम धारणा है कि शहर के सभी इलाकों में पालतू जानवरों के लिए व्यापक चिकित्सा देखभाल उपलब्ध नहीं है। हम उन्नत तकनीक और 24/7 चिकित्सा सेवाओं से लैस पेट फर्स्ट मल्टी-स्पेशलिटी अस्पताल का स्वागत करते हुए प्रसन्न हैं। मैं भी कई वर्षों से पालतू जानवरों का मालिक रहा हूं और उन चुनौतियों को समझता हूं जो तब उत्पन्न होती हैं जब चौबीसों घंटे चिकित्सा देखभाल प्रदान करने के लिए कोई निजी अस्पताल उपलब्ध नहीं होता है। मुझे वास्तव में उम्मीद है कि पेट-फर्स्ट अस्पताल हैदराबाद में चिकित्सा सेवाएं प्रदान करने वाली एक प्रमुख सुविधा के रूप में विकसित होगा।

कार्यक्रम के दौरान, पेट फर्स्ट की संस्थापक और प्रबंध निदेशक पद्मजा ने कहा, हमारा पालतू 'मैक्स' मेरे जीवन में महत्वपूर्ण महत्व रखता है। एक पालतू माता-पिता और उद्यमी दोनों के रूप में, मैं पशु कल्याण को बढ़ाने के लिए समर्पित हूं। इस प्रेरणा ने मुझे आधुनिक पशु चिकित्सा स्वास्थ्य सेवा पर केंद्रित एक अत्याधुनिक केंद्र स्थापित करने के लिए प्रेरित किया। पद्मजा ने आगे बताया कि यह अस्पताल उन्नत नैदानिक परीक्षण, आपातकालीन सेवाओं, विशेष उपचार, स्वास्थ्य पहल, पालतू पुनर्वास सुविधा और पालतू प्रशिक्षण के लिए एक व्यापक स्थान के रूप में कार्य करता है। उन्होंने कहा, हम 'पालतू जानवरों के प्रति प्रेम और उनके परिवारों की सुरक्षा' के अपने वादे के प्रति प्रतिबद्ध हैं।

कार्यक्रम के दौरान, पेट फर्स्ट के संस्थापक और विधायक के मदन मोहन राव ने न केवल मनुष्यों, बल्कि समाज के सभी जीवित प्राणियों की सुरक्षा के महत्व पर जोर दिया। पेट फर्स्ट एक ऐसी दुनिया बनाने के लिए समर्पित है जहां पालतू जानवरों को उचित देखभाल और चिकित्सा सुविधा मिले। हमारा मिशन आधुनिक सुविधाओं के माध्यम से पशु चिकित्सा उपचार के मानकों को बढ़ाना है, जो पालतू जानवरों और उनके मालिकों दोनों को शीर्ष पायदान की सेवाएं प्रदान करता है। हम 24/7 आपातकालीन और गंभीर देखभाल, उन्नत परीक्षण, शल्य चिकित्सा विशेषज्ञ, व्यापक पालतू स्वास्थ्य सेवा और अत्यधिक अनुभवी पशु चिकित्सा पेशेवरों की एक टीम प्रदान करते हैं।

तेलंगाना महिला आयोग ने फिल्म कोरियोग्राफरों को सख्त चेतावनी दी

हैदराबाद, 20 मार्च (स्वतंत्र वार्ता)। कुछ फिल्मी गानों में दिखाए गए अनुचित और अपमानजनक डांस स्टेप्स के बारे में कई शिकायतों के जवाब में, तेलंगाना राज्य महिला आयोग ने इस मामले पर कड़ा रुख अपनाया है, कोरियोग्राफरों को चेतावनी दी है कि अगर उनके आचरण में कोई बदलाव नहीं आया तो उनके खिलाफ सख्त कदम उठाए जाएंगे। गुरुवार को जारी एक प्रेस विज्ञप्ति में, तेलंगाना राज्य महिला आयोग की अध्यक्ष नेरेला शारदा ने महिलाओं की गरिमा को ठेस पहुंचाने वाले अश्लील डांस रूटीन को तुरंत बंद करने पर जोर दिया। उन्होंने कहा, अगर इस चेतावनी की अवहेलना की जाती है, तो हम लागू कानूनों के अनुसार सख्त कार्रवाई करने के लिए तैयार हैं। शारदा ने समाज को सकारात्मक संदेश देने और महिलाओं की गरिमा को बनाए रखने के लिए फिल्म उद्योग के नैतिक दायित्व पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने उद्योग से युवाओं और बच्चों पर फिल्मों के प्रभाव को देखते हुए स्व-नियमन का अभ्यास करने का आग्रह किया। अध्यक्ष नेरेला शारदा ने यह भी उल्लेख किया कि व्यक्तियों और सामाजिक संगठनों के पास इस मामले पर अपनी राय महिला आयोग के साथ साझा करने का अवसर है, जो सभी घटनाक्रमों पर कड़ी नजर रखेगा और उचित कार्रवाई करेगा।

बचाव दल को सुरंग से 800 टन स्टील हटाने का सौंपा गया काम

हैदराबाद, 20 मार्च (स्वतंत्र वार्ता)। एसएलबीसी सुरंग में दुर्घटना स्थल पर तैनात बचाव दल को 800 टन स्टील हटाने का काम सौंपा गया है, जिसमें मुख्य रूप से सुरंग बोरिंग मशीन के मलबे और इतनी ही मात्रा में मलबा शामिल है। लोको ट्रेन के विस्तार के अलावा कन्वेयर बेल्ट के परिचालन को पूर्ण रूप से बहाल करने के साथ ही कार्य में तेजी आई। डी1 और डी2 स्थानों पर काम करते हुए, बचाव दलों ने खुदाई की प्रगति में बाधा डालने वाली सुरंग बोरिंग मशीन के हिस्सों को हटाने के लिए अल्ट्रा-थर्मल कटर तैनात किए हैं। चार उत्खननकर्ता और बॉबकैट मिट्टी और स्टील को हटाने में अथक रूप से लगे हुए हैं। बचाव गतिविधियों को सुचारू बनाने के लिए लोको ट्रेन पटरियों की पुनः स्थापना भी तेजी से चल रही है। कार्यकुशलता बढ़ाने के लिए पानी के जेट से कीचड़ को हटाया जा रहा है। विशेष मुख्य सचिव (आपदा प्रबंधन) अरविंद कुमार ने बुधवार को टीमों और प्रमुख अधिकारियों के साथ समीक्षा की।

हरीश राव के खिलाफ फोन टैपिंग मामला खारिज

हैदराबाद, 20 मार्च (स्वतंत्र वार्ता)। बीआरएस के वरिष्ठ नेता और पूर्व मंत्री टी हरीश राव को बड़ी राहत देते हुए तेलंगाना उच्च न्यायालय ने बुधवार को सबूतों के अभाव और प्रक्रियागत खामियों का हवाला देते हुए कांग्रेस सरकार द्वारा उनके खिलाफ दायर फोन टैपिंग मामले को खारिज कर दिया। दिसंबर 2024 में पंजागुट्टा पुलिस स्टेशन में दर्ज किया गया यह मामला बिना किसी प्रारंभिक जांच या विश्वसनीय सबूत के दर्ज किया गया था, जिससे राजनीतिक प्रतिशोध के आरोप लगे। हरीश राव ने एफआईआर को हाईकोर्ट में चुनौती दी और कहा कि यह कांग्रेस सरकार द्वारा विपक्षी नेताओं को निशाना बनाकर बनाया गया एक मनगढ़ंत मामला है। कानूनी दलीलों के बाद अदालत ने मामला रद्द कर दिया और फैसला सुनाया कि एफआईआर निराधार है और उसमें कोई दम नहीं है।

बीआरएस नेताओं और समर्थकों ने फैसले का स्वागत करते हुए कहा कि यह सत्तारूढ़ पार्टी के लिए सबक है, जो विपक्ष की आवाज दबाने के लिए पुलिस का दुरुपयोग कर रही है। उन्होंने आरोप लगाया कि कांग्रेस सरकार राजनीतिक लाभ के लिए कानून प्रवर्तन को हथियार बना रही है, जो उच्च न्यायालय के फैसले से स्पष्ट है।

आईईडब्लूजी की पहली बैठक आयोजित

हैदराबाद, 20 मार्च (स्वतंत्र वार्ता)। तेलंगाना सरकार द्वारा तेलंगाना सामाजिक शिक्षा आर्थिक राजनीतिक जाति सर्वेक्षण का अध्ययन, विश्लेषण और व्याख्या करने के लिए गठित स्वतंत्र विशेषज्ञ कार्य समूह (आईईडब्लूजी) ने आज हैदराबाद में मैरी चेन्ना रेड्डी मानव संसाधन विकास संस्थान में अपनी पहली बैठक आयोजित की। अध्यक्ष न्यायमूर्ति (सेवानिवृत्त) सुदर्शन रेड्डी, उपाध्यक्ष प्रोफेसर कांचा इलैया और संयोजक प्रवीण चक्रवर्ती ने बैठक की अध्यक्षता की, जिसमें अन्य सभी सदस्यों ने शारीरिक या आभासी रूप से भाग लिया। सर्वेक्षण पद्धति और प्रारंभिक निष्कर्षों की एक विस्तृत प्रस्तुति हैदराबाद के जिला कलेक्टर और एसईईईपीसी सर्वेक्षण 2024 के लिए राज्य नोडल अधिकारी अनुदीप दुरीशेट्टी द्वारा विशेषज्ञ समूह के समक्ष प्रस्तुत की गई। विशेषज्ञ समूह ने सर्वेक्षण को जिस कठोर और वैज्ञानिक तरीके से किया गया था, उसकी सराहना की। सर्वेक्षण डेटा के आगे के विश्लेषण के लिए विभिन्न विश्लेषणात्मक और अर्थमितीय रूपरेखाओं पर चर्चा की गई और उन्हें तैयार किया गया। विश्लेषण के लिए अलग-अलग डोमेन के लिए विशेषज्ञ समूह के भीतर उप-समूह बनाए जाएंगे और उप-समूहों के सभी इनपुट को समेकित करने के लिए समूह 7 अप्रैल को दोपहर 2 बजे फिर से एकत्रित होगा।

दक्षिण मध्य रेलवे को मिली रेल मंत्री राजभाषा शील्ड

हैदराबाद, 20 मार्च (स्वतंत्र वार्ता)। दक्षिण मध्य रेलवे के लिए यह अत्यंत गौरव का विषय है कि राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में उत्तम कार्यनिष्पादन के लिए इस रेलवे के प्रधान कार्यालय को रेल मंत्री राजभाषा शील्ड का प्रथम पुरस्कार, विजयवाडा मंडल को आदर्श मंडल के रूप में आचार्य रघुवीर चल वैजयंती, माल डिब्बा कारखाना, गुंटुपल्ली को आदर्श कारखाना के रूप में रेल मंत्री राजभाषा शील्ड प्राप्त हुआ। इस रेलवे के मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं प्रधान मुख्य सामग्री प्रबंधक राजेश पी.खाडे को रेल मंत्री राजभाषा रजत पदक प्राप्त हुआ। रेलवे बोर्ड में आयोजित एक समारोह में अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी/रेलवे बोर्ड, सतीश कुमार के करकमलों से ये शील्ड प्रदान किए गए। इस समारोह में कार्यपालक निदेशक एवं रेलवे बोर्ड के वरिष्ठ पदाधिकारी उपस्थित थे। इस रेलवे के प्रधान कार्यालय को प्राप्त रेल मंत्री राजभाषा शील्ड को दक्षिण मध्य रेलवे के मुख्य राजभाषा अधिकारी श्री राजेश पी.खाडे, उप महाप्रबंधक (राजभाषा) डॉ.श्याम सुंदर साहु, राजभाषा अधिकारी/प्रधान कार्यालय श्री एम.के.नागराजु द्वारा ग्रहण किया गया। विजयवाड़ा मंडल को प्राप्त आचार्य रघुवीर चल वैजयंती को विजयवाड़ा मंडल के मंडल रेल प्रबंधक नरेंद्र ए. पाटील और राजभाषा अधिकारी एम.के.नागराजु द्वारा ग्रहण किया गया। माल डिब्बा कारखाना, गुंटुपल्ली को प्राप्त रेल मंत्री राजभाषा शील्ड को मुख्य कारखाना प्रबंधक, गुंटुपल्ली एस.श्रीनिवास द्वारा ग्रहण किया गया। दक्षिण मध्य रेलवे के महाप्रबंधक अरुण कुमार जैन ने अखिल भारतीय स्तर पर सम्मान प्राप्त करने पर राजभाषा टीम को बधाई दी। उन्होंने राजभाषा के कार्यान्वयन में मुख्यालय, मंडल और कारखाना के कार्यनिष्पादन की सराहना की। उन्होंने राजेश पी. खाड़े, प्रधान मुख्य सामग्री प्रबंधक को रेल मंत्री राजभाषा रजत पदक प्राप्त करने पर बधाई दी। उन्होंने टीम को और अधिक सम्मान प्राप्त करने के लिए प्रयास जारी रखने के लिए कहा है।

सभी गैर-जरूरी लाइटें बंद करके 'अर्थ ऑवर' कल मनाएं : अब्दुल नजीर

विजयवाड़ा, 20 मार्च (स्वतंत्र वार्ता)। आंध्र प्रदेश के राज्यपाल एस. अब्दुल नजीर ने राज्य के लोगों से 22 मार्च को 'अर्थ ऑवर' मनाने का आह्वान किया है। इस अवसर पर वे 2007 में शुरू हुए डब्ल्यूडब्ल्यूएफ (वर्ल्ड वाइड फंड फॉर नेचर) के अर्थ ऑवर वैश्विक अभियान के तहत रात 8.30 बजे से 9.30 बजे तक सभी गैर-जरूरी लाइटें बंद करके 'अर्थ ऑवर' मनाएं। राज्यपाल अब्दुल नजीर ने कहा कि डब्ल्यूडब्ल्यूएफ का अर्थ ऑवर अभियान एक घंटे के लिए गैर-जरूरी लाइटें बंद करने की स्वैच्छिक कार्रवाई के माध्यम से दुनिया भर के लोगों को एकजुट करता है, ताकि संरक्षण और टिकाऊ प्रथाओं पर ध्यान केंद्रित करने में मदद मिल सके और भविष्य की पीढ़ियों के लिए एक बेहतर दुनिया बनाई जा सके।

पूर्व तट रेलवे

लॉट नं./वर्ग : PARKING-WAT-VSKP-FW-121-25-1 (Parking-Four Wheeler)

विवरण: विशाखापट्टनम (वाल्टियर मण्डल) में जनरल बुकिंग कार्यालय के सामने चार पहिया (Four Wheelers) वाहनों के लिए पार्किंग स्थल।

दर यूनिट: वार्षिक लाइसेंसिंग शुल्क, ट्रिप/दिवस: 1096, न्यूनतम वृद्धि (%): 0.2, लॉट स्थिति: ड्राफ्ट कैटलॉग में नया।

लॉट प्रारंभ होने की तिथि व समय: दिनांक 26.03.2025 को 1100 बजे, लॉट समाप्त होने की तिथि व समय: दिनांक 26.03.2025 को 1130 बजे।

उपरोक्त ई-निविदा के ई-निविदा दस्तावेज सहित संपूर्ण जानकारी वेबसाइट http://www.ireps.gov.in पर उपलब्ध होंगे।

उप वाणिज्य प्रबंधक/वाल्टियर

PR-1112/P/24-25

राजेंद्रनगर रोड पर लगी कार में आग

हैदराबाद, 20 मार्च (स्वतंत्र वार्ता)। शहर के राजेंद्रनगर रोड पर बुधवार रात एक कार में आग लग गई। पुलिस के अनुसार, पीवीएनआर एक्सप्रेसवे के पिलर संख्या 151 के पास एक टोयोटा क्वालिस कार में उस समय आग लग गई जब वाहन चल रहा था। आग फैलने से पहले ही ड्राइवर तेजी से कार से उतर गया। आग में गाड़ी जलकर खाक हो गई। दमकलकर्मियों ने आग बुझाई। अधिकारियों को संदेह है कि आग शॉर्ट सर्किट के कारण लगी होगी।

एनएसयूआई ने संसद घेराव पोस्टर का अनावरण किया

हैदराबाद, 20 मार्च (स्वतंत्र वार्ता)। कांग्रेस की छात्र शाखा भारतीय राष्ट्रीय छात्र संघ (एनएसयूआई) के तेलंगाना अध्यक्ष वेंकट स्वामी ने गुरुवार को गांधी भवन में संसद घेराव पोस्टर का अनावरण किया। केंद्र सरकार द्वारा अनुशंसित विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) के नए मसौदा विनियमों के विरोध में, एनएसयूआई ने 24 मार्च को संसद घेराव कार्यक्रम का आह्वान किया। कार्यक्रम के दौरान, तेलंगाना एनएसयूआई के अध्यक्ष वेंकट स्वामी ने कहा कि तेलंगाना से लगभग 400 लोग प्रदर्शन में भाग लेने के लिए दिल्ली जाने की योजना बना रहे हैं। उन्होंने यूजीसी विनियमों के मसौदे के बारे में भाजपा के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार की आलोचना की, एक प्रस्ताव पर चिंताओं को उजागर किया जिसका उद्देश्य विश्वविद्यालय के कुलपति की नियुक्तियों के लिए पात्रता मानदंडों को कमजोर करना है। वेंकट स्वामी ने यह भी व्यक्त किया कि प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी यूजीसी पर नियंत्रण करने का प्रयास कर रहे हैं।

आईटी मंत्री ने किया 'ग्रामपे' का उद्घाटन

हैदराबाद, 20 मार्च (स्वतंत्र वार्ता)। तेलंगाना के सूचना प्रौद्योगिकी, इलेक्ट्रॉनिक्स और संचार, उद्योग और वाणिज्य, और विधायी मामलों के मंत्री डी श्रीधर बाबू ने वियोना फिनटेक के मुख्यालय में ग्रामपे लॉन्च किया, जिसका उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों के लिए डिजिटल वित्तीय पहुंच में सुधार करना है। आईटी मंत्री डी श्रीधर बाबू ने लॉन्च के दौरान इस बात पर प्रकाश डाला कि कैसे प्रौद्योगिकी सभी की वित्तीय पहुँच को बेहतर बना सकती है। उन्होंने ग्रैमपे को भारत के डिजिटल और वित्तीय समावेशन लक्ष्यों का समर्थन करने वाली एक महत्वपूर्ण परियोजना बताया। मीडिया से बातचीत करते हुए उन्होंने कहा कि ग्रैमपे एक क्रांतिकारी पहल है जो सुनिश्चित करती है कि वित्तीय पहुँच सभी के लिए एक अधिकार है, न कि केवल एक विशेषाधिकार।

ग्रैमपे का शुभारंभ भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था को अधिक मजबूत, अधिक समावेशी और डिजिटल रूप से उन्नत बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। ग्रैमपे गांवों में लोगों को सुरक्षित डिजिटल भुगतान विकल्पों से जोड़ने और स्थानीय व्यवसायों का समर्थन करने में मदद करेगा। भारत की 65% से अधिक आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में रहती है, इसलिए कई लोगों को वित्तीय सेवाओं तक पहुँचने में चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

ग्रैमपे बैंकिंग मानकों को पूरा करने वाले तेज़, आसान और सुरक्षित लेनदेन प्रदान करके इस समस्या का समाधान करना चाहता है। यह प्लेटफ़ॉर्म ग्रामीण उद्यमियों, छोटे व्यापारियों और किसानों को डिजिटल कॉमर्स में शामिल होने, नकदी के उपयोग को कम करने और उनकी वित्तीय सुरक्षा को बढ़ाने में मदद करता है।

ग्रैमपे का ध्यान ग्राम-स्तरीय उद्यमियों (वीएलई) मॉडल पर है। इस मॉडल में, प्रशिक्षित व्यक्ति डिजिटल भुगतान को बढ़ावा देकर अपने समुदायों की मदद करते हैं। ये स्थानीय उद्यमी ग्रामीण विक्रेताओं को अपने साथ जोड़ेंगे, लोगों को डिजिटल भुगतान के बारे में सिखाएंगे और उन्हें सुरक्षित लेनदेन करने में मदद करेंगे। इस पहल का उद्देश्य छोटे व्यवसायों, किसानों और कारीगरों को बड़े बाजारों से जोड़कर और उनके लिए अधिक अवसर पैदा करके उनका समर्थन करना है। यह प्रणाली वित्तीय सुरक्षा भी सुनिश्चित करती है और क्यूआर कोड, यूपीआई भुगतान और मोबाइल-आधारित वित्तीय समाधानों का उपयोग करके डिजिटल लेनदेन को आसान बनाती है।

वियोना फिनटेक के चेयरमैन रवींद्रनाथ यारलागड्डा ने शहरी और ग्रामीण भारत के लिए वित्तीय पहुंच में सुधार लाने के कंपनी के लक्ष्य पर जोर दिया। उन्होंने एक बयान में कहा कि वियोना फिनटेक में, हमारा लक्ष्य नए समाधानों के साथ वित्तीय अंतर को पाटना है। ग्रैमपे केवल एक भुगतान प्लेटफ़ॉर्म नहीं है; यह वास्तविक वित्तीय समावेशन की दिशा में एक कदम है, जो यह सुनिश्चित करता है कि हर कोई, चाहे वे कहीं भी रहते हों, सुरक्षित और कुशल डिजिटल लेनदेन का उपयोग कर सकें।

श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
(केंद्रीय विश्वविद्यालय)
बी-4, कुतब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110016

विज्ञापन संख्या-01/2025

निम्नलिखित पद पर नियुक्ति के लिए योग्य उम्मीदवारों से ऑनलाइन माध्यम द्वारा आवेदन आमंत्रित किए जाते हैं-

क्रम सं.	पद का नाम एवं वेतन स्तर	पदों की संख्या तथा श्रेणी	भर्ती का माध्यम
I	कुलसचिव वेतन स्तर-14	01-UR	सीधी भर्ती/प्रतिनियुक्ति

भर्ती से संबंधित पात्रता मानदंड के विस्तृत नियम एवं शर्तें वेबसाइट www.slbsrsv.ac.in से डाउनलोड की जा सकती हैं। उम्मीदवारों को अपने आवेदन ऑनलाइन माध्यम से जमा करने के साथ 2000/- (रू0 1000/- अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति/अन्य पिछड़ा वर्ग/आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग/महिला श्रेणी के उम्मीदवारों के लिए) रूपये का शुल्क जमा करना आवश्यक है। जिन उम्मीदवारों ने पिछले विज्ञापन के अंतर्गत कुलसचिव पद के लिए आवेदन किया था, उन्हें नया आवेदन करना आवश्यक है। हालाँकि आवेदन शुल्क नियमानुसार वापस किया जाएगा। विधिवत भरे हुए ऑनलाइन आवेदन को जमा करने की अंतिम तिथि 10/04/2025 है। ऑनलाइन आवेदन के प्रिंट आउट की प्रति संबंधित स्वप्रमाणित दस्तावेजों के साथ डाक द्वारा भेजी जानी चाहिए ताकि वह इस विश्वविद्यालय में दिनांक 20.04.2025 तक प्राप्त हो सके।

Cbc21371/12/0001/2425

कुलसचिव (प्रभारी)

स्वतंत्र वार्ता

शुक्रवार, 21 मार्च - 2025

हमास के ठिकानों पर इजरायली सेना के ताबड़तोड़ हमले

अशोक भाटिया

इजरायली बंधकों को वापस करने और हमास को सत्ता से हटाने के लिए फिलिस्तीनियों को ₹आखिरी चेतावनी₹ जारी करने के बाद गुरुवार, 20 मार्च को इजरायल ने गाजा पर बमबारी की और अपनी जमीनी कार्रवाई तेज कर दी. नए सिरे से किए गए हमले ने जनवरी के बीच में शुरू हुई सीजफायर की शांति को पूरी तरफ भंग कर दिया है. हमास द्वारा संचालित स्वास्थ्य मंत्रालय के अनुसार, मंगलवार, 18 मार्च के तड़के गाजा पर भारी हवाई हमले शुरू हुए, जिसमें 400 से अधिक लोग मारे गए. बुधवार को इजरायल की सेना ने घोषणा की कि उसने अपनी ₹सुरक्षा परिधि का विस्तार करने और उत्तर और दक्षिण के बीच बफर जोन बनाने के लिए, मध्य और दक्षिणी गाजा पट्टी में₹ ग्राउंड ऑपरेशन फिर से शुरू कर दिया है.इजरायल ने सीजफायर को बनाए रखने के कई विदेशी सरकारों के आह्वान को नकारा दिया है. इजरायल के इस फैसले के साथ गाजा से ऐसी तस्वीरें आ रही हैं जिसमें लोग अपनों के शवों को खोजने के लिए एक बार फिर मलबों को उलट-पलट रहे हैं. एएफपी की रिपोर्ट के अनुसार गाजा सिटी में कंक्रीट के ढेर से एक बच्चे के शव को निकालने की कोशिश कर रहे एक व्यक्ति ने कहा, हम अपने नंगे हाथों से खुदाई कर रहे हैं. इजरायल ने गाजा के नागरिकों को युद्ध क्षेत्र को छोड़ने को कह दिया है. इसके बाद से छोटे बच्चों के कंधे पर लिए परिवारों ने उत्तरी गाजा से बाहर जाने वाली सड़कों को भर दिया है. राफा में रेड क्रॉस फील्ड हॉस्पिटल के सीनियर मेडिकल ऑफिसर फ्रेड ओला ने कहा कि नए सिरे से हुए हमलों ने पिछले दो महीनों की शांति को तोड़ दिया है.तो यह कोई आश्चर्य की बात नहीं थी। लेकिन इस बीच, इजरायल और हमास के बीच एक अस्थायी युद्धविराम था। उस समय, कैदियों और कैदियों के आदान-प्रदान के साथ-साथ स्थायी शांति पर बातचीत शुरू हो गई थी। बातचीत बेनतीजा रही। लेकिन यह टूटा नहीं था। तथ्य यह है कि इजरायल ने ताजा हवाई हमले शुरू किए और परिणाम से पहले युद्ध जैसी स्थिति को फिर से बनाया, इजरायल नेतृत्व के इरादों के बारे में संदेह को रेखांकित करता है: इजरायल के प्रधान मंत्री बिन्यामिन नेतन्याहू का मुख्य लक्ष्य गाजा पट्टी से हमास का सफाया करना है, लेकिन वह कभी भी हर हमास नेता को खत्म करने के लिए 100 से 200 फिलिस्तीनियों को मारने के कारण का जवाब देने के जाल में नहीं पड़ता है। हमास गाजा पट्टी पर नियंत्रण नहीं चाहता है, तो किसे करना चाहिए? क्योंकि फिलिस्तीनी प्राधिकरण के रूप में मौजूद प्रणाली बहुत कमजोर है, और इसका अस्तित्व और प्रभाव वेस्ट बैंक तक सीमित है। इन दो अलग-अलग क्षेत्रों के बीच। इजराइल इस विभाजित फिलिस्तीन के बीच में स्थित है। यह केवल फिलिस्तीनी राजनीतिक शासकों की कमजोरी का फायदा उठाता था कि हमास ने गाजा पट्टी पर नियंत्रण कर लिया था।लेकिन प्रशासक नहीं! इसलिए पश्चिमी तट की तुलना में गाजा में अधिक चर्चा थी। बुद्धि और व्यवस्था का अभाव। जब इजरायल ने इसका फायदा उठाने की कोशिश की, तो हमास (और इज़राइल भी) ने उसी भाषा में जवाब दिया जो हमास (और इजराइल) समझता है, एक भारी कीमत अब हमास के साथ-साथ गाजा द्वारा भी चुकाई जा रही है। फिर से, दुर्भाग्य से गाजा में क्रोधित, आंसू भरी आंखों वाले लोगों के लिए, वाशिंगटन में कोई नेतृत्व नहीं बचा है जो इजरायल की ओर आंखें मूंद सके। जिन्हें यह तय करना है कि राष्ट्रपति चुनाव में जो बिडेन के नेतृत्व वाली डेमोक्रेटिक पार्टी की हार ने संयुक्त राज्य अमेरिका को कितना नुकसान पहुंचाया है, लेकिन नवीनतम घटना से पता चलता है कि गाजा में फिलिस्तीनियों को नुकसान माप से परे होगा।अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प गाजा से फिलिस्तीनियों के पूर्ण विस्थापन की उम्मीद करते हैं। दोनों का लगभग एक ही उद्देश्य, अलग-अलग मार्ग है। ट्रम्प गाजा में अपने सपनों का पर्यटन स्वर्ग स्थापित करना चाहते हैं। नेतन्याहू 'सफाई' का काम कर सकते हैं। गांव के नेता अवैध रूप से भूमि के एक टुकड़े पर नियंत्रण करने के लिए ठगों को भेजते हैं। नेतन्याहू फिलिस्तीनियों के जीवन की परवाह नहीं करते हैं, और उनके अधिकारों को ट्रम्प करते हैं, और व्हाइट हाउस की प्रतिक्रिया इस खबर के लिए थी कि 400 से अधिक पीड़ितों - बड़ी संख्या में बच्चों की मृत्यु हो गई थी। इसके लिए हमास जिम्मेदार है। राष्ट्रपति ने पहले ही चेतावनी दी थी कि ऐसा होने से रोकने के लिए सभी इजरायलियों को रिहा कर दिया जाना चाहिए या आसमान गिर जाएगा...'! बिडेन प्रशासन संवेदनशीलता दिखा रहा था, कम से कम अपनी प्रतिक्रियाओं में! ट्रम्प प्रशासन उनसे ज्यादा 'ईमानदार' है! फूक्वा की संवेदनशीलता की जरूरत किसे है? इजरायल ने नवीनतम हमले के लिए हमास की हठधर्मिता को दोषी ठहराया, जो कि मामला नहीं है। ठीक दो महीने पहले, 19 जनवरी को, इजरायल और हमास के बीच पहला युद्धविराम लागू हुआ था। इसके तहत, ओलिस और युद्ध के कैदियों की रिहाई का पहला चरण, गाजा पट्टी से इजरायली सेना की पूर्ण वापसी दोनों पक्षों द्वारा पूरी होने की उम्मीद थी। युद्धविराम का पहला चरण 1 मार्च को समाप्त हुआ। दूसरे चरण की शुरुआत से पहले वार्ता होने की उम्मीद थी। पहले चरण में यह भी तय किया गया था कि अमेरिका ने संघर्ष विराम के पहले चरण में बढ़त ले ली थी, जिसका श्रेय निश्चित रूप से ट्रम्प ने लिया था। जब दूसरे चरण की वार्ता आगे नहीं बढ़ी तो स्थिति 'जस की तस बनी रही' रहने की उम्मीद थी। लेकिन इजरायल ने एक बार फिर घातक हमले किए और स्थिति को पहले चरण के पहले चरण में ले गए। जारी नहीं किया गया। हमास, जाहिर है, इसके विपरीत कहता है। यह है कि आप पूरे युद्ध के अंत के बिना सभी नखलिस्तान को जाने नहीं दे सकते। इजराइल ने जोर देकर कहा कि हमास युद्ध की समाप्ति से पहले गाजा पट्टी का नियंत्रण छोड़ दे, एक महत्वपूर्ण विकास जिसे दुनिया ने नजरअंदाज कर दिया, जो बाहरी दुनिया के लिए मामूली होने के बावजूद, नेतन्याहू के लिए महत्वपूर्ण था। जब पहले युद्धविराम की घोषणा की गई, तो नेतन्याहू सरकार के सहयोगी, यहूदी शक्ति के नेता इतामार बेन ग्वायर ने फैसले का विरोध किया और सरकार छोड़ने का फैसला किया। विधायिका में बहुत मजबूत बहुमत नहीं था। सात सदस्यीय यहूदी शक्ति के बाहर निकलने ही वे और अधिक कमजोर हो गए। नेतन्याहू आने वाले दिनों में देश के बजट को मंजूरी दिलवाना चाहते हैं। इसके लिए सुरक्षित बहुमत की जरूरत थी। गाजा पर हमले सोमवार आधी रात को शुरू हुए और कुछ ही घंटों के भीतर यहूदी पावर पार्टी मंगलवार को फिर से सरकार में शामिल हो गई। दूसरे शब्दों में, नेतन्याहू सरकार सुरक्षित है। नेतन्याहू के लिए, जो 7 अक्टूबर, 2023 से पहले राजनीतिक रूप से कमजोर हो गए थे, हमास का हमला एक आपदा साबित हुआ, और वहां से उनका मुख्य लक्ष्य अपनी राजनीतिक स्थिति को मजबूत करना होगा। उत्तरार्द्ध पर करीब से नज़र डालने से पता चलेगा कि गाजा युद्ध नेतन्याहू के राजनीतिक अस्तित्व और महत्वाकांक्षाओं की लड़ाई से अलग नहीं है। नेतन्याहू, ट्रम्प, पुतिन, शी जिनपिंग जैसे नेता दुनिया भर में बढ़ रहे हैं जिन्होंने व्यक्तिगत अस्तित्व और महत्वाकांक्षा के लिए लाखों बलिदान या बलिदान करने के मॉडल को स्थापित और विकसित किया है। उनका युद्धविराम परेशान लोगों को आराम देने के लिए नहीं है, बल्कि उन्हें यह तय करने का समय देने के लिए है कि वे युद्ध से क्या प्राप्त करेंगे। युद्ध के लिए उनके अंत को गोलियों या तोप के गोले का अंत घोषित नहीं किया गया है। हमारी स्थिति कितनी मजबूत या नाजुक है, इसके निष्कर्ष सामने आते हैं। इस प्रकार, युद्ध जैसी स्थितियों से बातचीत भी मनुष्यों के कल्याण के लिए नहीं बल्कि आत्म-कल्याण और सुविधाओं के लिए होती है। हर नए कार्य के लिए, धार्मिक संकट, राष्ट्रीय संकट, देशभक्ति, धार्मिक गौरव जैसी मध्ययुगीन अवधारणाओं का उपयोग किया जाता है। दूसरे की भूमि, दूसरे का पानी, किसी और के संसाधनों को अपने पास लाने के लिए दावा करें और उन्हें अपने साथ लाने के लिए हेरफेर करें। यह उनकी खाकी है। वे हाथ में परिष्कृत हथियारों का उपयोग करके दुश्मन के दमन के बजाय लोगों को नष्ट करने के लिए भी सहमत हैं।

अंतरिक्ष अभियान में नई संभावनाएं

अंतरिक्ष यात्री सुनीता विलियम्स और बुच विल्मोर जब अंतरिक्ष की उड़ान पर गए थे किसी ने कल्पना भी नहीं की थी कि उन्हें मजबूरी वश अंतरिक्ष केंद्र में नौ महीने रहना पड़ेगा। इस लिहाज से देखें तो उनकी सुरक्षित वापसी विज्ञान की दुनिया में किसी चमत्कार से कम नहीं है। इस वैज्ञानिक उपलब्धि से भावी अंतरिक्ष अभियानों के लिए नई संभावनाएं और नई राहें खुलने की उम्मीद बलवती हो गई है। खास बात यह है कि अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष केंद्र में नौ महीने चौदह दिन रहने के दौरान सुनीता ने न तो अपना हौसला खोया और न ही अपना समय गंवाया। पूरे आत्मविश्वास के साथ वहां वे अपने कार्य में डटी रहीं। उन्हें किसी न किसी दिन धरती पर लौटना ही है, इस विश्वास के साथ वे सदैव सकारात्मक ही सोचती रहीं। नतीजा आज दुनिया के सामने है। एक बार तो उन्होंने कहा भी कि किसी को चिंता करने की जरूरत नहीं है। देखा जाए तो वैज्ञानिक और अंतरिक्ष यात्री हमेशा सभी तरह के जोखिमों के लिए तैयार रहते हैं। जाहिर है कि सुनीता भी इसके लिए, तैयार थीं। वे अंतरिक्ष में परीक्षण उड़ान पर गई थीं। आठ दिन बाद उन्हें लौटना था। तब यह नहीं पता था कि वापसी के समय स्टारलाइनर में तकनीकी खराबी भी आ जाएगी। खास बात यह रही कि अंतरिक्ष केंद्र में रहने के दौरान न केवल उन्होंने अपना अध्ययन जारी रखा, बल्कि कई अनुसंधान और प्रयोग भी कर डाले, जो आने वाले दिनों में काफी काम आने वाले हैं। नौ महीने अंतरिक्ष में रहने का कीर्तिमान भी बनाया। इस बीच अंतरिक्ष यात्रियों को लाने के लिए नासा ने पूरी ताकत लगा दी थी। तकनीकी दिक्कतें इतनी थीं कि लग नहीं रहा था कि यह अभियान पूरा हो पाएगा। मगर स्पेसएक्स के ड्रैगन कैप्सूल बडा काम आया, जिसकी मदद से सुनीता और बुच विल्मोर के साथ निक हेग और अलेक्जेंडर गोरबुनोव को भी फ्लोरिडा के तट पर उतार लिया गया। यह पहली बार है जब कोई अंतरिक्ष मिशन इतना लंबा खिंचा है। जून 2024 में बोइंग के स्टारलाइनर से दोनों अंतरिक्ष यात्री गए थे। वहां अटक जाने के बाद सुनीता और विल्मोर अंतरिक्ष केंद्र के पूर्णकालिक सदस्य की तरह हो गए थे। इस दौरान सुनीता ने कई कीर्तिमान अपने नाम किए। अंतरिक्ष में फंसे रहने पर उन्होंने कभी कोई शिकायत नहीं की। मगर इस दौरान उनसे भावनात्मक रूप से जुड़े रहे धरती के करोड़ों लोग उनकी कुशलता के लिए प्रार्थना करते रहे। अब उनके लौट आने के बाद वैज्ञानिक अंतरिक्ष में लंबे समय तक रहने के प्रभावों का गहन अध्ययन कर सकेंगे। भविष्य में मंगल और चांद पर जाने और वहां मनुष्यों के रहने की संभावनाएं तलाशी जा सकेंगी। आखिरकार नए अनुभवों से साक्षात्कार का ही नाम तो विज्ञान है। जाहिर है इसी विज्ञान की वजह से आने वाली पीढ़ियां निरंतर आगे बढ़ती रहेंगी।

अंतरराष्ट्रीय वन दिवसः प्रकृति का आभार मानने का वक्त

प्रो. आरके जैन "अरिजीत"

जंगल की गहराइयों में, जब सूरज की पहली किरण पत्तियों की ओट से छनकर धरती को स्पर्श करती है, तो प्रकृति एक अनूठा चमत्कार रचती है। हवा में घुलती मिट्टी की सोंधी खुशबू, पेड़ों के झुरमुट में गूंजती चिड़ियों की मधुर चहचहाहट और हर कदम पर बिछी हरी चादर—यह वनों का वह जीवंत राग है, जो धरती को साँस देता है। वन हमारे ग्रह के प्राण हैं, जो हर साँस में शुद्ध ऑक्सीजन का उपहार देते हैं। ये जलवायु को संतुलित करते हैं, जैव विविधता को आश्रय देते हैं और अनगिनत जीवन का सहारा देते हैं। हर साल 21 मार्च को अंतरराष्ट्रीय वन दिवस के रूप में हम इस अनमोल धरोहर को नमन करते हैं, इसके प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त करते हैं और इसे संरक्षित करने की शपथ लेते हैं। इस बार की थीम वन और भोजन वनों की उस अनदेखी शक्ति को उजागर करती है, जो खाद्य सुरक्षा, पोषण और आजीविका का आधार बनती है। मगर यह सवाल मन को मथ डालता है—क्या हम वास्तव में इस अमूल्य संपदा के मोल को पहचानते हैं, या इसे खो देने की दहलीज पर आ खड़े हुए हैं? वनों का महत्व सिर्फ पर्यावरण तक सीमित नहीं है; यह जीवन का आधार है। वैज्ञानिक दृष्टि से ये पृथ्वी के सबसे बड़े कार्बन अवशोषक हैं। हर साल लगभग 10 अरब टन कार्बन डाइऑक्साइड को सोखकर ये ग्रीनहाउस गैसों के प्रभाव को कम करते हैं। यह जलवायु परिवर्तन के खिलाफ एक प्राकृतिक कवच है। दूसरी ओर, जैव विविधता के संदर्भ में वन एक अनमोल रत्न हैं। अमेज़न वर्षावन की बात करें, तो वहाँ 16,000 से अधिक वृक्ष प्रजातियाँ और लाखों जीव-जंतु बसते हैं। यह धरती का सबसे जीवंत पारिस्थितिकी तंत्र है, जो प्रकृति की रचनात्मकता का जीता-जागता प्रमाण है। वनों का आर्थिक और सामाजिक महत्व भी कम नहीं है। विश्व भर में करीब 1.6 अरब लोग अपनी आजीविका के लिए वनों पर निर्भर हैं। खासकर आदिवासी समुदायों के लिए जंगल जीवन का आधार हैं। ये उन्हें भोजन, औषधीय पौधे, लकड़ी और आश्रय देते हैं। भारत के घने जंगलों में बसे आदिवासी आज भी वनों से मिलने वाली जड़ी-बूटियों से अपनी चिकित्सा करते हैं। इसके अलावा, वन पर्यटन और लकड़ी आधारित उद्योगों के जरिए अर्थव्यवस्था को मजबूती देते हैं। सच कहें, तो वन केवल हरे-भरे पेड़ नहीं, बल्कि सभ्यता का वह आधार हैं, जिस पर हमारा वजूद टिका है। लेकिन यह हरा सपना तेजी से मुरझा रहा है। हर साल 13 मिलियन हेक्टेयर जंगल—यानी पुर्तगाल के बराबर क्षेत्र—काट दिया जाता है। शहरीकरण की अंधी दौड़, कृषि भूमि का विस्तार और औद्योगिक जरूरतों ने वनों को निगलना शुरू कर दिया है। भारत में भी वन क्षेत्र घट रहा है, हालाँकि कुछ प्रयासों से स्थिति सुधरी है। वन कटाई का असर सिर्फ पेड़ों तक सीमित नहीं है। यह मिट्टी के कटाव को बढ़ाता है, नदियों को सूखने देता है और बाढ़ जैसी आपदाओं को न्योता देता है। जैव विविधता पर इसका प्रभाव और भी भयावह है। हर पेड़ के साथ अनगिनत प्रजातियाँ विलुप्त हो रही हैं। उदाहरण के लिए, अमेज़न में वन कटाई के कारण कई दुर्लभ प्रजातियाँ हमेशा के लिए खो गईं। कार्बन उत्सर्जन में वृद्धि से धरती का तापमान बढ़ रहा है, और ग्लोबल वार्मिंग अब एक दूर की बात नहीं, बल्कि हमारी आँखों के सामने की हकीकत है। यह सब उस भविष्य की ओर इशारा करता है, जहाँ जंगल सिर्फ बच्चों की किताबों में रंगीन चित्र बनकर रह जाएँगे। क्या हम सचमुच ऐसी दुनिया चाहते हैं? इस संकट से निपटने के लिए दुनिया भर में कदम उठाए जा रहे हैं। संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों में वनों के सतत प्रबंधन को प्रमुखता दी गई है। यह लक्ष्य 2030 तक वन क्षेत्र को बढ़ाने और उनकी गुणवत्ता को बेहतर करने की बात करता है। भारत भी इस दिशा में पीछे नहीं है। राष्ट्रीय वनीकरण कार्यक्रम और ग्रीन इंडिया मिशन जैसी योजनाएँ वन क्षेत्र को हरा-भरा करने में जुटी हैं। भारत सरकार ने 33% भू-भाग को वन क्षेत्र बनाने का संकल्प लिया है, जो एक महत्वाकांक्षी लेकिन जरूरी लक्ष्य है। अवैध कटाई पर रोक के लिए सख्त कानून बनाए गए हैं। कई देशों में ड्रोन और सैटेलाइट तकनीक से जंगलों की निगरानी की जा रही है। गैर-सरकारी संगठन और स्थानीय समुदाय भी इस मुहिम में शामिल हैं। भारत में ₹चिपको आंदोलन₹ जैसी मिसालें आज भी प्रेरणा देती हैं, जहाँ लोगों ने पेड़ों से चिपककर उन्हें बचाया। वृक्षारोपण अभियान भी जोर पकड़ रहे हैं।

ट्रम्प के टैरिफ से दुनिया में नया टेरर

ऋतुपर्ण दवे

अमेरिका में इस बार चुनाव के दौरान ही ट्रंप के आक्रामक तेवर बता रहे थे कि वो न केवल नया कुछ करेंगे बल्कि सभी राष्ट्रपतियों से बड़ी लकीर खीचेंगे। 13 जुलाई 2024 को उन्हें मारने की कोशिश के दौरान चली गोली जो कान छूते निकली और पूरे चुनावी रुख को बदल डाला। कहीं मौत और ट्रंप के बीच का सेकेंड्स से भी कम का ये फासला ही सख्त तेवरों की वजह तो नहीं? उनके मुंह से तब निकले फाइट, फाइट, फाइट शब्द अब हकीकत में दुनिया के लिए चुनौती बन रहे हैं। ट्रंप कड़े और बड़े फैसले लेकर सबसे 'फाइट' कर रहे हैं। क्या उनका दूसरा कार्यकाल अमेरिका और दुनिया में नया इतिहास रचेगा? सबसे ज्यादा परेशानी और हैरानी उनकी हालिया टैरिफ घोषणाओं से है जो दुनिया में चिंता का सबब है। आखिर टैरिफ है क्या? जिससे ट्रंप की घोषणा के बाद वैश्विक भूचाल आया? यह दूसरे देशों से आयातित वस्तुओं पर लगाया जाने वाला टैक्स है। जिसका भुगतान आयातक करते हैं। किसी वस्तु पर 10 फीसदी टैरिफ का मतलब भारत से अमेरिका पहुंची 5 डॉलर की उस वस्तु पर 0.50 डॉलर का अतिरिक्त टैक्स है। इससे आयातित वस्तु का दाम बढ़ता है और खरीददार सस्ते घरेलू उत्पाद ढूंढने लगते हैं। नतीजन आयात करने वाले देश को अपनी अर्थव्यवस्था बढ़ाने में सहयोग मिलता है। लेकिन ट्रंप का नजरिया अलग है। वो इसे अमेरिकी अर्थव्यवस्था बढ़ाने, नौकरियों की रक्षा करने और कर राजस्व बढ़ाने के तौर पर देखते हैं। दुनिया के अमीरों में शुमार दिग्गज निवेशक वॉरेन बफेट जिनके बारे में कहा जाता है कि वो दुनिया के शेयर बाजार की चाल को नियंत्रित करते हैं भी ट्रंप के इस कदम से नाखुश हैं। बफेट टैरिफ नीतियों को युद्ध जैसा कदम मानते हैं। महंगाई और उपभोक्ताओं पर बोझ बढ़ने की आशंकाएं जताते हैं। इससे दीर्घकालीन अवधि में आर्थिक प्रभावों पर दुष्प्रभाव तथा आम उपभोक्ताओं पर बोझ बढ़ने की आशंका जताते हैं। बफेट की टिप्पणी इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि वह ट्रंप के चीन, कनाडा और मैक्सिको पर टैरिफ बढ़ाने की घोषणा के बाद आई। इससे ग्लोबल ट्रेड वॉर और बढ़ा जो निवेशकों की गहरी चिंता का सबब है। टैरिफ पर अमेरिका और चीन आमने-सामने हैं। चीन चेतावनी दे चुका है कि वो इससे निपटने खातिर तैयार है। अमेरिकी दबाव का मुकाबला करेगा। चीनी वस्तुओं पर टैरिफ बढ़ते ही दुनिया की दो दिग्गज अर्थव्यवस्थाओं के मध्य व्यापार युद्ध के आसार झलकने लगे हैं। चीनी विदेश मंत्री वांग का बयान कि यदि कोई देश केवल अपने हित आगे बढ़ाने लगे तो दुनिया में जंगल का कानून लागू हो सकता है। उन्होंने याद दिलाया कि अमेरिका को फेंटेनाइल महामारी से निपटने में बीजिंग का सहयोग नहीं भूलना चाहिए। क्या वाशिंगटन इस उदारता का बदला अकारण टैरिफ बढ़ा ले रहा है? सच है कि चीन लंबे समय से विश्व का कारखाना बना हुआ है। 1970 के आखिर में जैसे ही चीन ने अपनी अर्थव्यवस्था दुनिया के लिए खोली तबसे सस्ते श्रम और बुनियादी ढांचे में सरकारी निवेश के चलते ऊंचाइयां छूता चला गया। शायद ट्रंप को यही चीनी सफलता चुभ रही हो? दुनिया की निगाहें ट्रंप के टैरिफ युद्ध खासकर चीन की मैन्युफैक्चरिंग इंडस्ट्री पर है कि उसे कितना नुकसान पहुंच सकता है। दूसरी ओर ट्रंप इस बार अपने व्यापारी मित्रों, सहयोगियों और सलाहकारों से ज्यादा घिरे दिखते हैं। टैरिफ उनके इकोनॉमिक प्लान्स का हिस्सा है। इससे अमेरिकी मैन्युफैक्चरिंग और रोजगार बढ़ेंगे। गौरतलब है कि उनके खास मित्र एलेन मस्क भारत में संभावनाओं को खोज ही रहे थे कि ट्रंप की सत्ता वापसी हुई। माना कि मस्क की टेस्ला कार की कीमत एक करोड़ होगी उस पर भारत में उतना ही टैरिफ लगेगा जिससे यहां कीमत दो करोड़ हो जाएगी। यदि दबाव के चलते कहीं शून्य टैरिफ वाली स्थिति बनी तो वही कार एक करोड़ में भारत में मिलेगी। इससे भारतीय कार बाजार को जबरदस्त चुनौती तय है। यकीनन बात बहुत बिगड़ चुकी है। भारत समझता है कि ट्रंप जब कनाडा, यूरोपीय देशों और चीन को भी नहीं बख्श रहे तो भारतीय हितों व सम्मान की रक्षा खुद करनी होगी। वहीं ट्रंप ने अमेरिकी कांग्रेस के पहले संयुक्त सत्र को संबोधित करते हुए ऐतिहासिक भाषण दिया। इसमें भारत का नाम फिर उन देशों के साथ लिया जिन्होंने अपनी ऊंची शुल्क दर से नरम अमेरिकी नीति का फायदा उठाया। अमेरिका आगामी दो अप्रैल से इन देशों पर 'जैसे को तैसा' या 'आंख के बदले आंख' की तर्ज पर रेसिप्रोकल टैरिफ लगाएगा। जो देश जितना टैरिफ अमेरिकी कंपनियों पर लगाएगा, अमेरिका भी उतना ही अपने यहां लगाएगा। इससे भारतीय एक्सपोर्ट महंगा होगा। खाद्य पदार्थ, टेक्सटाइल्स, कपड़े, इलेक्ट्रिकल मशीनरी, जेम्स एंड ज्वेलरी, फार्मास्यूटिकल्स और ऑटोमोबाइल सामग्रियां अमेरिकी बाजार में महंगी होंगी। नतीजन भारतीय उत्पाद वहां अभी जैसे नहीं टिक पाएंगे। 1951 में अमेरिकी संविधान में 22वें संशोधन के बाद कोई भी व्यक्ति दो बार राष्ट्रपति रह सकता है। ट्रंप आखिरी टर्म में वो कर गुजरना चाहते हैं जो इतिहास बने। वहीं उनके व्यापारी मित्र अपने व्यापारिक हितों में लिपटे दिखते हैं। ट्रंप की मंशा को समझना आसान भी नहीं क्योंकि वो यह नहीं जानते कि अगले पल क्या कर गुजरेंगे? जिद्दी ट्रंप किसी मौजूदा अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था को नहीं मानते।

न यही बताते कि पुराने अमेरिकी प्रशासनों ने ऐसे देशों को क्यों ऊंची दर से शुल्क लगाने दिया। वो अड़े भी हैं। हाल ही में व्हाइट हाउस में ट्रंप और यूक्रेनी राष्ट्रपति जेलेंस्की के बीच प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान कैमरों पर जो अप्रिय विवाद दिखा उसकी चहुंओर निंदा हुई। शांति की कीमत के बदले ट्रंप की यूक्रेनी खनिज भंडारों पर कब्जे की मांग यकीनन निंदनीय है। ट्रंप की नीयत ही बदनीयत लगती है। कहीं वो दुनिया को नए ट्रेड वार में धकेल उससे भी कमाने का रास्ता तो नहीं खोज रहे?

मेवा और सेवा

डॉ टी महादेव राव

आदमी से अधिक महत्वपूर्ण होता है उसका अहम। कहीं कहीं पहचान भी अधिक असर करती है। भाव देना जैसे वाक्यांश को देखें अगर, अपनी पार्टी में किसी को भाव नहीं दिया जा रहा है, उसके महत्व को पहचाना नहीं रहे हैं, तो सहज है उसके अहम को चोट लगेगी। अहम को मैं स्वाभिमान से अलग मानता हूं। स्वाभिमान से दो कदम आगे अहम या अहंकार होता है, जो वाई फ़ाई की तरह चारों ओर फैला होता है। कुछ पा लेने की लालच, कहीं कुर्सी हथियाने की दुराशा, पुरानी पार्टी से निराशा, नई पार्टी में स्वयं की पहचान के लिए, हटता कुहासा - सारा कुछ पार्टी बदलने या कहें कूद फांद करने को विवश करते हैं। नेता अपनी गणना या हिसाब करके उसके अनुसार एक पार्टी त्याग कर दूसरी पार्टी में जा रहे हैं। मन लगा तो रह गए वहां। अगर नहीं तो फिर लौट के घर आ रहे हैं बुद्धू की तरह। अब देखिए जहां जिसकी उम्मीद होती है . वहां वह नहीं होता तो खीज कर खंभा नोचने वाले नेताओं की कमी नहीं है, लेकिन इतने बुजुर्ग या कुछ युवा भी इस बात को क्यों नहीं मानते कि "कभी किसी को मुकम्मल जहां नहीं मिलता"। अगर ऐसी मुकम्मल पहचान मिल गई तो क्या बात है? पौ बारह। पांचों उंगलियां घी में और सर कड़ाही में। यह अलग बात है कि ऐसे मौके कहां मिलते हैं? अगर पांचों उंगलियां घी में हैं तो सिर कहीं गिरवी रखा होता है। कुर्सी, पद, सत्ता, पहचान, महत्ता और शॉर्टकट में सब कुछ पा जाने की महत्वाकांक्षा आदमी को अलग करती है और यही कारण है कि दल बदल हो रहे हैं आजकल कुछ अधिक संख्या में। एक नए नए दल बदले नेता से हमने पूछा "भाई जी आप तो अच्छे खासे थे उस पार्टी में। आपको बढ़िया कर्ताधर्ता बना कर रखा था। आप उस दल रूपी जहाज से कैसे इस जहाज पर कूद पड़े? मतलब पार्टी बदल कर इस दल में आ गए।"सुकरात सा चेहरा बनाकर अपने अंदाज में उन्होंने कहा "वह डूबता जहाज लग रहा है मुझे, मेरे पिता उस दल में थे। मैं भी था, लेकिन मुझे लगा इस डूबते जहाज में मैं सुरक्षित नहीं हूं इसलिए वहां से इस दल में आ गया। मैंने उन्हें खींचा –"कहा तो यह जाता है कि जब जहाज डूबने लगता है तो सबसे पहले चूहे उस जहाज को छोड़कर भाग खड़े होते हैं। तो हम क्या आपको गणेश जी का वाहन मूषक मानें?" "न। न हम मूषक हैं और न कूद फांद वाले मंडूक हैं। हम तो शेर हैं" कॉलर उठाते हुए कहा उन्होंने।"हां जू वाला शेर कभी इस चिड़ियाघर में तो कभी उस चिड़ियाघर में हैं न?""आपको तो कुछ समझता ही नहीं है। आप राजनीति क्या जानें? कैसे-कैसे पापड़ बेलने पड़ते हैं, कैसे-कैसे तिकड़म लगाना होता है। कैसे-कैसे चक्कर करने होते हैं। सारा दिमाग का खेल है राजनीति आसान नहीं है।" "लोग कहते हैं कि राजनीति में हम इसलिए आए हैं कि जनता की और समाज की सेवा करें, लेकिन आपकी बातों में कहीं भी जनता का या जनकल्याण का जिक्र ही नहीं है। जब तक पद नहीं पाएंगे, कल्याण नहीं करेंगे ऐसा क्या? राजनीति में पापड़ बेलना, दिमाग लगाना मुझे तो दिखता नहीं और तो और जो चीज नहीं है, उसे कैसे लगाएंगे?" "महाशय आप नहीं समझोगे। कागज काले करना, किसी की टांग खींचना आसान है। हम जनता की भलाई के लिए ही तो दल बदल रहे हैं।"

बिहार में खाकी पर वार निशाने पर सरकार

कुमार कृष्णन

कुछ दिनों में बिहार के अलग-अलग जिलों में पुलिस टीम पर लगातार हमले हो रहे हैं. पहले अररिया और उसके बाद मुंगेर में भी छापेमारी के लिए गई टीम पर ग्रामीणों ने हमला किया था। इस हमले में पहले अररिया और बाद में मुंगेर में पुलिस सहायक अवर निरीक्षक की मौत हो गई थी। मुंगेर में एक विवाद को सुलझाने गए सहायक अवर निरीक्षक संतोष सिंह को गांव वालों ने धारदार हथियार से हमला कर मार डाला। उसके दूसरे ही दिन मुंगेर के हवेली खड़गपुर थाना क्षेत्र के फसियाबाद में डायल 112 के पुलिस जवानों पर फिर हमला हुआ। इस हमले में एक सिपाही गंभीर रूप से जख्मी हो गया जबकि अन्य कई पुलिस वाले ग्रामीणों के पथराव से घायल हो गए। तीन दिनों के अंदर तीसरी घटना मुजफ्फरपुर में हुई जहां थाने पर उपद्रवियों ने पथराव किया। भागलपुर के अंतीचक थाने इलाके में भी पुलिस पर हमला हुआ। बालू माफिया से पुलिस की भिड़ंत की खबरें भी आती ही रहती हैं। शराब की सूचना पर पहुंचने वाली पुलिस भी अक्सर पिटती है। पुलिस पर सरेआम यह आरोप लगता है कि भले ही राज्य में शराबबंदी है लेकिन पुलिस की मिलीभगत से हर जगह शराब उपलब्ध है। मुख्य मंत्री हर जगह कहते हैं कि बिहार में कानून का राज है, लेकिन यह जुमला ही साबित हो रहा है। बिहार की कानून व्यवस्था को लेकर कर विपक्ष लगातार सरकार पर हमलावर है। राष्ट्रीय जनता दल के नेतृत्व वाले महागठबंधन के नेता और पूर्व उप मुख्य मंत्री तेजस्वी यादव तो पिछले कई महीनों से लगातार क्राइम बुलेटिन जारी करते रहे हैं। आम आदमी को निशाना बनाने में अपराधी अब तनिक भी संकोच नहीं करते। जनता के रक्षक भी असुरक्षित हैं। यह तीन दिनों में उन पर हमले की तीन घटनाओं से समझा जा सकता है। तेजस्वी यादव अगर इसके लिए नीतीश कुमार को जिम्मेवार ठहराते हैं तो इसमें बचाव की भी कोई गुंजाइश नहीं बचती। व्यावसायिक प्रतिष्ठानों में लूट की घटनाएं भी धड़ल्ले से हो रही हैं। भोजपुर में तनिष्क शो रूम से लूट ने सबको चौंका दिया है। इस वातावरण एवं अव्यवस्था का मूल का इंसान का नैतिक पतन, भ्रष्टाचार, एवं ऐश- मौज , भोग-विलास की प्रवृति है ! जो लोग ब्रिटिश शासन काल एवं कांग्रेस 1990 के शासन काल की बात करते हैं, वे भूल जाते हैं कि मंडल आंदोलन के पहले समाज के कुछ ही जाति के व्यक्तियों को सम्मान के साथ जीने का अधिकार था। श्री बाबू से लेकर, केबी सहाय से जगन्नाथ मिश्र के शासनकाल में दलित पिछड़ों की सवर्णों एवं पुलिस के सामने क्या हैसियत थी, किसी से छिपी नहीं थी। आज जो कुछ भी हो रहा है, वह समाज एवं देश के लिए शुभ नहीं है किन्तु पुलिस प्रशासन, सामान्य, प्रशासन, राजनीतिक प्रशासन यहाँ तक की मीडिया, न्यायपालिका जितना भ्रष्ट एवं बेईमान एवं निर्लज्ज हो चुके हैं, उसी का परिणाम है अपराधियों का मनोबल इतना बढ़ चुका है !

सच्चाई है कि पुलिस द्वारा अपराधियों एवं भ्रष्टाचारियों को ही संरक्षण दिया जाता है तथा उसी संरक्षण के कारण उसका मनोबल बढ़ा हुआ है! आज के दिन कुछ अपवादों को छोड़ शायद ही कोई आइएएस, मंत्री या कोई महत्वपूर्ण पदाधिकारी , नेता ईमानदार है ! बिहार के पूर्णिया में पुलिस अधीक्षक दयाशंकर को निलंबित किया गया। उस पर आरोप था कि दयाशंकर ने ही भ्रष्टाचार का पांव पसारते हुए कई पुलिसकर्मियों को इसमें लिप्त कर लिया था। दरअसल ऐसी स्थिति हाल के दिनों में ही नहीं उत्पन्न हुई है। सच तो यह है कि 2020 से ही ऐसे हालात बने हुए हैं। शायद ही कोई महीना बीतता हो, जब पुलिस पर हमले की घटना न हो। हत्या, लूट जैसी घटनाएं रोजमर्रा की बात हो गई हैं। यह सब उसी बिहार में हो रहा है, जहां 2005 से ही नीतीश कुमार के नेतृत्व में सरकार चलती रही है। क्राइम कंट्रोल के नीतीश कुमार के तरीके को देख कर बिहार की जनता ने 2010 आते-आते उन्हें सुशासन कुमार और सुशासन बाबू कहना शुरू किया था। बिहार के सुशासन की सर्वत्र चर्चा होने लगी थी। नीतीश कुमार ने 2013 में एनडीए छोड़ दिया। तब से ही कमोबेश यही स्थिति बनी हुई है। पहले नीतीश कुमार की हनक थी। उनका आदेश पुलिस और दूसरे महकमों के अफसरों के लिए ब्रह्म वाक्य होता था। बड़े-बड़े अपराधी जेलों में ठूंस दिए गए थे। बचे अपराधियों ने बिहार छोड़ना ही मुनासिब समझा। उनका ठिकाना दूसरे राज्य बन गए। तब नीतीश की सख्ती ऐसी थी कि उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दे रखा था कि किसी अपराधी की पैरवी अगर कोई जनप्रतिनिधि भी करने आए तो उनकी नहीं सुनना है। अफसरों ने भी सख्ती और ईमानदारी दिखाई। बिहार में क्राइम कंट्रोल हो गया और नीतीश की सख्ती की सर्वत्र सराहना होने लगी। नीतीश अगर बार-बार कहते हैं कि 2005 के पहले शाम के बाद कोई घर से निकलता था तो इसकी वजह कि उनकी सख्ती से बाद के दिनों में अपराधियों के होश फाख्ता हो गए थे।

शीतला सप्तमी और अष्टमी पर ठंडा खाना खाने की परंपरा

देवी शीतला धारण करती हैं झाड़ू और पहनती है नीम के पत्तों की माला, जानिए इस व्रत से जुड़ी खास बातें

21 मार्च और 22 मार्च को चैत्र मास के कृष्ण पक्ष की सप्तमी और अष्टमी है। इन तिथियों पर शीतला माता की विशेष पूजा और व्रत करने की परंपरा है। कुछ क्षेत्रों में सप्तमी और कुछ क्षेत्रों में अष्टमी तिथि पर महिलाएं ये व्रत करती हैं। इस व्रत में भक्त देवी मां को ठंडा खाना भोग में चढ़ाते हैं और खुद भी ठंडा खाना ही खाते हैं।

शीतला माता का व्रत

स्वास्थ्य और परंपरा का संगम

चैत्र मास के कृष्ण पक्ष की सप्तमी और अष्टमी को शीतला माता की पूजा और व्रत का विधान है। इस व्रत को विशेष रूप से महिलाएं करती हैं और माता को ठंडा भोजन अर्पित करती हैं। मान्यता है कि यह व्रत करने से मौसमी बीमारियों से बचाव होता है। आइए, विस्तार से समझते हैं कि शीतला माता का स्वरूप कैसा है और इस व्रत की परंपराओं का क्या महत्व है।

शीतला माता का स्वरूप

शीतला माता का स्वरूप अन्य देवियों से अलग है। माता गधे की सवारी करती हैं और उनके हाथों में कलश, झाड़ू, सूप और नीम के पत्तों की माला होती है। इन वस्तुओं का विशेष महत्व हैः

कलश – शुद्धता और जीवन का प्रतीक है।

झाड़ू – सफाई का प्रतीक, जिससे रोगों का नाश होता है।

सूप – यह अनाज को छानने के लिए प्रयोग होता है, जो स्वच्छता का संदेश देता है।

नीम के पत्तों की माला – नीम के औषधीय गुणों के कारण इसे स्वास्थ्यवर्धक माना जाता है।

व्रत और पूजा की परंपरा

शीतला माता का व्रत विशेष रूप से सप्तमी और अष्टमी तिथि को किया जाता है। कुछ क्षेत्रों में सप्तमी को और कुछ में अष्टमी को यह व्रत रखा जाता है। इस दिन विशेष रूप से माता को ठंडा भोजन अर्पित किया जाता है। व्रत करने वाले भक्त भी ठंडा भोजन ग्रहण करते हैं।

व्रत के नियम

इस दिन व्रतधारी महिलाएं एक दिन पहले बनाया गया भोजन ग्रहण करती हैं।

माता को खीर, चावल, मीठी रोटी और अन्य ठंडे व्यंजन अर्पित किए जाते हैं।

नीम की पत्तियों का उपयोग घर की सफाई और स्वास्थ्य रक्षा के लिए किया जाता है।

परिवार की सुख-समृद्धि और बच्चों के स्वास्थ्य के लिए महिलाएं यह व्रत करती हैं।

ठंडा भोजन अर्पित करने का कारण

ऋतुओं के संधिकाल में, जब सर्दी समाप्त होती है और गर्मी शुरू होती है, तब मौसम में बदलाव के कारण कई प्रकार की बीमारियां फैलती हैं। इस समय खान-पान में विशेष सावधानी बरतनी आवश्यक होती है। ठंडा और बासी भोजन खाने से शरीर को गर्मी से राहत मिलती है और मौसमी रोगों से बचाव होता है।

शीतला माता से जुड़ी पौराणिक कथा

कहा जाता है कि प्राचीन समय में एक गांव के लोगों ने शीतला माता को गरम भोजन अर्पित कर दिया, जिससे माता का मुख जल गया और वे क्रोधित हो गईं। उनके क्रोध के कारण गांव में आग लग गई, लेकिन एक बूढ़ी महिला का घर इस आग से बच गया। जब लोगों ने इसका कारण पूछा, तो बूढ़ी महिला ने बताया कि उसने माता को ठंडा भोजन अर्पित किया था। तभी से माता को ठंडा भोजन अर्पित करने की परंपरा शुरू हुई।

स्वास्थ्य और वैज्ञानिक दृष्टिकोण

शीतला माता की पूजा और व्रत को केवल धार्मिक ही नहीं, बल्कि स्वास्थ्य की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण माना जाता है।

स्वच्छता का महत्व – झाड़ू और सूप जैसी वस्तुएं सफाई का संदेश देती हैं, जो संक्रमण और बीमारियों से बचाव में सहायक हैं।

नीम के औषधीय गुण – नीम त्वचा रोगों और संक्रमण को दूर करने में सहायक होता है।

ठंडे भोजन का महत्व – मौसम परिवर्तन के समय हल्का और बासी भोजन खाने से पाचन संबंधी समस्याएं कम होती हैं।

संक्रमण से बचाव – बदलते मौसम में वायरल संक्रमण, सर्दी-जुकाम, आंखों की समस्याएं और फोड़े-फुंसी जैसी समस्याओं का खतरा रहता है। इस व्रत को करने से इन रोगों से बचाव होता है।

घर के बाहर लगा दें ये 2 नीले-हरे पौधे, कभी भी नहीं देखना पड़ेगा हार का मुंह, रहेंगे अपराजित!

आप कोई काम करते हैं और उसमें सफलता के लिए बहुत संघर्ष करना पड़ता है या फिर हार का मुंह देखना पड़ता है तो आपको अपने आसपास में कुछ बदलाव करना चाहिए। आपको बस यह करना है कि आप अपने घर के बाहर दो पौधे लगा दें। ये पौधे आपकी सफलता में सहायक होंगे। आप मुश्किलों के दौर में भी अपराजित रहेंगे। आपको कार्यों में सफलता प्राप्त होगी और अपने विरोधियों के खिलाफ विजयी रहेंगे। डॉ। योगभूषण जी महाराज से जानते हैं कि जीवन में सफलता और उन्नति प्राप्त करने का उपाय क्या है?

1. अपराजिता का पौधा रखेगा आपको अपराजित

डॉ. योगभूषण जी महाराज के अनुसार, दो ऐसे पौधे हैं, जो आपको कभी भी हार का मुंह नहीं देखने देंगे। यदि आप अपने घर के बाहर ये दो पौधे लगाते हैं तो आपके जीवन में ऐसी एनर्जी पैदा होगी, जो अपराजिता होगी। अपराजिता का मतलब यह है कि आप कभी भी पराजित नहीं होंगे।

ये देव वृक्ष अपराजिता है, जो स्वर्ग से धरती पर आया था। अपराजिता के पौधे में नीले रंग के फूल लगते हैं और यह बेल के रूप में फैलता है। आपको अपने घर के मुख्य द्वार के बाहर अपराजिता का पौधा लगाना है। इस देव पौधे से निकलने वाली एनर्जी आपके घर के अंदर की सभी नकारात्मकता को दूर कर देती है और वहां पर पॉजिटिव एनर्जी को पैदा करती है।

ज्योतिषशास्त्र के अनुसार, जिस भी व्यक्ति के मुख्य द्वार पर अपराजिता का पौधा होता है और वे घर से बाहर निकलते समय या बाहर से घर में आते समय अपराजिता के पौधे को स्पर्श करता है तो उस व्यक्ति के जीवन से नकारात्मकता दूर होती है। वह व्यक्ति अपने जीवन के हर क्षेत्र में सफलता प्राप्त करता है। उस व्यक्ति का जीवन अपराजिता बन जाता है।

2. घृत कुमारी के पौधे से मिलेगी उन्नति

योगभूषण जी महाराज आगे बताते हैं कि अपराजिता के बाद दूसरा पौधा है घृत कुमारी यानि कि ग्वारपाटा। इसे आप एलोवेरा के नाम से भी जानते हैं। यह हरे रंग का मांसल पौधा होता है। यह अपने आस पास ऑक्सीजन को बढ़ाता है। इसके अलावा यह पौधा भी आपके घर की निगेटिव एनर्जी को खत्म करता है और यह आपके शरीर का कायाकल्प भी करता है। इन दो पौधों की मदद से आपके लिए उन्नति की राह आसान हो सकती है। इन दोनों पौधों से निकलने वाली पॉजिटिव एनर्जी आपको कभी हारने नहीं देगी। आपको कार्यों में सफलता प्राप्त होगी।

हम ईश्वर के अंश हैं, ज्ञान से जान सकते हैं अपनी सत्यता

आज जूनापीठाधीश्वर आचार्य महामंडलेश्वर **स्वामी अवधेशानंद जी गिरि** के जीवन सूत्र में जानिए सत्संग से क्या लाभ मिलते हैं? हमारा व्यक्तित्व ही हमारा परिचय है। हमारी वाणी, व्यवहार, प्रतिक्रियाएं, टिप्पणियां, विचार, संवाद शैली, जीवन जीने का ढंग, ये सब हमारे व्यक्तित्व का परिचय देते हैं। हममें एक दिव्य विराट सत्ता छिपी हुई है। हम ईश्वर के अंश हैं। ज्ञान से ये जाना जा सकता है। ज्ञान के द्वारा अपनी सत्यता और अनंतता को महसूस किया जा सकता है। वेद यही कहते हैं- अहं ब्रह्मास्मि। अपनी उस विराटता से जैसे ही आप परिचित होंगे, तब आप पाएंगे कि आप में कोई कमी नहीं है।

गुरुग्राम में शीतला माता का वो मंदिर जहां धागा बांधते ही पूरी होती है इच्छा, रोग भी दूर

शीतला अष्टमी के मौके पर आप भी शीतला माता मंदिर दर्शन के लिए जाना चाहते हैं, तो गुरुग्राम का शीतला मंदिर काफी प्राचीन है, यहां की मान्यता महाभारत काल से जुड़ी हुई है। बता दें, एक धागा बांधने से यहां भक्तों की हर इच्छा पूरी होती है।

होली के सातवे दिन बाद शीतला सप्तमी का त्योहार मनाया जाता है, हर साल ये फेस्टिवल चैत्र मास के कृष्ण पक्ष की सप्तमी तिथि के दिन आता है। कहीं ये पर्व आठवे दिन भी सेलिब्रेट होता है, जिसे इस दिन को शीतला अष्टमी के नाम से भी फेमस है। इस साल ये पर्व 2 अप्रैल को मनाया जाएगा। शीतला सप्तमी को बसौड़ा भी कहते हैं। ये पर्व मौसम में आए बदलाव के रूप में भी फेमस है।

वैसे तो शीतला माता के आपने कई मंदिर देखे होंगे, लेकिन गुरुग्राम का शीतला माता मंदिर यहां की अलग पहचान बनाए हुए है। बता दें, ये मंदिर लोगों के बीच काफी खास भी है, क्योंकि मंदिर का संबंध महाभारत से जुड़ा है। चलिए आज हम आपको इस मंदिर के बारे में बताते हैं।

चुन्नी बांधकर मन्नत मांगते हैं भक्त

शीतला माता को ब्राह्मण, वैश्य, क्षत्रिय, जाट और गुर्जर जैसे कई समाजों में कुलदेवी के रूप में पूजा जाता है। गुरुग्राम के शीतला माता मंदिर में ना केवल स्थानीय लोग आते हैं, बल्कि दूसरे शहरों से लोग यहां अक्सर शादी करते हैं या फिर बच्चों का मुंडन करवाते हैं। इस मंदिर के मेन गेट पर आपको बरगद का भी पेड़ दिखाई देगा। माना जाता है कि श्रद्धालु अपनी इच्छा को पूरा करवाने के लिए पेड़ से चुन्नी या मौली बांधते हैं और शीतला माता को जल चढ़ाकर मन्नत मांगते हैं। महिलाएं संतान प्राप्ति के लिए माता की पूजा करते हैं।

महाभारत काल से है मंदिर का कनेक्शन

शीतला माता मंदिर का कनेक्शन महाभारत काल से है, माना जाता है इसी स्थान पर द्रोणाचार्य ने कौरवों और पांडवों को प्रशिक्षित किया था। स्कन्द पुराण में भी इस मंदिर से जुड़ी कई बातें बताई गई हैं। मान्यता के मुताबिक ब्रह्मा जी ने शीतला माता को दुनिया को आरोग्य रखने का कार्य दिया था।

हर कष्ट को दूर करती हैं माता

गुरुग्राम के शीतला माता मंदिर में हर साल करीबन 15 लाख से भी ज्यादा भक्त आते हैं। इस मंदिर में लाल रंग का दुपट्टा चढ़ाया जाता है और उसके साथ मुरमुरा प्रसाद के रूप में दिया और चढ़ाया जाता है। मान्यता है कि देवी हर रोग और कष्ट को दूर करती हैं। हजारों की संख्या में भक्त यहां माता के दर्शन करने के लिए पहुंचते हैं। बच्चों को अगर किसी भी तरह की नकारात्मक ऊर्जा से बचाना है तो एक बार उन्हें यहां जरूर लाए, यही नहीं माता-पिता उनका मुंडन भी कराने आते हैं।

दिल्ली में हुआ करता था ये मंदिर

गुड़गांव के शीतला माता मंदिर का इतिहास 500 साल पुराना है, माता का ये मंदिर पहले दिल्ली केशोपुर में हुआ करता था। लेकिन 1910 के रिकॉर्ड के अनुसार, करीबन ढाई सौ से तीन सौ साल पहले शीतला माता ने गुरुग्राम के सिंघा जाट नाम के एक व्यक्ति को सपने में दर्शन देकर गुरुग्राम में मंदिर बनाने को कहा। इसके बाद ये मंदिर यहां बनाया गया।

गुरुग्राम के शीतला माता मंदिर कैसे पहुंचे

शीतला माता मंदिर जाने का सबसे बढ़िया तरीका है मेट्रो, पास का मेट्रो स्टेशन एम.जी. रोड मेट्रो स्टेशन और इफको चौक मेट्रो स्टेशन है। यह दोनों मेट्रो स्टेशन येलो लाइन पर स्थित हैं। इफको चौक मेट्रो स्टेशन से मंदिर की दूरी 7 किलोमीटर है। और एम.जी. रोड मेट्रो स्टेशन से शीतला माता मंदिर की दूरी 6 किलोमीटर है।

शीतला माता का ये मंदिर राजस्थान की है शान

आरोग्य और सुख का मिलता है वरदान

राजस्थान की राजधानी जयपुर के दक्षिण दिशा में करीब 70 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है शीतला माता का मंदिर। चाकसू कस्बे में स्थित माता का ये मंदिर एक पहाड़ी पर दूर से ही नजर आ जाता है। यहां सालभर भक्त दर्शन के आते है लेकिन, चैत्र माह में शीतला अष्टमी यानि बास्योड़ा के मौके पर यहां दो दिवसीय लक्खी मेला भरता है। इस स्थान को शील की डूंगरी के नाम से भी जाना जाता है।

जयपुर के अलावा यहां से भी आते है श्रद्धालु

शील की डूंगरी में शीतला माता का मेला दो दिन तक चलता है। इस दौरान यहां भक्तों का आना शीतला अष्टमी के एक दिन पहले से ही शुरू हो जाता है। जयपुर के अलावा यहां निवाई, टोंक, देवली आदि आसपास के इलाकों से भी बड़ी संख्या में लोग नाचते-गाते पहुंचते है। मेले यहां कई पैदल यात्राएं भी आती है। करीब तीन सौ मीटर की चढ़ाई चढने के बाद जैसे ही माता के दर्शन होते है भक्तों को काफी आनंद की अनुभूति होती है। मंदिर तक जाने के लिए सीढ़ियों का रास्ता है।

बासी भोजन का लगता है भोग

माता के दरबार में ठंडे पकवानों का भोग लगाया जाता है। आमतौर पर लोग पुएं, पकौड़ी, राबड़ी आदि घर से बनाकर लाते है और यहां माता को भोग लगाकर के बाद ही उसे खाते है। आरोग्य और सुख की कामना से दूर-दूर से आए भक्त ने माता के समक्ष धान का भी दान करते है।

बच्चों को लगवाई जाती है ढोक

बच्चों में माता निकलने यानि चेचक की बीमारी के बाद यहां माता के मंदिर में बच्चों को ढोक लगवाने की परंपरा सदियों से चली आ रही है।

500 साल पुराना है मंदिर

शील की डूंगरी पर स्थित शीला माता का ये मंदिर 500 वर्ष पुराना बताया जाता है। यहां मंदिर से जुड़ी कई कथाएं प्रचलित है। जिनमें माता के गुणगान का उल्लेख मिलता है।

पूजा जाता है मंदिर की पहाड़ी का पत्थर भी

शील की डूंगरी पर बने माता के मंदिर की पहाड़ी भी अनोखी है। इस पहाड़ी का पत्थर माता की मूर्ति के रूप में पूजा है। इसलिए लोग यहां से पत्थर भी अपने घर पर लेकर जाते हैं। इस पत्थर की बनावट को माता के रूप में जाना व पूजा जाता है।

पाली के मां शीतला मंदिर में रखा है चमत्कारी घड़ा

कितना भी पानी डालो कभी नहीं भरता

भारत के तमाम हिस्सों में प्राचीन मंदिरों, मठों और धार्मिक स्थलों की एक बड़ी संख्या है। राजस्थान की बात करें तो इस राज्य में ऐतिहासिक इमारतों की इतनी बड़ी संख्या है कि शायद ही किसी दूसरी जगह पर हो। आज हम राजस्थान में मौजूद एक ऐसे मंदिर के बारे में आपको बताएंगे जिसे ना सिर्फ चमत्कारिक माना जाता है बल्कि यहां बड़ी संख्या में श्रद्धालु अपनी मुराद लेकर माता के दरबार में हाजिरी लगाते हैं। बात कर रहे हैं राजस्थान में जयपुर के पास पाली में मौजूद मां शीतला देवी के मंदिर करीब 8 सदी पुराने इस मंदिर को लेकर भक्तों में बहुत ज्यादा मान्यता है। यहां एक भूमिगत घड़े पर रखा पत्थर साल में सिर्फ दो बार निकाला जाता है। इन्हीं दोनों मौकों पर मंदिर में बड़े मेले का भी आयोजन होता है। कहा जाता है कि ये घड़ा चमत्कारिक है और इसमें कितना भी पानी डालो ये घड़ा नहीं भरता लेकिन जैसे ही इसमें दूध डाला जाता है तो ये भर जाता है। इस चमत्कारिक घड़े को हमेशा ढककर रखा जाता है।

कहानियों की मानें तो इस घड़े में जब भी पानी भरा जाता है तो ये सारा पानी एक असुर पी जाता है। इसलिए इस घड़े को कभी भरा ही नहीं जा सका। माता के मंदिर में ये घड़ा सदियों से रखा हुआ है और कई बार कोशिश के बावजूद कभी भी इसे पानी से नहीं भरा जा सका है।हालांकि शीतला सप्तमी के मौके पर जब इस घड़े के ऊपर रखा पत्थर हटाया जाता है तो इसमें कलशों से भरकर पानी डाला जाता है लेकिन ये नहीं भरता। लेकिन जैसे ही माता के चरणों से लगाकर इस घड़े में दूध का भोग लगाया जाता है तो ये घड़ा पूरा भर जाता है। कई रिसर्च के बावजूद इस घड़े का रहस्य नहीं जाना जा सका है।

कहानियां हैं कि आठ सदी पहले इस इलाके में बाबरा नाम के एक असुर का आतंक था। वो हर शादी में दूल्हे की हत्या कर देता था। गांववालों ने मां शीतला से राक्षस से मुक्ति दिलाने की गुहार लगाई तो मां ने एक ब्राह्मण के स्वप्न में आकर कहा कि असुर का वध किसी बेटी के विवाह के दिन ही होगा। इसके बाद एक शादी में असुर फिर आया तो वहां मां ने असुर को अपने घुटने के नीचे दबोच लिया। मां की शक्ति के आगे हारकर असुर ने उसे पाताल में भेजने की गुहार लगाई। जिसके बाद असुर ने प्यासा होने की बात कही और पानी मांगा जिसके बाद से ही घड़े में जल डालने की परंपरा की शुरुआत हुई।

प्रकाश राज और राणा दग्गुबाती समेत 25 हस्तियों के खिलाफ एफआईआर दर्ज

सट्टाबाजी ऐप्स को प्रमोट करने का लगा आरोप

अवैध सट्टेबाजी ऐप्स को कथित तौर पर बढ़ावा देने के लिए तेलंगाना पुलिस ने 25 सिलेब्रिटीज और इनफ्लुएंसर्स के खिलाफ केस दर्ज किया है। इनमें राणा दग्गुबाती, विजय देवरकोंडा, प्रकाश राज, मंचू लक्ष्मी और निधि अग्रवाल जैसे एक्टर्स का भी नाम शामिल है। इन पर कथित तौर पर सट्टाबाजी ऐप के प्रचार का आरोप लगाया गया है।

एएनआई की रिपोर्ट के अनुसार, साइबराबाद में मियापुर पुलिस ने 32 वर्षीय बिजनेसमैन फणींद्र सरमा की शिकायत के बाद केस दर्ज किया। उन्होंने इन हस्तियों पर सट्टा ऐप्स को बढ़ावा देने और जनता को गुमराह करने का आरोप लगाया था। जिन 25 हस्तियों के खिलाफ केस दर्ज किया गया है, उनमें 6 साउथ सिनेमा के बड़े स्टार्स हैं।

11 फिल्मी हस्तियों और इनफ्लुएंसर्स के खिलाफ इन धाराओं में दर्ज किए थे केस

मालूम हो कि तेलंगाना पुलिस सट्टेबाजी ऐप्स के प्रचार में शामिल मशहूर हस्तियों को सक्रिय रूप से निशाना बना रही है।

कुछ दिन पहले ही पंजागुट्टा पुलिस ने कथित तौर पर सट्टेबाजी एप को बढ़ावा देने के आरोप में किरण गौड़, विष्णु प्रिया, श्यामला, इमरान खान, रितु चौधरी, हर्ष साई, टेस्टी तेजा और बंडारू शेषयानी सुप्रिता सहित 11 फिल्मी हस्तियों और सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर्स के खिलाफ केस दर्ज किए थे। इनके खिलाफ धारा 318 (4) बीएनएस, 3, 3 (ए), 4 टीएसजीए और 66 डी आईटीए एक्ट-2008 के तहत केस दर्ज किया गया था। बढ़ती जांच के बीच, सुरेखा वाणी, सुप्रिता, रितु चौधरी और गेटअप श्रीनू सहित कई तेलुगु टीवी हस्तियों ने सार्वजनिक रूप से माफी मांगी है, और सट्टेबाजी प्लेटफॉर्म को बढ़ावा देने में अपनी पिछली भागीदारी को स्वीकार किया है।

उन्होंने दावा किया कि वो उस समय नकारात्मक परिणामों से अनजान थे। तेलंगाना आरटीसी के एमडी सज्जनार के नेतृत्व में चलाए अभियान में इन मशहूर हस्तियों से जागरूकता बढ़ाने का आग्रह किया गया था।

हालांकि, सट्टेबाजी ऐप को प्रमोट करने से लेकर फिर माफी मांगने तक इनमें जो अचानक परिवर्तन आया, उसके कारण काफी किरकिरी भी हुई।

रेखा को लेकर राकेश रोशन को मिली थी चेतावनी

बोले- वो सिर्फ उन लोगों को परेशान करती थीं, जो पैसे नहीं देते थे

रेखा ने 70 के दशक में एक्टिंग करियर की शुरुआत की थी, और वक्त के साथ वह बड़ी स्टार बन गईं। उनकी पॉपुलैरिटी का ग्राफ बढ़ता गया। लोग न सिर्फ रेखा की खूबसूरती, बल्कि उनकी नजाकत, अदाओं और डांस के दीवाने हो गए। हालांकि, बढ़ते स्टारडम के साथ कुछ लोग रेखा को नीचे भी खींचने लगे, और उनके बारे में अनाप-शनाप बातें फैलाना शुरू कर दिया। कुछ ने कहा कि रेखा बहुत अनप्रोफेशनल हैं, सेट पर लेट आती हैं, तो कुछ उनमें एटिट्यूड प्रॉब्लम बताई। लेकिन एक्टर और डायरेक्टर राकेश रोशन का कुछ और ही मानना है। राकेश रोशन ने रेखा के साथ कई फिल्में कीं, और उन्हें 'खून भरी मांग' में डायरेक्ट भी किया था।

राकेश रोशन ने बताया कि कई लोगों ने उन्हें 'खून भरी मांग' में रेखा को कास्ट करने से मना किया था। उन्होंने रेखा को लेकर डायरेक्टर को आगाह किया था। राकेश रोशन ने इस बारे में 'एएनआई' को दिए इंटरव्यू में बात की।

'मैं 'खून भरी मांग' के लिए रेखा के पास गया तो लोगों ने मुझे चेतावनी दी'

राकेश रोशन ने कहा, 'रेखा में एक ऐसी खूबी है जो बहुत कम हीरोइनों में होती है। वह अपनी सभी फिल्मों में अलग दिखती हैं। मैंने उनके साथ बतौर एक्टर कुछ फिल्में की हैं- 'खूबसूरत', 'आक्रमण' और 'औरत'। जब मैं बतौर डायरेक्टर 'खून भरी मांग' में मां की भूमिका के लिए उनके पास गया तो लोगों ने मुझे उनके खिलाफ चेतावनी दी। उन्होंने कहा कि आप उनके साथ फिल्म बना रहे हैं, वह कभी भी समय पर नहीं आती हैं, हमेशा समय से पहले भाग जाती हैं।'

राकेश रोशन ने बताया कि जब उन्होंने

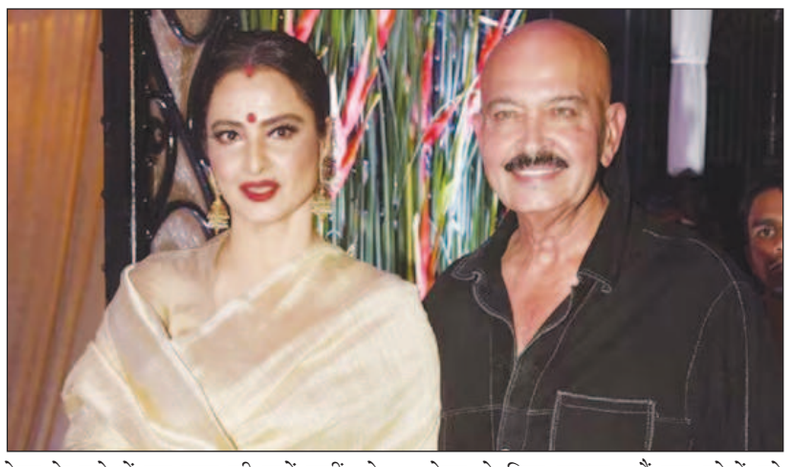

रेखा के बारे में इस तरह की बातें सुनीं, तो उन्होंने खुद ही एक्ट्रेस से इस बारे में बात करने का फैसला किया।

वह बोले, 'मैंने हमेशा उनके बारे में ये अफवाहें सुनी हैं, लेकिन जब भी मैंने उनके साथ काम किया, मुझे ऐसा कुछ भी देखने को नहीं मिला।

जब मैं एक डायरेक्टर के रूप में रेखा के पास गया, तो मैंने उनसे कहा कि सुनो, यह मेरी केवल दूसरी फिल्म है, और यह एक मुश्किल विषय है। यह एक महिला केंद्रित फिल्म है। मैं इस फिल्म के साथ रिस्क उठा रहा हूं।'

महेश आनंद कई साल तक फिल्मों से दूर रहे थे। एक फिल्म के सेट पर स्टंट के दौरान उन्हें गंभीर चोट लगी थी।

इस वजह से वह 6 महीने तक अस्पताल में भर्ती रहे। इसके बाद वह तीन साल तक घर में बिस्तर पर पड़े रहे। एक्टर ने बताया था कि इस कारण उनकी हड्डियां खराब हो गई थीं। वह फिल्मों से दूर हो गए।

रेखा ने दिया जवाब- मैं उन लोगों को परेशान करती हूं, जो पैसे नहीं देते या...'

राकेश रोशन ने आगे कहा, 'कहानी ऐसी थी कि क्लाइमैक्स में पत्नी अपने पति को मार देती है। मैंने उनसे साफ तौर पर पूछा कि तुम मुझे परेशान तो नहीं करोगी ना? वह बोलीं- तुम क्या कह रहे हो?

क्या मैंने कभी ऐसा किया है? मैं केवल उन लोगों को परेशान करती हूं, जो पैसे नहीं देते या अपनी कमिटमेंट को पूरा नहीं करते।'

'कोई मिल गया' की कहानी सुन यह बोली थीं रेखा

फिर कई साल बाद राकेश रोशन फिल्म 'कोई मिल गया' के साथ रेखा के पास गए, और उन्हें कहानी सुनाई। जब उन्होंने रेखा से पूछा कि कहानी कैसी लगी, तो बोलीं, 'तुम मुझे ये कहानी इसलिए नहीं सुना रहे ताकि मेरा फीडबैक ले सको, बल्कि इसलिए सुना रहे हो क्योंकि तुम चाहते हो कि मैं इसमें मां का रोल प्ले करूं।' राकेश रोशन ने कहा कि रेखा बहुत चालाक हैं।

ओरी ने वैष्णो देवी में शराब पी और बच गया

शार्दुल पंडित बोले- सेलिब्रिटी है कुछ नहीं होगा, भारत में ऐसा क्यों

हाल ही में एक वीडियो में एक्टर शार्दुल पंडित ने ओरी से जुड़ी विवादित घटना के बारे में बात की, जिन पर वैष्णो देवी मंदिर के पास शराब पीने के आरोप लगे हैं और 7 लोगों के खिलाफ एफआईआर भी हुई। शार्दुल ने इस मामले पर बात की और चिंता भी जताई। बुधवार को शार्दुल ने अपने इंस्टाग्राम हैंडल पर एक वीडियो पोस्ट किया और लिखा, 'आपको क्या लगता है सॉरी चलता है क्योंकि यह ओरी है। तो यह वीडियो ओरी और उसके दोस्तों के खिलाफ एक मामले में केस होने से संबंधित है। वैष्णो देवी में नॉनवेज और शराब का सेवन करने को लेकर उनके खिलाफ एफआईआर दर्ज की गई है। उन्हें होटल के कर्मचारियों द्वारा इसके बारे में सूचित किया गया था।

वीडियो में पंडित ने कहा, 'मैं यह बहुत सम्मान से पूछ रहा हूं लेकिन सवाल कठोर हो सकता है। अगर आपको ओरी पसंद है, तो हो सकता है कि आपको यह वीडियो पसंद न आए, कृपया इसे न देखें। वैष्णो देवी में ओरी सहित

7 लोगों पर मामला दर्ज किया गया था और शराब पीने के लिए ये एफआईआर दर्ज की गई थी, जो वहां के नियमों के खिलाफ है। होटल के कर्मचारियों ने उन्हें और उनके दोस्तों को नियमों के बारे में बताया था। जब एफआईआर दर्ज की गई, तो ओरी वहां से भाग गया। यह संभव है कि इस वीडियो के बाद ओरी मेरे पॉडकास्ट पर कभी न आए। मैं आपके खिलाफ नहीं हूं, मैं इस कृत्य के खिलाफ हूं।' उन्होंने आगे कहा, 'लोग कहते हैं कि मीडिया ट्रायल पूरी तरह से गलत है, और मैं इससे सहमत हूं। कोई दूसरा व्यक्ति कह सकता है कि यह आदमी एक सेलिब्रिटी है, यही वजह है कि लोग उन्हें फॉलो कर रहे हैं, और यही वजह है कि सरकार ज़रूरत से ज़्यादा प्रतिक्रिया दे रही है। लेकिन क्या सेलिब्रिटी होने से आपको सच में 'हॉल पास' मिल जाता है जहां सब कुछ करने की इजाजत है? मेरा मां क्या कहा करती थीं चाहे आप किसी धर्म को मानते हों या नहीं, अगर कोई और उसका पालन करता है, तो आपको उनकी भावनाओं का सम्मान करना चाहिए।'

शार्दुल ने कहा, 'मेरा सवाल यह है कि लोग अक्सर कहते हैं कि भारत में लोग ज़रूरत से ज़्यादा प्रतिक्रिया देते हैं। लेकिन अगर यही हरकतें किसी दूसरे देश में किसी धार्मिक स्थल पर की जातीं, तो क्या उनके साथ भी ऐसा ही व्यवहार किया जाता? आप इस बारे में क्या सोचते हैं? मैं सच में जानना चाहता हूं।' आपको बता दें कि ओरी के साथ सात लोगों पर जम्मू-कश्मीर पुलिस ने वैष्णो देवी मंदिर के पास कथित तौर पर शराब पीने के आरोप में मामला दर्ज किया है। कथित तौर पर, राज्य पुलिस ने कटरा में प्रतिबंधित क्षेत्र में शराब पीने के लिए इन सबके खिलाफ़ एफ़आईआर दर्ज की है। आरोपियों में एक रूसी नागरिक अनास्तासिला अर्ज़मास्किना भी शामिल है, जो कटरा की यात्रा के दौरान ओरी और उसके साथियों के साथ थी। उन पर जिला मजिस्ट्रेट के आदेशों का उल्लंघन करने और कथित तौर पर धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाने का आरोप है।

सलमान की सिक्योरिटी को लेकर बोले डायरेक्टर

ए. आर. मुरुगदास ने कहा- कड़ी सुरक्षा के बीच एक्टर ने फिल्म शूट की

सलमान खान की अपकमिंग फिल्म सिकंदर इस साल की मच अवेटेड फिल्मों में से है। फिल्म सिकंदर 28 मार्च को सिनेमाघरों में रिलीज होगी। इसी बीच फिल्म के रिलीज होने से पहले डायरेक्टर ए. आर. मुरुगदास ने सेट पर सिक्योरिटी के साथ काम करने के बारे में बात की।

सलमान की सिक्योरिटी को लेकर बोले डायरेक्टर

टाइम्स ऑफ इंडिया के साथ बातचीत में डायरेक्टर में ए. आर. मुरुगदास ने फिल्म के शूटिंग प्रोसेस के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि फिल्म के सेट पर सबसे ज्यादा ध्यान एक्टर की सिक्योरिटी का रखा गया था। शूटिंग के समय हमेशा हाई सिक्योरिटी होती थी।

सलमान खान के साथ काम करने का एक्सपीरियंस शेयर किया

ए. आर. मुरुगदास और सलमान खान ने पहली बार साथ में काम किया है। डायरेक्टर ने सलमान के साथ काम करने के एक्सपीरियंस पर भी बात की। उन्होंने कहा, 'सलमान सर बिल्कुल अलग हैं। हमें अक्सर सेट पर 10,000 से 20,000 लोगों के साथ सीन शूट करने होते थे। इतनी बड़ी भीड़ को मैनेज करने के लिए हाई सिक्योरिटी और कोआर्डिनेशन की जरूरत थी। हमारा शेड्यूल बहुत डिमांडिंग था। धमकियों के डर के कारण हमें काफी चीजों का ध्यान रखना पड़ता था।

'हमारी बायोलॉजिकल साइकिल पूरी तरह खराब हो गई थी।'

डायरेक्टर ने आगे कहा, 'धमकियों के डर की वजह से सिक्योरिटी काफी टाइट कर दी गई थी। सेट पर मौजूद सभी लोगों और कलाकारों की चेकिंग की जाती थी। सभी की चेकिंग में हर रोज 2 से 3 घंटे लगते थे। उनके आने-जाने में ही हमारा पूरा दिन लग जाता था। हम अक्सर शूटिंग देर से शुरू करते थे और सुबह के शुरुआती घंटों में ही खत्म कर देते थे। हमारी बायोलॉजिकल साइकिल पूरी तरह खराब हो गई थी। लेकिन एक बार जब हमने खुद को ढाल लिया तो यह एक रूटीन बन गया और सेट पर बहुत पॉजिटिव एनर्जी थी।'

सलमान खान को काफी टाइम से कई धमकियां मिल रही थी। जिसके कारण उनके आसपास सिक्योरिटी के कड़े इंतजाम किए गए थे। पिछले साल 5 नवंबर को मुंबई पुलिस को लॉरेंस बिश्नोई गैंग से सलमान खान के खिलाफ एक धमकी भरा मैसेज मिला था। उसमें लिखा था कि या तो एक्टर को माफी मांगनी पड़ेगी या फिर जिंदा रहने के लिए 5 करोड़ रुपए देने होंगे।

तमिल और हिंदी कई फिल्म डायरेक्ट कर चुके हैं ए. आर. मुरुगदास

ए. आर. मुरुगदास को गजनी, थुप्पाकी, हॉलिडेः ए सोल्जर इज नेवर ऑफ ड्यूटी और सरकार जैसी तमिल और हिंदी फिल्मों के डायरेक्शन के लिए जाना जाता है। फिल्म सिकंदर में सलमान के अलावा काजल अग्रवाल और रश्मिका मंदाना भी मुख्य भूमिका में नजर आएंगी। फिल्म की कहानी को रिवील नहीं किया गया है। सिकंदर को साजिद नाडियाडवाला ने प्रोड्यूस किया है।

दिशा सालियान सुसाइड केस, पिता की हाईकोर्ट में याचिका

आदित्य ठाकरे पर एफआईआर के साथ सीबीआई जांच की मांग, सुशांत सिंह राजपूत की मैनेजर थीं

अभिनेता सुशांत सिंह राजपूत की पूर्व मैनेजर दिशा सालियान के पिता सतीश सालियान ने दिशा की मौत की नए सिरे से जांच की मांग की है। इसके लिए उन्होंने बुधवार को बॉम्बे हाईकोर्ट में याचिका दायर की।

याचिका में शिवसेना (यूबीटी) नेता आदित्य ठाकरे के खिलाफ एफआईआर दर्ज करने और जांच सीबीआई को सौंपने का आग्रह किया गया है। आरोप लगाया गया है कि दिशा के साथ गैंगरेप के बाद उसकी हत्या की गई थी। याचिका में सूरज पांचोली, डिनो मोर्या और मुंबई पुलिस पर भी गंभीर आरोप लगाए गए हैं।

8 जून, 2020 को मुंबई के मलाड इलाके की 14वीं मंजिल से गिरकर दिशा की मौत हो गई थी। पुलिस ने इसे आत्महत्या बताया था। उस समय दिशा के पिता ने जांच को संतोषजनक माना था।

भाजपा नेता नितेश राणे ने तीन साल पहले दिशा से गैंगरेप के बाद उनकी हत्या का आरोप लगाया था। हालांकि, दिशा में माता-पिता ने बेटी को बदनाम करने की साजिश कहते हुए नितेश पर ही केस दर्ज कराया था।

अब 5 साल बाद दिशा के पिता का कहना है कि उन्हें नजरबंद करके पुलिस के पेश सबूतों को सच मानने के लिए मजबूर किया गया था। दिशा के पिता की याचिका के बाद महाराष्ट्र में राजनीति तेज हो गई है। कैबिनेट मंत्री नितेश राणे ने कहा, 'आदित्य ठाकरे को विधायक पद से इस्तीफा दे देना चाहिए और जांच का सामना करना चाहिए।'

दिशा सालियन केस में उनके पिता के वकील निलेश सी ओझा ने बताया कि सितंबर 2023 में उन्होंने एक जनहित याचिका (पीआईएल) दायर कर एफआईआर दर्ज करने और कार्रवाई की मांग की थी। इसके बाद दिसंबर 2023 में शिंदे सरकार ने इस मामले की जांच के लिए विशेष जांच दल (एसआईटी) का गठन किया।

उन्होंने आगे कहा कि 12 जनवरी 2024 को इस मामले में एक लिखित शिकायत दर्ज कराई गई थी, जिसमें आदित्य ठाकरे, सूरज पंचोली और अन्य लोगों पर गैंगरेप का आरोप लगाया गया था। लेकिन एक साल से ज्यादा समय बीत जाने के बावजूद एफआईआर दर्ज नहीं हुई।

सुशांत सिंह राजपूत के पिता बोले- दिशा के पिता ने सही किया

सुशांत सिंह राजपूत के पिता ने मामले को लेकर कहा कि पहले दिशा सालियान के पिता ने कहा था वे कुछ नहीं जानते हैं, दिशा ने आत्महत्या ही की होगी। ये मुझे नहीं पता कि बाद में वह किस बात पर कह रह हैं कि ये आत्महत्या नहीं हत्या है। हालांकि, पहले की सरकार और अब की सरकार में फर्क है। वर्तमान मुख्यमंत्री अपने स्तर पर जो भी करेंगे सही करेंगे।

एनसीपी (शरद पवार) विधायक रोहित पवार ने कहा- अगर किसी व्यक्ति ने अपनी बेटी या महिला के लिए न्याय मांगने की कोशिश की है, तो हम चाहते हैं कि उन्हें न्याय मिले। लेकिन वास्तव में क्या हुआ, यह पता होना चाहिए। उसकी मौत को 4 साल हो गए हैं। इस मामले में अब भाजपा राजनीति कर रही है।

रोहित ने आगे कहा- भाजपा ने 5 साल पहले भी बिहार चुनाव के समय सुशांत सिंह राजपूत की मौत को लेकर राजनीति की थी। अब फिर 4 महीने बाद बिहार में विधानसभा चुनाव है। इसको लेकर भाजपा ने दोबारा राजनीति शुरू कर दी है।

महाराष्ट्र के पूर्व गृह मंत्री अनिल देशमुख ने मामले में प्रतिक्रिया देते हुए इसे महाराष्ट्र सरकार की साजिश करार दिया। देशमुख ने कहा- मैं दिशा सालियान के पिता द्वारा दायर याचिका की जानकारी ले रहा हूं। लेकिन अब यह पूरी घटना एक साजिश जैसी दिख रही है।

राजामौली ने दिखाई ओडिशा की बदतर हालत!

सबसे ऊंची चोटी पर लगा कूड़े का अंबार, नजारा जन्नत लेकिन हुई दुर्दशा

फिल्ममेकर एसएस राजामौली ओडिशा में हैं। वो महेश बाबू और पृथ्वीराज सुकुमारन के साथ अपनी अगली फिल्म की शूटिंग कर रहे हैं। फिल्ममेकर को काम से कुछ समय की छुट्टी मिली और वे राज्य की सबसे ऊंची पर्वत चोटी देवमाली ट्रेल पर अकेले ट्रेक पर निकल पड़े। उन्होंने एक्स पर जाकर इस जगह की खूबसूरती और नज़ारे की तारीफ़ की। हालांकि, उन्होंने इलाके में गंदगी फैलाने वाले पर्यटकों की आलोचना की और उनसे सफाई का जिम्मा उठाने के लिए भी कहा। देवमाली ट्रेल से एक वीडियो शेयर करते हुए राजामौली ने लिखा, 'ओडिशा की सबसे ऊंची और सबसे शानदार चोटी देवमाली पर अकेले ट्रेक करने का अद्भुत अनुभव रहा। ऊपर से नज़ारा वाकई मनमोहक था।'

उन्होंने कहा, 'हालांकि, यह देखकर निराशा हुई कि रास्ते पर कूड़ा-कचरा बिखरा पड़ा है। ऐसे प्राचीन चमत्कार बेहतर के हकदार हैं। थोड़ी सी नागरिक भावना बहुत बड़ा बदलाव ला सकती है... हर टूरिस्ट को इन जगहों की सुरक्षा में मदद करने के लिए अपना कूड़ा वापस ले जाना चाहिए।'

इस महीने की शुरुआत में, राजामौली और उनकी टीम एसएसएमबी 29 के कुछ सीन्स की शूटिंग के लिए ओडिशा के लिए रवाना हुई। उनके साथ फिल्म के स्टार्स महेश बाबू, प्रियंका चोपड़ा और पृथ्वीराज सुकुमारन भी थे। वहां, महेश बाबू और पृथ्वीराज का एक सीन था जो व्हीलचेयर पर थे और ये लीक हो गया। हालांकि फिल्ममेकर ने वीडियो को एक्स से हटाने के लिए तेज़ी से काम किया लेकिन नुकसान पहले ही हो चुका था। जवाब में, राजामौली और उनकी टीम ने आगे लीक को रोकने के लिए सेट पर सख्त सुरक्षा उपाय लागू किए।

इस बीच, एसएसएमबी 29 को अभी तक आधिकारिक घोषणा नहीं मिली है। हालांकि, ओडिशा के उपमुख्यमंत्री प्रवती परिदा ने कलाकारों की पुष्टि की और खुलासा किया कि अल्लू अर्जुन की 'पुष्पा 2' के बाद किसी फिल्म की शूटिंग राज्य में की जाएगी।

मिस्टर इंडिया में चाइल्ड आर्टिस्ट बने

आर्थिक स्थिति खराब हुई, सेट पर जाने के पैसे नहीं थे, आज सबसे बड़े डायरेक्टर्स में एक अहमद खान

एक ऐसा शख्स जो एक्टिंग भी कर सकता है। अपने इशारों पर लोगों को नचा भी सकता है। साथ ही, इंडस्ट्री को एक से बढ़कर एक फिल्में भी बनाकर दे सकता है।

हम बात कर रहे हैं, कोरियोग्राफर-डायरेक्टर अहमद खान की। शेखर कपूर की आइकॉनिक फिल्म मिस्टर इंडिया में इन्होंने चाइल्ड आर्टिस्ट की भूमिका निभाई थी।

जीवन के शुरुआती दौर में सब कुछ ठीक था। सारी सुविधाएं थीं। फिर एक वक्त ऐसा आया जब सब कुछ बिखर गया। कभी गाड़ियों से चलने वाले अहमद के पास सेट पर जाने के लिए भी पैसे नहीं होते थे।

इन्होंने दिग्गज कोरियोग्राफर सरोज खान के अंडर डांस सिखाना शुरू किया। कम उम्र में बड़े कोरियोग्राफर बन गए। एक वक्त ऐसा आया जब कोरियोग्राफी से मन भर गया। फिर डायरेक्शन में उतरे। लकीर, हीरोपंती और बागी जैसी फिल्में बनाईं। इस साल 34 एक्टर्स वाली वेलकम टु द जंगल भी ला रहे हैं।

दिल्ली में सोशल मीडिया पर हथियार लहराने वाले 4 गिरफ्तार

नई दिल्ली,20 मार्च (एजेंसियां)। दिल्ली के साउथ-ईस्ट डिस्ट्रिक्ट में सोशल मीडिया पर अवैध हथियारों की नुमाइश करने वालों पर पुलिस शिकंजा कसती जा रही है। अपराध की बढ़ती ऑनलाइन 'ग्लैमराइज़ेशन' को रोकने के लिए जिले की स्पेशल स्टाफ पुलिस ने ताबड़तोड़ कार्रवाई करते हुए चार आरोपियों को धर दबोचा है। इनमें तीन को गिरफ्तार किया गया है, जबकि एक नाबालिग (सीसीएल) को हिरासत में लिया गया है। पुलिस ने इनके पास से दो देसी कट्टे, तीन जिंदा कारतूस और एक बटनदार चाकू बरामद किया है। डीसीपी रवि कुमार सिंह ने बताया कि, सोशल मीडिया पर अपराधियों द्वारा अवैध हथियारों का प्रदर्शन आम लोगों में डर और अपराध को बढ़ावा देने का जरिया बनता जा रहा था। इसे रोकने के लिए जिला पुलिस ने एक विशेष अभियान चलाया, जिसमें अपराधियों की पहचान और उन पर कड़ी कार्रवाई करने का फैसला लिया गया। इस ऑपरेशन में स्पेशल स्टाफ और जामिया नगर थाने की टीमों ने सोशल मीडिया पर कड़ी निगरानी रखी और आरोपियों तक पहुंचने के लिए डिजिटल इंटेलिजेंस का सहारा लिया।

सोशल मीडिया मॉनिटरिंग के दौरान पुलिस ने गोविंदपुरी के नेहरू कैंप के रहने वाले आर्यन (19) और एक नाबालिग को अवैध हथियारों के साथ वीडियो पोस्ट करते हुए पाया। इनकी लोकेशन ट्रेस कर 17 मार्च 2025 को पुलिस टीम ने आर्यन को कालकाजी पार्क से गिरफ्तार किया, जहां से एक देसी कट्टा और दो जिंदा कारतूस बरामद हुए। वहीं, गोविंदपुरी से नाबालिग को पकड़ा गया, जिसके पास से एक बटनदार चाकू बरामद किया गया। दूसरी ओर, जामिया नगर पुलिस ने इसी मामले में हसनुल्लाह खान (19) और शेहरोज़ खान (22) को गिरफ्तार किया। इनसे भी एक देसी कट्टा और एक जिंदा कारतूस बरामद किया गया।

कौन है नागपुर हिंसा के मास्टर माइंड फहीम, जिस पर लगा राजद्रोह का केस, जानिए कर्फ्यू और एक्शन का ताजा हाल

नागपुर, 20 मार्च (एजेंसियां)। औरंगजेब की कब्र को लेकर नागपुर में हिंसा शुरू हुई। हिंसा का मास्टर माइंड 38 साल का फहीम खान है। फहीम खान 2024 के लोकसभा चुनावों में केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी के खिलाफ चुनाव लड़ा था, उसे 1,000 वोट मिले थे। फहीम के पिता बुर्का बेचते हैं और उनकी साइकिल मरम्मत की दुकान भी है। नागपुर हिंसा के मास्टर माइंड फहीम अल्पसंख्यक डेमोक्रेटिक पार्टी के संस्थापक सदस्यों में शामिल था। उसके सुन्नी यूथ फोर्स से भी संबंध है। फहीम खान का यह संगठन 2019 से छत्तीसगढ़ और एमपी में सक्रिय है। फहीम कॉलेज ड्रॉपआउट है और सीसीटीवी मरम्मत का काम करता है। पुलिस ने उसके खिलाफ राजद्रोह के आरोप लगाए हैं।

फहीम खान ने बनाए भड़काऊ वीडियो

फहीम खान नागपुर के संजय बाग कॉलोनी यशोधरा नगर का निवासी है। पुलिस के मुताबिक, फहीम खान ने ही बजरंग दल और विश्व हिंदू परिषद के कार्यकर्ताओं के खिलाफ शिकायत दर्ज कराने के लिए प्रदर्शनकारियों के एक समूह का नेतृत्व किया था। कंप्लेन दर्ज कराने के बाद फहीम खान ने पुलिस स्टेशन से बाहर निकलने के बाद एक कथित भड़काऊ वीडियो बनाया, जिसमें पुलिस पर वीएचपी बजरंग दल के कार्यकर्ताओं को बचाने का आरोप लगाया। उसने अल्पसंख्यक आयोग के अध्यक्ष पर सरकारी इशारे पर चलने का आरोप लगाया था। फहीम का यह वीडियो पूरे शहर में वायरल हो गया, जिसके बारे में पुलिस का कहना है कि इसने सांप्रदायिक भावनाएं भड़क गईं। पुलिस का कहना है कि खान के वीडियो के कारण एक समुदाय के लोग उग्र हो गए, जिन्होंने नागपुर के महाल में उत्पात मचाया।

50 से ज्यादा विवादित पोस्ट हटाए गए

नागपुर हिंसा की जांच कर रहे साइबर डिपार्टमेंट के डीसीपी लोहित मतानी ने बताया कि इस मामले में कुल चार एफआईआर दर्ज की गई है, जिसमें 6 आरोपी नामजद किए गए हैं। सोमवार को नागपुर में उपद्रव से पहले सोशल मीडिया में भड़काऊ वीडियो वायरल किए गए। वीडियो में लोगों को पुलिस पर हमले के लिए उकसाया भी गया था। घटना के बाद आरोपियों ने 50 से अधिक विवादित पोस्ट डिलीट कर दिए। पुलिस मौजूद वीडियो की पड़ताल कर रही है। साइबर ब्रांच जल्द ही फहीम को प्रोडक्शन वॉरंट पर लेकर पूछताछ करेगी।

नागपुर के अब हालात क्या?

नागपुर के कई इलाकों से गुरुवार को कर्फ्यू हटा लिया गया और कई क्षेत्रों में ढील दी गई है। नागपुर पुलिस के अनुसार, नंदनवन और कपिल नगर में कर्फ्यू पूरी तरह से हटा लिया गया है जबकि यशोधरा नगर, इमामवाड़ा, लकड़गंज, शांति नगर, पचपावली और सक्करदरा में दोपहर 2.00 बजे से शाम 4.00 बजे तक छूट दी गई है, ताकि लोग जरूरी सामान खरीद सकें. गणेशपेठ कोतवाली और तहसील थाना क्षेत्र में कर्फ्यू अगले आदेश तक लगा रहेगा। बता दें कि नागपुर हिंसा के मामले में कुल 10 एफआईआर दर्ज की गई है और 91 आरोपियों को अरेस्ट किया गया है। पुलिस ने 11 नाबालिगों को भी हिरासत में लिया गया है।

मुक्तसर में धरना देने की तैयारी कर रहे कई किसानों को पुलिस ने हिरासत में लिया

मुक्तसर/मोगा,20 मार्च (एजेंसियां)। शंभू और खनौरी बॉर्डर से हटाए गए किसानों के विरोध वीरवार को मुक्तसर में कई किसान सड़कों पर उतर आए। यहां किसान सड़कों पर धरना देकर रोष जताने पहुंचे थे। हालांकि पुलिस को जैसे ही इसकी सूचना मिली तो पुलिस मौके पर पहुंची। वीरवार को मुक्तसर के बठिंडा रोड पर सरकार के खिलाफ रोष धरना देने की तैयारी कर रहे किसानों को मुक्तसर पुलिस ने हिरासत में ले लिया लिया। सुबह करीब 11 बजे किसान नेता बठिंडा रोड पर धरना देने के लिए पहुंचे थे और वहां पर धरना देने की तैयारियां शुरू कर दी। जैसे ही पुलिस को इसका पता लगा तो पुलिस टीम ने मौके पर पहुंचकर किसानों को तुरंत डिटेन कर लिया। पुलिस किसानों को पुलिस की गाड़ी में बिठाकर अपने साथ ले गई। मौके पर मौजूद प्रदर्शनकारी किसानों ने सरकार के खिलाफ रोष जाहिर करते हुए कहा कि वह तो शांत तरीके से प्रदर्शन करना चाहते थे, लेकिन राज्य सरकार पुलिस प्रशासन की मदद से उन्हें हिरासत में लेकर उनके संघर्ष को दबाना चाह रही है। पिछले दिनों भी चंडीगढ़ जा रहे किसानों को हिरासत में लेकर संघर्ष को दबाने की कोशिश की गई थी। आज फिर एक बार पुलिस ने उन्हें हिरासत में लेकर संघर्ष को दबाने की कोशिश ही है। बता दें कि वीरवार को संयुक्त किसान मोर्चा की तरफ से राज्य भर में सरकार के खिलाफ डिप्टी कमिश्नर दफ्तरों के समक्ष धरना देने का एलान किया था।

जेसीबी से पूरा एटीएम ही उखाड़ ले गए चोर मामले में शामिल लोगों की तलाश में जुटी पुलिस

झारसुगुड़ा,20 मार्च (एजेंसियां)। ओडिशा के झारसुगुड़ा से एक हैरान कर देने वाली चोरी का मामला सामने आया है। बीती रात अज्ञात बदमाशों ने जेसीबी मशीन का इस्तेमाल कर सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया के एटीएम को उखाड़ लिए और लेकर फरार हो गए। यह घटना बीटीएम चौक के पास, झारसुगुड़ा सदर थाना क्षेत्र में हुई, जिसे लेकर लेकर स्थानीय पुलिस प्रशासन में हड़कंप मच गया। मिली जानकारी के मुताबिक, चोरों ने एक बड़ी जोसीबी मशीन की मदद ली और एटीएम को जबरन उखाड़ लिया। घटना के बाद, एटीएम कियोस्क पूरी तरह से क्षतिग्रस्त पाया गया। बदमाशों ने पूरी एटीएम मशीन को लेकर फरार हो गए, जबकि बैंक में रखी नकदी भी गायब हो गई। घटना की सूचना मिलते ही झारसुगुड़ा सदर पुलिस तुरंत मौके पर पहुंची और जांच में जुट गई। पुलिस ने तत्परता दिखाते हुए चोरी हुए एटीएम और जेसीबी मशीन को बरामद कर लिया। हालांकि, एटीएम मशीन में रखी हुई नकदी गायब थी और एटीएम बुरी तरह टूटा-फूटा था। जांच के दौरान पुलिस ने जेसीबी के मालिक को ट्रेस कर हिरासत में ले लिया है। फिलहाल, उससे पूछताछ की जा रही है। पुलिस अब इस मामले में शामिल अन्य लोगों की तलाश कर रही है। जल्द ही यह पता चल सकेगा कि एटीएम चोरी करने वाले ये बदमाश कौन थे और उन्होंने नकदी कहां छिपाई। पुलिस के मुताबिक, चोरी की घटना को अंजाम देने वाले बदमाशों ने खासतौर पर जेसीबी मशीन का इस्तेमाल किया, जो एक बड़ी योजना का हिस्सा लगता है। पुलिस अब इस मामले के आरोपियों की पहचान करने में जुटी है और जल्द ही मामले का पर्दाफाश होने की उम्मीद जताई जा रही है।

युवती की गला घोंटकर हत्या, लाश को पत्थर से बांध कर नहर में फेंका, आरोपी गिरफ्तार

नई दिल्ली,20 मार्च (एजेंसियां)। राजधानी दिल्ली में हत्या का एक दर्दनाक मामला सामने आया है। यहां एक युवती की गला घोंटकर हत्या कर दी गई है। हत्या के बाद युवती के शव को पत्थर से बांधकर नहर में फेंक दिया गया है। युवती बीते 12 मार्च से ही लापता बताई जा रही थी। पुलिस ने इस मामले में युवती के जानकार आसिफ नाम के युवक को गिरफ्तार किया है। आइए जानते हैं इस हत्याकांड के बारे में सबकुछ। राजधानी दिल्ली के छावला इलाके की नहर में एक युवती की लाश मिलने से हड़कंप मच गया। हत्या के आरोपी आसिफ नाम के लड़के को पुलिस ने गिरफ्तार किया है। युवती की पहचान कोमल के रूप मे हुई जो सीमापुरी थाने इलाके के सुंदर नगरी की रहने वाली थी। युवती की हत्या गला घोंट कर की थी और उसकी लाश को छवाला नहर मे पत्थर से बंद कर फेंक दिया था। पुलिस की जांच मे सामने आया कि लड़की अपने घर से 12 मार्च से मिसिंग थी और उसी दिन उसकी हत्या आसिफ नाम के उसके जानकार ने कर दी। पुलिस जांच मे पता चला कि आसिफ एक टैक्सी चालक है, और कोमल का पुराना जानकार है। 12 मार्च को उसने कोमल को सीमापुरी इलाके से अपनी गाड़ी में बैठाया था। इन दोनों के बीच किसी बात को लेकर विवाद हो गया जिसके बाद आसिफ ने कोमल की गला घोंट कर हत्या कर उसकी लाश नहर में फेंक दी। 17 मार्च को युवती की लाश पानी में फूलने के कारण ऊपर तैरने लगी तब पुलिस को इस बारे में जानकारी मिली।

बांग्लादेश से रची गई नागपुर दंगे की साजिश? साइबर सेल को मिले ये अहम सबूत

नागपुर,20 मार्च (एजेंसियां)। महाराष्ट्र के नागपुर में सोमवार को भड़की हिंसा के पहले और बाद में सोशल मीडिया पर भड़काऊ पोस्ट करने वालों पर साइबर सेल की टीम कारवाई कर रही है। कई ऐसे अकाउंट और उनका इस्तेमाल करने वालों की पहचान की जा रही है और उनके खिलाफ कारवाई भी हो रही है। नागपुर पुलिस ने अब तक ने 10 एफआईआर दर्ज की है। ताजा चार मामले सोशल मीडिया पर आपत्तिजनक वीडियो पोस्ट करनेऔर लोगों को भड़काने के मामलों में दर्ज की गई है। नागपुर पुलिस की साइबर सेल ने बांग्लादेश से संचालित एक फेसबुक अकाउंट की भी पहचान की है, जिसने नागपुर में बड़े पैमाने पर दंगे भड़काने की धमकी दी थी। यह पोस्ट एक बांग्लादेशी यूजर द्वारा किया गया था। जिसमें उसने लिखा था कि, 'सोमवार के दंगे तो सिर्फ एक छोटी घटना थी भविष्य में और बड़े दंगे होंगे।' वहीं जांच के बाद पता चला कि उक्त अकाउंट यूजर बांग्लादेश का निवासी है और उसने यह संदेश बांग्लादेश से पोस्ट किया था।

साइबर सेल ने फेसबुक से संपर्क कर उस अकाउंट को ब्लॉक करने का अनुरोध किया है। जानकारी के अनुसार, सोशल मीडिया का उपयोग न केवल नफरत फैलाने के लिए किया जा रहा है बल्कि इसके जरिये अफवाहें भी फैलाई जा रही है। पिछले दो दिनों में कई पोस्ट्स में दावा किया गया कि दंगों में घायल हुए दो लोगों की अस्पताल में मौत हो गई है। हालांकि ये जानकारी पूरी तरह से गलत है। साइबर सेल ने अब तक 97 ऐसे पोस्ट की पहचान की है जो झूठी जानकारी फैला रहे थे। साइबर सेल ने जनता से अपील की है कि वे सोशल मीडिया पर किसी भी असत्यापित जानकारी पर विश्वास न करें और अफवाहों को फैलाने से बचें। नागपुर शहर पुलिस ने दंगों में शामिल लोगों को पकड़ने और उनकी पहचान के लिए 18 विशेष जांच टीमें (एसआईटी) बनाई हैं। वहीं अब तक पुलिस ने 200 लोगों की पहचान कर ली है और अन्य 1,000 संदिग्धों की पहचान की जा रही है।

महिला सब इंजीनियर को अश्लील मैसेज भेजने वाले कार्यपालन यंत्री पर एफआईआर, आरोपी फरार

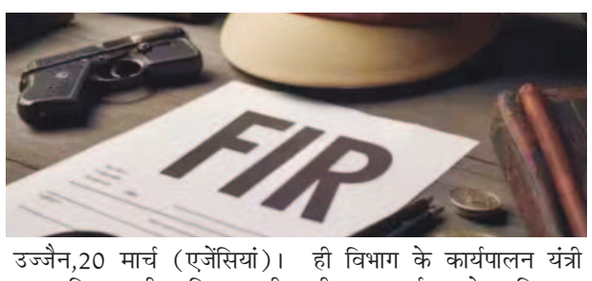

उज्जैन,20 मार्च (एजेंसियां)। नगर निगम की महिला सभी इंजीनियर को अश्लील मैसेज भेजने और रात में घर बुलाने के लिए दबाव बनाने वाले कार्यपालन यंत्री के खिलाफ कोतवाली थाना पुलिस ने एफआईआर दर्ज कर ली है। अभी कार्यपालन यंत्री फरार बताया जा रहा है। दरअसल, उज्जैन नगर निगम में सब इंजीनियर के पद पर पदस्थ 35 वर्षीय महिला अधिकारी ने अपने ही विभाग के कार्यपालन यंत्री पीयूष भार्गव के खिलाफ कोतवाली थाने में एफआईआर दर्ज कराई है। महिला सब इंजीनियर का आरोप है कि कार्यपालन यंत्री भार्गव ने लंबे समय से प्रताड़ित कर रहे थे। उन्होंने आरोप लगाते हुए कहा कि वे रात के समय उन्हें घर बुलाते थे। इसके अलावा फोन पर अश्लील बातें भी करते थे। महिला अधिकारी ने व्हाट्सएप चैटिंग के अलावा पीयूष भार्गव की ऑडियो कॉल रिकॉर्डिंग भी सबूत के तौर पर पुलिस के समक्ष पेश की थी, जिसके बाद पुलिस ने गंभीर धाराओं में मामला दर्ज कर लिया है। एसपी प्रदीप कुमार शर्मा के मुताबिक आरोपी पीयूष भार्गव को जल्द गिरफ्तार किया जाएगा। अभी आरोपी फरार है।

'नौकरी छोड़ने का बना लिया था मन'

महिला अधिकारी ने अपने शिकायत में यह भी लिखा है कि पीयूष भार्गव की वजह से उन्होंने नौकरी छोड़ने का मन बना लिया था, लेकिन फिर उन्हें एहसास हुआ कि भार्गव दूसरी महिला अधिकारियों के साथ भी इस तरीके से बर्ताव कर सकता है। इसके बाद उन्होंने नगर निगम के अधिकारियों से शिकायत की नगर निगम आयुक्त आशीष पाठक की सलाह पर उन्होंने पुलिस में भी शिकायत की है।

7 दिनों में होगी जांच पूरी

नगर निगम आयुक्त आशीष पाठक ने बताया कि पीयूष भार्गव के खिलाफ उनके पास महिला अधिकारी ने शिकायत की है। महिला अधिकारी की शिकायत पर जांच कमेटी बनाई गई है जो कि सात दिनों मे अपनी रिपोर्ट पेश करेगी। इसके बाद निगम की ओर से अलग से कार्रवाई की जाएगी।

पहले भी हो चुका है विवाद

कार्यपालन यंत्री पीयूष भार्गव पूर्व में रिटायर हो चुका है। उसे संविदा के आधार पर रखा गया है। पूर्व में भी वे कई बार विवादों में रह चुके हैं। उनके खिलाफ भ्रष्टाचार निवारण करने वाली जांच एजेंसी भी जांच कर चुकी है।

कंपनी के टॉयलेट में लिखे पाकिस्तान समर्थित नारे, पुलिस ने दो आरोपियों को दबोचा

रामनगर,20 मार्च (एजेंसियां)। कर्नाटक के रामनगर शहर में हैरान कर देने वाला मामला सामने आया है। यहां एक ऑटोमोबाइल कंपनी के टॉयलेट की दीवार पर पाकिस्तान के समर्थन में नारे लिखने की घटना सामने आई है। पुलिस ने इस मामले में शिकायत के आधार पर दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। आरोपियों की पहचान अहमद हुसैन और सादिक नाम के दो युवकों के रूप में की गई है। दरअसल, ये पूरा मामला कर्नाटक के रामनगर में बिड़दी इलाके से सामने आया है। यहां टोयोटा ऑटोमोबाइल की फैक्ट्री में कंपनी के एचआर ने 15 मार्च को एक नोटिस लगाया था। इस नोटिस में फैक्ट्री के अंदर शौचालय की दीवार पर पाकिस्तान समर्थक नारे लिखे पाए जाने की बात कहते हुए कर्मचारियों से ऐसा करने से बचने की वार्निंग दी गई थी।

दिल्ली के बेगमपुरा में पुलिस एनकाउंटर के बाद 3 अपराधी गिरफ्तार, दो बदमाशों के पैर में लगी गोली

नई दिल्ली,20 मार्च (एजेंसियां)।

दिल्ली पुलिस ने आज (20 मार्च) बेगमपुर इलाके में हुई मुठभेड़ के दौरान तीन अपराधियों को गिरफ्तार किया है। पुलिस को सूचना मिली थी कि कुछ अपराधी एक कार में सवार होकर आ रहे हैं, जिसके बाद पुलिस ने अपराधियों की धरपकड़ के लिए जाल बिछाया। जब अपराधी पहुंचे तो पुलिस ने उन्हें रोकने की कोशिश की, लेकिन अपराधियों ने पुलिस टीम पर फायरिंग कर दी। दोनों तरफ से कई राउंड गोलियां चलीं, जिसमें दो अपराधी पैर में गोली लगने से घायल हो गए। कुल तीन अपराधी गिरफ्तार किए गए, जिन पर कई आपराधिक मामले दर्ज हैं।

मुठभेड़ के बाद 4 अपराधी गिरफ्तार

इससे पहले, देर रात एक नाटकीय कार्रवाई में, दिल्ली पुलिस ने अवैध हथियार रखने की सूचना मिलने के बाद मुठभेड़ के बाद चार अपराधियों को गिरफ्तार किया। सीसीटीवी में कैद पूरी घटना सोशल मीडिया पर वायरल हो गई है, साथ ही दिल्ली पुलिस ने इसे अपने आधिकारिक एक्स अकाउंट पर भी शेयर किया है। अधिकारियों के अनुसार, 1 मार्च को खुफिया सूत्रों ने दिल्ली पुलिस के बदरपुर सब-डिवीजन को सूचना दी कि चार संदिग्ध दिल्ली नंबर की कार में अवैध हथियार लेकर घूम रहे हैं।

अवैध हथियार लेकर घूम रहे थे बदमाश

सूचना के आधार पर, त्वरित कार्रवाई करते हुए, सब-डिवीजन बदरपुर की एक पुलिस टीम को नाला रोड, अर्पण विहार के पास लोहिया पुल पर तैनात किया गया। पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार, लगभग 12।10 बजे, अर्पण विहार की ओर से एक ग्रे रंग की कार आई, जिसे मुखबिर ने संदिग्ध वाहन के रूप में पहचाना। जब पुलिस टीम ने वाहन को रोकने का प्रयास किया, तो सामने की यात्री सीट पर बैठे एक संदिग्ध ने पिस्तौल निकाल ली। तुरंत प्रतिक्रिया करते हुए, पुलिसकर्मियों ने कार के अगले पहिये पर गोली चलाई, जिससे वाहन को सफलतापूर्वक रोक दिया गया। इसके बाद सभी चार संदिग्धों को पकड़ लिया गया और आगे की तलाशी में दो अवैध पिस्तौल, दो कारतूस और एक कार बरामद की गई।

बेटा गुम-बहू की मौत, भीख मांग गुजारा कर रही दादी ने पोते को 200 रुपये में बेचा

मयूरभंज,20 मार्च (एजेंसियां)। ओडिशा के मयूरभंज जिले के मोरडा ब्लॉक के बलदिया गांव की रहने वाली 65 वर्षीय विधवा मंद सोरेन के पास न घर था, न जमीन, और न ही कोई सरकारी सहायता। उनके पति का निधन पहले ही हो चुका था। उनका बेटा भी कहीं चला गया और बहू की मौत कोरोना काल में हो गई। ऐसे में मंद सोरेन अपने 7 साल के पोते को लेकर रासगोविंदपुर ब्लॉक के रायपाल गांव में अपनी बहन के घर रह रही थीं। मंद सोरेन भीख मांगकर अपने पोते का पालन-पोषण कर रही थीं, लेकिन बढ़ती उम्र और कमजोरी की वजह से उसकी सही तरीके से देखभाल नहीं कर पा रही थीं। मजबूरी में उन्होंने एक अज्ञात व्यक्ति को 200 रुपये में पोता सौंप दिया, ताकि वह अच्छे से रह सके, उसे भरपेट खाना और अच्छी परवरिश मिल सके। स्थानीय पंचायत समिति के सदस्य को इस मामले की जानकारी मिली। उन्होंने प्रशासन को सूचना दी, जिसके बाद रासगोविंदपुर पुलिस एक्टिव हुई और बच्चे को बचाकर थाने लाई। खबर मिलते ही बाल संरक्षण विभाग और रासगोविंदपुर की सीडीपीओ अधिकारी थाने पहुंचीं और दादी-पोते को सरकारी संरक्षण में ले लिया गया। बाल संरक्षण विभाग की अधिकारी ने बताया, घटना की जानकारी मिलते ही हम रायपाल गांव पहुंचे, जहां हमें ये पता चला कि पुलिस ने इन्हें अपने हिफाजत में रखा है। इसके बाद हम पुलिस स्टेशन पहुंचे और हमने वृद्ध महिला से बात की तो उन्होंने कहा कि मैंने बच्चे को बेचा नहीं, बल्कि पढ़ाने-लिखने के लिए दूसरी दंपति को सौंपा था, क्योंकि मेरी उतनी हैसियत नहीं है। उन्होंने आगे बताया, चिंता का विषय था कि बच्चे को गांव में खाने-पीने की सुविधा थी या नहीं, जांच के बाद पता चला कि खाने-पीने की सुविधा उपलब्ध थी। डेढ़ महीने पहले महिला जहां रह रही थी वहां से वो निकल आई थीं, जिसकी वजह से उन्हें भीख मांग कर अपना और अपने पोते का भरन-पोषण करना पड़ रहा था।

शहरों ने मुंह फेरा तो गांव बने गौरैया का बसेरा बढ़ते शिकार पर कड़ी नजर, जाने क्या हैं कारण

जम्मू,20 मार्च (एजेंसियां)। फुदकती-इठलाती गौरैया तो आपने देखी होंगी। याद कीजिए, कितनी तरह की गौरैया को आपने देखा है। पड़ गए न चक्कर में। पूरे देश में गौरैया की आठ प्रजातियां हैं। इनमें से जम्मू-कश्मीर में चार प्रजातियों की गौरैया का बसेरा है। शहरी इलाकों में तो इनकी संख्या लगातार कम हो रही है, लेकिन ग्रामीण इलाकों में इनकी चहचहाहट बरकरार है। गौरैया की घटती संख्या और उसके संरक्षण के प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए हर साल आज के दिन यानी 20 मार्च को विश्व गौरैया दिवस मनाया जाता है। जम्मू विश्वविद्यालय के सांख्यिकी विभाग में प्रोफेसर और जम्मू-कश्मीर (जेएंडके) बर्ड लाइफ के संस्थापक परमिल कुमार करीब 20 साल से पक्षियों के संरक्षण पर काम कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि गौरैया की जम्मू-कश्मीर में चार प्रजातियां पाई जाती हैं। इनमें लाल, घरेलू, सिंध और पीले गले वाली गौरैया शामिल है। लाल गौरैया आमतौर पर पहाड़ों में, सिंध गौरैया पानी के किनारे, घरेलू गौरैया इंसानों के आसपास और पीले गले वाली गौरैया जंगलों में पाई जाती है। वह कहते हैं, मोबाइल टावरों से निकलने वाले रेडिएशन और फसलों में कीटनाशकों के बढ़ता प्रयोग गौरैया के लिए चिंताजनक है। परमिल कहते हैं इससे इनकी अंडे देने की क्षमता कम होती है।वन विभाग में रेंज अफसर के पद पर तैनात परवेज अहमद भी पक्षियों के संरक्षण के लिए प्रयासरत हैं।

परवेज बताते हैं कि पक्षी दो तरह के होते हैं। एक जो जंगलों में रहते है और दूसरे जो इंसानों के आसपास रहते हैं। दोनों ही तरह के पक्षियों के कम होने की सबसे बड़ी वजह उनके घरों का उजड़ना है। जंगलों में इन्सानों की आवाजाही से और शहरों में लगातार पक्के घरों के निर्माण से पक्षियों के सामने अपने घर बचाने का संकट है। हालांकि, गौरैया की बात करें तो प्रदेश के ग्रामीण इलाकों में इनकी संख्या स्थिर है, क्योंकि वहां उन्हें घोंसले बनाने और खाने-पीने में समस्या नहीं आती। गौरैया को पालना भी है अवैध, हो सकती है जेलपरमिल कुमार ने बताया कि गौरैया देश में जंगली पक्षी मानी जाती है।

हालांकि यह वन्यजीव संरक्षण अधिनियम की अनुसूची में शामिल नहीं है। यानी कि इसे संकटग्रस्त नहीं माना जाता। इसे केवल कानूनी रूप से संरक्षित किया गया है। इसलिए इसका शिकार करना, पकड़ना, बेचना या पालना गैरकानूनी है। गौरैया के घोंसले और अंडों को नुकसान पहुंचाना या नष्ट करना दंडनीय अपराध है। ऐसा करने पर जुर्माना और जेल भी हो सकती है। वन्यजीव अपराध नियंत्रण ब्यूरो इसके व्यापार और शिकार की निगरानी करता है।

छत्रपति संभाजीनगर के बाजार में आग लगने से 20 दुकानें क्षतिग्रस्त

मुंबई,20 मार्च (एजेंसियां)। महाराष्ट्र के छत्रपति संभाजीनगर में एक बाजार में बृहस्पतिवार सुबह आग लगने से करीब 20 दुकानें क्षतिग्रस्त हो गईं। एक अधिकारी ने यह जानकारी दी। अधिकारी ने बताया कि इस घटना में जनहानि की सूचना नहीं है। अग्निशमन के एक अधिकारी ने बताया कि आजाद चौक इलाके के सेंट्रल नाका स्थित बाजार में सुबह करीब पांच बजे आग लगी। इस इलाके में फर्नीचर की कई दुकानें हैं। अधिकारी ने बताया कि आग लगने से 15 से 20 दुकानें क्षतिग्रस्त हो गईं। उन्होंने कहा, ''हमे सुबह करीब साढ़े पांच बजे आग लगने की सूचना मिली और दमकल के छह वाहनों को मौके पर भेजा गया।''अधिकारी ने बताया कि बाद में महाराष्ट्र औद्योगिक विकास निगम (एमआईडीसी) और 'गरवारे इंडस्ट्रीज' के कुछ दमकल वाहन भी आग बुझाने में मदद के लिए मौके पर पहुंचे। उन्होंने बताया कि आग बुझाने के प्रयास जारी हैं , फिलहाल आग लगने के कारण का पता नहीं लग पाया है। बता दें कि इससे पहले नागपुर में बीते सोमवार को औरंगजेब की कब्र विवाद को लेकर हिंसा भड़क गई थी, जिसमें कई लोग घायल हुए थे। पुलिस ने आरोपियों की धरपकड़ तेज कर दी है। अबतक 60 दंगाइयों को गिरफ्तार किया गया है। 3 पुलिस स्टेशन में अभी तक 6 एफआईआर दर्ज हुई है। वहीं, सीसीटीवी के आधार पर 100 से 200 लोगों को चिन्हित किया गया है। नागपुर में दंगा करने वाले 27 लोगों को कल कोर्ट में पेश किया गया। कोर्ट ने आरोपियों को 21 मार्च तक पीसीआर में रिमांड पर भेज दिया है। अब तक मिली जानकारी के मुताबिक, नागपुर में सोमवार की रात हिंसा करते हुए उपद्रवियों ने 38 दोपहिया वाहनों को नुकसान हुआ है। 5 कारों को नुकसान पहुंचाया गया है। इसके अलावा 2 जेसीबी और 1 क्रेन को भी नुकसान पहुंचाया गया है।

ट्रंप की टैरिफ पॉलिसी में बड़ा ट्विस्ट, भारत के लिए अच्छा या और होने जा रहा है खराब?

नई दिल्ली,20 मार्च (एजेंसियां)। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की टैरिफ पॉलिसी में बड़ा ट्विस्ट दिखाई दिया है। अन्य देशों के खिलाफ लगाए जाने वाले जवाबी टैरिफ (रेसिप्रोकल टैरिफ) भारत के लिए उतने खतरनाक नहीं दिख रहे हैं, जितने पहले लग रहे थे। इसकी वजह यह है कि अभी तक यह साफ नहीं है कि ये टैरिफ कैसे लगाए जाएंगे। साथ ही, अमेरिकी वित्त मंत्री स्कॉट बेसेंट ने ट्रंप की नीति में एक नया मोड़ ला दिया है। ऐसा लगता है कि यह पॉलिसी अभी भी बन रही है। किसी को भी ठीक से नहीं पता कि यह कैसे लागू होगी। 2 अप्रैल की समयसीमा नजदीक है। लेकिन, चीजें अभी भी साफ नहीं हैं।

जवाबी टैरिफ का मतलब है कि आयात पर दरों को बढ़ाकर उस स्तर तक ले जाना, जो अन्य देश अमेरिकी उत्पादों पर लगाते हैं। ट्रंप ने पिछले साल अपने चुनाव प्रचार के दौरान कहा था, 'अगर भारत, चीन या कोई अन्य देश अमेरिकी सामानों पर 100 या 200 फीसदी टैरिफ लगाता है तो हम भी उन पर उतना ही टैरिफ लगाएंगे। दूसरे शब्दों में 100 फीसदी का मतलब 100 फीसदी

है। अगर वे हम पर टैरिफ लगाते हैं तो हम भी उन पर शुल्क लगाएंगे - जैसे को तैसा, शुल्क के बदले शुल्क बिल्कुल समान राशि।'

भारत-अमेरिका टैरिफ में बड़ा अंतर

ब्लूमबर्ग इकोनॉमिक्स की माएवा कजिन और ड्यूश बैंक के जॉर्ज सारावेलोस जैसे विशेषज्ञों का मानना है कि अमेरिका के साथ भारत के टैरिफ में बड़ा अंतर है। ऐसा होने के कारण भारत को जवाबी कार्रवाई का खतरा है। कजिन के विश्लेषण के अनुसार, भारत की ओर से अमेरिकी आयात पर लगाया जाने वाला औसत शुल्क अमेरिका का भारतीय वस्तुओं पर लगाए जाने वाले टैरिफ से 10 फीसदी से भी ज्यादा है। सारावेलोस ने एक रिपोर्ट में कहा कि पारस्परिकता की व्यापक व्याख्या सभी देशों के लिए बड़े परिणाम होंगे। इसमें अमेरिका के साथ किसी देश के ट्रेड सरप्लस या अमेरिकी कंपनियों पर उसके टैक्स जैसे विचारों को शामिल किया जा सकता है। मॉर्गन स्टेनली के विश्लेषकों के अनुसार, भारत और थाईलैंड उन एशियाई अर्थव्यवस्थाओं में शामिल हैं जिन्हें 4 से 6 फीसदी तक शुल्क बढ़ोतरी का सामना करना पड़ सकता है। यह मानते हुए कि अमेरिका अंतर को कम करने के लिए टैरिफ लगाता है। लेकिन, अमेरिकी वित्त मंत्री स्कॉट बेसेंट के एक बयान ने भारत के लिए उम्मीद की किरण जगाई है। बेसेंट ने फॉक्स बिजनेस नेटवर्क के 'मॉर्निंग्स विद मारिया' प्रोग्राम में कहा कि ट्रंप 2 अप्रैल को व्यापार भागीदार देशों को जवाबी शुल्क संख्या देंगे जो उनकी अपनी दरों, गैर-शुल्क व्यापार बाधाओं, मुद्रा अभ्यास और अन्य कारकों को दर्शाती है। लेकिन, वे 'शुल्क दीवार' से बचने के लिए बातचीत कर सकते हैं। बेसेंट ने कहा, '2 अप्रैल को प्रत्येक देश को एक संख्या मिलेगी जो हमें लगता है कि उनके शुल्क, गैर-शुल्क बाधाओं, मुद्रा हेरफेर, अनुचित धन, श्रम दमन को दर्शाती है।

हम उनके पास जाएंगे और कहेंगे- देखिए, हमें लगता है कि यहां शुल्क का स्तर है, गैर-शुल्क बाधाएं, मुद्रा हेरफेर, अनुचित धन, श्रम दमन और यदि आप इसे रोकेंगे तो हम टैरिफ वॉल नहीं लगाएंगे।' बेसेंट ने व्यापार भागीदारों के बारे में कहा था, 'मुझे उम्मीद है कि 2 अप्रैल को कुछ टैरिफ लगाने की जरूरत नहीं होगी। कारण है कि पहले से ही बातचीत कर ली गई है या एक बार जब देशों को उन्हें जवाबी शुल्क संख्या मिल जाएगी तो वे तुरंत हमारे पास आएंगे और इसे कम करने के लिए बातचीत करना चाहेंगे।

सोना लगातार पांचवें दिन ऑल टाइम हाई परःदाम 112 बढ़कर 88,761 पर पहुंचा चांदी एक लाख के करीब ; इस साल 12,599 महंगा हुआ सोना

नई दिल्ली,20 मार्च (एजेंसियां)। सोने की कीमत आज यानी 20 मार्च को लगातार पांचवे दिन ऑल टाइम हाई पर है। इंडिया बुलियन एंड ज्वेलर्स एसोसिएशन के अनुसार, 10 ग्राम 24 कैरेट सोने का दाम 112 बढ़कर 88,761 पर पहुंच गया है। इससे पहले कल यानी बुधवार 19 मार्च को भी सोने का भाव 88,649 के ऑल टाइम हाई पर था। वहीं चांदी के भाव में आज कल के मुकाबले 355 रुपए की कमी आई है, ये 99,613 रुपए प्रति किलो बिक रही है। कल एक किलो चांदी 99,968 पर थी। मंगलवार, 18 मार्च को चांदी का भाव 1,00,400 प्रति किलो था, जो इसका ऑल टाइम हाई भी है। केडिया एडवाइजरी के डायरेक्टर अजय केडिया के अनुसार इस साल सोना 92 हजार तक जा सकता है।

महानगरों में सोने की कीमत

दिल्ली: 10 ग्राम 22 कैरेट सोने की कीमत 83,250 रुपए और 10 ग्राम 24 कैरेट सोने की कीमत 90,810 रुपए है। **मुंबई:** 10 ग्राम 22 कैरेट सोने की कीमत 83,100 रुपए और 10 ग्राम 24 कैरेट सोने की कीमत 90,660 रुपए है। **कोलकाता:** 10 ग्राम 22 कैरेट गोल्ड की कीमत 83,100 रुपए और 24 कैरेट 10 ग्राम सोने की कीमत 90,660 रुपए है। **चेन्नई:** 10 ग्राम 22 कैरेट सोने की कीमत 83,100 रुपए और 10 ग्राम 24 कैरेट सोने की कीमत 90,660 रुपए है। **हैदराबाद :** सोने(गोल्ड) का रेट 24 कैरेट के लिए 90,450 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट के लिए 82,910 रुपये है।

सेंसेक्स 899 अंक चढ़कर 76,348 पर बंद

निफ्टी 283 अंक ऊपर 23,190 पर पहुंचा, आईटी और ऑटो शेयर्स सबसे ज्यादा चढ़े

मुंबई,20 मार्च (एजेंसियां)। आज यानी 20 मार्च को सेंसेक्स 899 अंक (+1.19%) की तेजी रही, ये 76,348 के स्तर पर बंद हुआ। निफ्टी भी 283 अंक (+1.24%) चढ़कर 23,190 के स्तर पर बंद हुआ। आज एनएसई के सभी 19 सेक्टोरल इंडेक्स हरे निशान बंद हुए। आईटी और ऑटो शेयर सबसे ज्यादा चढ़े हैं। निफ्टी ऑटो में 1.42% की तेजी रही। एफएमसीजी, मीडिया, रियल्टी और मेटल इंडेक्स में भी 1% से ज्यादा की तेजी रही। बैंकिंग इंडेक्स 0.72% चढा। पॉजिटिव संकेतः अमेरिकी फेडरल रिजर्व ने 2025 के अंत तक ब्याज दर में दो बार कटौती के अपने अनुमान को बरकरार रखा है। ये ग्लोबल मार्केट के लिए पॉजिटिव संकेत है। 19 मार्च को अमेरिका का डाओ जोंस 0.92% चढ़कर 41,964 पर बंद हुआ। नैस्डेक कंपोजिट में 1.41% और एस एंड पी 500 इंडेक्स में 1.08% की बढ़त रही। बाइंग मोमेंटमः अक्टूबर 2024 से फरवरी तक निफ्टी हर महीने गिरावट में बंद हुआ था। ये 5 महीने में 12% गिरा था। इस गिरावट के बाद टाटा मोटर्स, रिलायंस और इंफोसिस जैसे अच्छे फंडामेंटल वाले काफी सारे शेयर सस्ते में मिल रहे हैं। टाटा मोटर्स अपने पीक से 40% गिर चुका है। इंफोसिस में 20% की गिरावट आई है। ऐसे में निवेशक खरीदारी कर रहे हैं। पॉजिटिव इकोनॉमिक डेटाः वित्त वर्ष 2025 की तीसरी तिमाही में भारत की जीडीपी 6.2% की दर से बढ़ी है। वहीं रिटेल महंगाई फरवरी में 3.61% रही, जो जनवरी में 4.26% थी। इसके अलावा इंडेक्स ऑफ इंडस्ट्रियल प्रोडक्शन जनवरी में 5% बढ़ा, जो उसके पहले महीने में 3.2% था। एक्सपर्ट्स के मुताबिक ये डेटा इकोनॉमी के लिए पॉजिटिव है। के डायरेक्टर अजय केडिया के अनुसार बाजार को गिराने वाले जो भी इवेंट थे उसे हम डाइजेस्ट कर चुके हैं। जैसे इजराइल-हमास जंग, ट्रेड वॉर, रूस-यूक्रेन जंग। इसके अलावा पहले भारतीय बाजार ओवर वैल्यूड था जो गिरावट के बाद अपनी सही वैल्यू पर आ गया है। कई बड़े शेयर डिस्काउंट में मिल रहे हैं जिसमें लोग खरीदी कर रहे हैं। इन कारणों से अब बाजार में तेजी है और आगे भी इसके जारी रहने कर उम्मीद है।इंडिगो, मुथूट फाइनेंस और श्री सीमेंट सहित 69 शेयरों ने बीएसई पर इंट्राडे कारोबार में 52 वीक का नया उच्चतम स्तर छुआ। केईआई, डेक्कन हेल्थ केयर और एनडीएल वेंचर्स सहित 106 शेयरों ने बीएसई पर इंट्राडे कारोबार में अपने नए 52-वीक के निचले स्तर को छुआ। एनएसई पर 1,759 शेयरों में बढ़त दर्ज की गई, जबकि 1,143 शेयरों में गिरावट रही। 79 शेयरों के भाव अपरिवर्तित रहे। वोडाफोन आइडिया (47.50 करोड़ शेयर), यस बैंक (8.07 करोड़ शेयर), ईजी ट्रिप (7.27 करोड़ शेयर) एनएसई पर वॉल्यूम वाइज सबसे एक्टिव रहे।

एलन मस्क की जान को खतरा, डीओजीई बना बड़ा कारण!

क्या है दुनिया के सबसे अमीर शख्स का दावा?

नई दिल्ली,20 मार्च (एजेंसियां)। दुनिया के सबसे अमीर शख्स और अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के करीबी दोस्त एलन मस्क ने बड़ा दावा किया है। उन्होंने कहा है कि ट्रंप प्रशासन में उनकी भूमिका और एक नए विभाग डीओजीई की ओर की गई भारी छंटनी के कारण उनकी जान को खतरा है। डीओजीई यानी डिपार्टमेंट ऑफ गवर्नमेंट एफिशिएंसी को राष्ट्रपति ट्रंप ने बनाया है। डीओजीई का काम सरकारी नौकरियों और खर्चों में कटौती करना है। इस विभाग के मुखिया एलन मस्क हैं। मस्क सरकारी कर्मचारियों की संख्या को कम करने और टैक्सपेयर्स के पैसे की बर्बादी को रोकने की कोशिश कर रहे हैं। फॉक्स न्यूज को दिए एक इंटरव्यू में मस्क ने कहा कि सरकारी कामकाज में जो लोग भ्रष्टाचार कर रहे थे, जब उन्होंने उस भ्रष्टाचार को रोका तो वे लोग उन्हें जान से मारने की धमकी दे रहे हैं। मस्क ने यह भी कहा कि टेस्ला कंपनी को भी नुकसान पहुंचाने की कोशिश की जा रही है।

क्यों है जान को खतरा?

मस्क ने इंटरव्यू में कहा, 'वे मुझे मारना चाहते हैं, क्योंकि मैं उनकी धोखाधड़ी से कमाए जा रहे पैसे को रोक रहा हूं। वे टेस्ला को भी नुकसान पहुंचाना चाहते हैं क्योंकि हम सरकार में हो रही इस भयानक बर्बादी और भ्रष्टाचार को रोक रहे हैं। मुझे लगता है कि वे बुरे लोग हैं। बुरे लोग बुरा काम करेंगे।' मस्क का कहना है कि जो लोग गलत तरीके से पैसा कमा रहे थे, जब उन्होंने वो पैसा लेना बंद कर दिया तो वे नाराज हो गए और उन्हें मारने की धमकी देने लगे। कोर्ट ने लगाई कई चीजों पर रोक एक संघीय जज ने एलन मस्क और डीओजीई को यूएसएड (यूएस एजेंसी फॉर इंटरनेशनल डेवलपमेंट) को बंद करने से रोक दिया है। जज का कहना है कि ऐसा करना शायद अमेरिका के संविधान का उल्लंघन है। कोर्ट ने यह भी कहा कि ट्रंप प्रशासन को यूएसएड के सभी कर्मचारियों को ईमेल और कंप्यूटर का एक्सेस वापस देना होगा। हालांकि, कोर्ट ने उन कर्मचारियों को वापस नौकरी पर रखने का आदेश नहीं दिया जिन्हें निकाल दिया गया था। कोर्ट ने डीओजीई को एजेंसी में और कटौती करने से भी रोक दिया है। एलन मस्क का यह बयान ऐसे समय में आया है जब उनकी इलेक्ट्रिक व्हीकल कंपनी टेस्ला के खिलाफ कई हफ्तों से विरोध प्रदर्शन चल रहे हैं। 18 मार्च को लास वेगास में टेस्ला के एक सर्विस सेंटर में आग लगने से टेस्ला की 5 कारों को नुकसान हुआ। पुलिस अधिकारी डोरी कोरेन ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा कि यह टेस्ला की एक बिल्डिंग पर जानबूझकर किया गया हमला था।

पैरों पर मार ली कुल्हाड़ी

नोएडा से बेंगलुरु गए कर्मचारी को अब पछतावा क्यों?

नई दिल्ली,20 मार्च (एजेंसियां)। नोएडा से बेंगलुरु नौकरी करने गए एक कर्मचारी को अब पछतावा हो रहा है। 30,000 रुपये की सैलरी बढ़ने के बाद भी वह शहर के इंफ्रास्ट्रक्चर, ट्रैफिक और रहने की स्थिति से निराश हैं। रेडिट पर एक पोस्ट में उन्होंने बेंगलुरु को गंदा, अव्यवस्थित, खराब सड़कों और सबसे खराब ट्रैफिक वाला शहर बताया। उन्होंने पानी की क्वालिटी, भीड़भाड़ और सांस्कृतिक मतभेदों के बारे में भी शिकायत की। नोएडा में एक साल काम करने के बाद उन्होंने बेंगलुरु में नौकरी करने का फैसला किया। लेकिन, अब उन्हें लग रहा है कि यह फैसला गलत था। ऐसा काम करके उन्होंने अपने पैरों पर खुद कुल्हाड़ी मार ली है। एक रेडिट यूजर ने लिखा कि बेंगलुरु गंदा है। व्यवस्थित भी नहीं है। सड़कें खराब हैं और ट्रैफिक बहुत ज्यादा है। पानी भी साफ नहीं है। शहर में बहुत भीड़ है और लोगों की संस्कृति अलग है।पोस्ट में कर्मचारी ने लिखा, 'नोएडा से बेंगलुरु आकर मुझे बहुत पछतावा हो रहा है।' उन्होंने आगे कहा कि प्रदूषण के बावजूद वह नोएडा को काम करने के लिए सबसे अच्छा टियर-1 शहर मानते हैं। उन्होंने दूसरों को चेतावनी दी। कुछ समय लें और सोचें- क्या मूव करना सही है? इस पोस्ट पर बहुत बहस हुई। एक यूजर ने कहा कि वह बेंगलुरु से नोएडा आकर पैसा तो बचा ही रहे हैं, तनाव भी कम किया है। उन्होंने लिखा, 'मुझे बेंगलुरु की तुलना में नोएडा में ज्यादा सुरक्षित महसूस होता है।' एक अन्य यूजर ने कहा कि बेंगलुरु में क्षेत्रीय पूर्वाग्रह के कारण उन्हें अजनबी जैसा महसूस हुआ। उन्होंने लिखा, 'मुझे ऐसा लगा कि मैं बेंगलुरु में मकान तो खरीद सकता हूं, लेकिन उसे कभी अपना नहीं कह सकता।'कुछ लोगों ने शहर की प्लानिंग की कमी की आलोचना की। एक यूजर ने लिखा, 'यहां कुछ भी ठीक से काम नहीं करता- सड़कें, फ्लाईओवर, मेट्रो, सब कुछ एक अराजक लूप में है।' उन्होंने इसे सबसे अनएप्लान्ड शहर बताया।एक स्थानीय निवासी ने बेंगलुरु के इंफ्रास्ट्रक्चर की समस्याओं को स्वीकार किया, लेकिन इसके लिए तेजी से और अनियोजित विकास को दोषी ठहराया। उन्होंने कहा, 'मुझे खेद है कि आपको भेदभाव महसूस हुआ। यह सिर्फ कुछ लोगों की वजह से है जिनकी हरकतों से पूरे समुदाय पर दाग लगता है।'

अडानी ग्रुप का एक डिसीजन और भरभरा गए वायर कंपनियों के शेयर

केईआई और पॉलीकैब में आई बड़ी गिरावट

नई दिल्ली,20 मार्च (एजेंसियां)। वायर और केबल बनाने वाली कई कंपनियों के शेयर में गुरुवार को बड़ी गिरावट आई। इसके शेयर में गिरावट का कारण अडानी ग्रुप का एक डिसीजन रहा। दरअसल, अडानी ग्रुप केबल और वायर के बिजनेस में एंट्री कर रहा है। इसके लिए अडानी ग्रुप की कंपनी अडानी एंटरप्राइजेज ने कुच कॉपर लिमिटेड नाम की नई कंपनी बनाई है। अडानी ग्रुप दूसरा बड़ा ग्रुप है जो केबल और वायर के बिजनेस में आया है। इससे पहले बिरला ग्रुप ने अल्ट्राटेक सीमेंट के जरिए इस सेक्टर में कदम रखा था।अडानी ग्रुप ने प्राणिता वेंचर्स के साथ मिलकर एक नई कंपनी बनाई है। इस कंपनी का नाम प्राणिता इकोकेबल्स लिमिटेड है। यह कंपनी मेटल प्रोडक्ट्स, केबल और वायर बनाएगी और बेचेगी।

कंपनी ने एक्सचेंज फाइलिंग में बताया कि कुच कॉपर लिमिटेड ने प्राणिता वेंचर्स प्राइवेट लिमिटेड के साथ मिलकर एक जॉइंट वेंचर कंपनी बनाई है। इस कंपनी का नाम प्राणिता इकोकेबल्स लिमिटेड। केईआई इस कंपनी में

50% की हिस्सेदारी रखेगी।

10 लाख रुपये की पूंजी से शुरुआत

पीईएल कंपनी 10 लाख रुपये की पूंजी से शुरू हुई है। इसमें 10 रुपये के 100000 शेयर हैं। केसीएल के पास 50% शेयर होंगे, जबकि बाकी शेयर प्राणिता वेंचर्स के पास रहेंगे। अडानी के इस बिजनेस में आने से पॉलीकैब, हैवेल्स, फिनोलेक्स केबल्स और केईआई इंडस्ट्रीज जैसी कंपनियों पर असर पड़ सकता है। शायद यही कारण है कि गुरुवार को इन कंपनियों के शेयर में गिरावट आ गई।अडानी ग्रुप के इस डिसीजन के बाद गुरुवार को केबल और वायर का कारोबार करने वाली कई कंपनियों के शेयर में गिरावट आई। दोपहर एक बजे तक इसमें 13 फीसदी से ज्यादा तक की गिरावट आ गई थी।

रिकॉर्ड निचले स्तर पर पहुंची तुर्की की करेंसी : 12% गिरकर 1 डॉलर के मुकाबले 42 पर, मेयर की गिरफ्तारी के बाद प्रदर्शन का असर

अंकारा,20 मार्च (एजेंसियां)। तुर्किये में चल रहे प्रदर्शन के कारण वहां की करेंसी लीरा 1 डॉलर के मुकाबले 42 के रिकॉर्ड निचले स्तर पर पहुंच गई। हालांकि, बाद में इसने दिन के अधिकांश नुकसान की भरपाई कर ली। लीरा 2.6% की गिरावट के साथ 37.665 डॉलर प्रति डॉलर पर बंद हुई। इससे बॉन्ड और स्टॉक मार्केट में भी गिरावट आई है।

बेंचमार्क स्टॉक इंडेक्स (एक्स यू100) करीब 9% गिर गया। ये चार वर्षों की सबसे बड़ी गिरावट है। बुधवार को लीरा 1 डॉलर के मुकाबले 42 के रिकॉर्ड निचले स्तर पर पहुंच गई थी।

हालांकि, अब इसमें थोड़ी रिकवरी आई है और ये 38 रुपए के करीब ट्रेड कर रही है।

इस्तांबुल के मेयर हिरासत में लेने के बाद प्रदर्शन

तुर्किये के प्रशासन ने राष्ट्रपति रेचेप तैयप एर्दोगन के मुख्य राजनीतिक प्रतिद्वंद्वी और इस्तांबुल के मेयर इकरम इमामुलू को 19 मार्च को हिरासत में ले लिया था। भ्रष्टाचार और एक आतंकवादी गुट की मदद करने सहित कई आरोपों में उन्हें हिरासत में लिया गया है। मुख्य विपक्षी दल- रिपब्लिकन पीपल्स पार्टी (सीएचपी) नेता ओजगुर ओजेल ने हिरासत को तख्तापलट की कोशिश बताया और विपक्षी दलों से एकजुट होने की अपील की।

ओजेल ने कहा, तुर्की, अगले राष्ट्रपति के खिलाफ एक तख्तापलट से गुजर रहा है। जो कुछ हुआ है, उसके बावजूद पार्टी रविवार (23 मार्च) को इमामुलू को अपने नेता के रूप में चुनेगी। वहीं तुर्की सरकार ने विपक्ष के सभी आरोपों को सिरे से नकारते हुए कहा कि देश की न्याय पालिका स्वतंत्र है। इस्तांबुल नगर पालिका मुख्यालय के सामने मेयर एक्रेम इमामोग्लू के समर्थक नारे लगाते हुए।

इकरम इमामुलू पर दो आरोप, इनकी जांचें भी बिठाई गई हैं...

पत्रकारों और कारोबारियों समेत कुल 100 लोगों पर नगरपालिका के जारी किए कुछ टेंडरों में आपराधिक गतिविधियों में शामिल होने का शक है। इमामुलू और छह अन्य लोगों पर कुर्दिस्तान वर्कर्स पार्टी (पीकेके) की मदद करने का आरोप है। तुर्की इसे एक आतंकवादी संगठन मानता हैं।

लोकप्रिय और प्रभावशाली नेता हैं इमामुलू

इमामुलू, सीएचपी के एक लोकप्रिय और प्रभावशाली नेता हैं। कुछ दिन बाद पार्टी उन्हें 2028 के राष्ट्रपति चुनाव के लिए पार्टी का आधिकारिक उम्मीदवार घोषित करने वाली थी। इमामुलू की हिरासत देश भर में विपक्षी नेताओं पर महीनों से चल रही कानूनी कार्रवाई की एक कड़ी है। आलोचक कहते हैं कि ऐसा इन नेताओं की चुनावी भविष्य को नुकसान पहुंचाने के लिया जा रहा है। एर्दोवान पिछले 22 साल से तुर्की की सत्ता पर काबिज हैं।

2028 में होना है तुर्किये में अगला चुनाव

तुर्किए में अगला चुनाव 2028 में होना है। पहले प्रधानमंत्री रहे एर्दोगन, राष्ट्रपति के रूप में अपना दूसरा कार्यकाल पूरा कर रहे हैं।

अगर वह फिर से चुनाव लड़ना चाहते हैं तो उन्हें अपना कार्यकाल पूरा होने से पहले जल्द चुनाव करवाना होगा या फिर संविधान में संशोधन करना होगा। एर्दोगन को पिछले साल अपनी सबसे बुरी चुनावी हार का सामना करना पड़ा था।

देशभर में हुए निकाय चुनावों में इमामोग्लु की सीएचपी ने तुर्की के उन बड़े शहरों और नगर पालिकाओं में जीत दर्ज की जो एर्दोगन के सत्तारूढ़ दल- एके पार्टी का गढ़ मानी जाती थीं।

दैनिक पंचांग

ग्रह गोचर

श्री कालयुक्त संवत्सर-विक्रम संवत-2081
शक संवत- 1946 सूर्य - उत्तरायण - ऋतु - बसंत
महावीर निर्वाण संवत -2051, हिजरी सन् -1444
कलियुग अवधि-432000 सूर्योदय - 06-24
भोग्य कलि वर्ष-426875 सूर्यास्त - 18-23
कलियुग संवत -5125 वर्ष,
कल्पारंभ संवत -1972949125
सृष्टि ग्रहारंभ संवत-1955885125
दिशाशूल - पश्चिम - दही खाकर घर से निकले
तिथि- सप्तमी 04-24 तक उपरान्त अष्टमी
मास - चैत्र कृष्ण ,शुक्रवार 21 March
नक्षत्र - ज्येष्ठा 01-45 तक उपरान्त मूल
योग - सिद्धि 18-41 तक उप व्यतिपात
करण- विष्टी 15-38 तक उप बव
विशेष:- शीतला सप्तमी बासोडा
व्रत -त्योहार - शीलरंग सप्तमी

ग्रह स्थिति

सूर्य-	मीन मे
चंद्र-	वृश्चिक मे
मंगल	मिथुन मे
बुध-	मीन मे
गुरु-	वृष मे
शुक्र-	मीन मे
शनि-	कुंभ मे
राहु-	मीन मे
केतु-	कन्या मे

लग्नारंभ समय

मीन....	06-03 बजे
मेष....	07-38 बजे
वृष....	09-24 बजे
मिथुन..	11-24 बजे
कर्क....	13-36 बजे
सिंह....	15-48 बजे
कन्या...	17-56 बजे
तुला....	20-00 बजे
वृश्चिक..	22-10 बजे
धनु.....	00-23 बजे
मकर....	02-30 बजे
कुंभ....	04-20 बजे

विशेष:- राशिफल गृहों के गोचर के आधार पर लिखा गया है।सूक्ष्म फलादेश के लिए जन्म पत्रिका की सूक्ष्म स्थिति जानने के लिए जन्म कुण्डली दिखाना चाहिए।

राहुकाल 10:53 से 12:23 तक

पं महेशचन्द्र शर्मा मो. 9247132654, 9167555710

दिन का चौघड़िया		रात का चौघड़िया	
चंचल	06:24 - 07:51 शुभ	रोग	18:23 - 19:55 अशुभ
लाभ.	07:51 - 09:22 शुभ	काल	19:55 - 21:24 अशुभ
अमृत	09:22 - 10:53 शुभ	लाभ.	21:24 - 22:54 शुभ
काल.	10:53 - 12:23 अशुभ	उत्पात	22:54 - 00:23 अशुभ
शुभ.	12:23 - 13:54 शुभ	शुभ	00:23 - 01:52 शुभ
रोग	13:54 - 15:25 अशुभ	अमृत	01:52 - 03:21 शुभ
उत्पात	15:25 - 16:55 अशुभ	चंचल	03:21 - 04:51 शुभ
चंचल	16:55 - 18:23 शुभ	रोग.	04:51 - 06:24 अशुभ

आपका राशिफल

मेष चू,चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ,

आप यह पता लगाने की कोशिश करें की कौन सी वस्तु या चीज़ से आप अपने आप से सर्वश्रेष्ट कार्य ले सकते है । यह आपकी विचारधाराओ और रचनात्मकता को भी अद्वितीय अनुभूति देगा । हालाँकि , आपके वित्तीय पुरस्कार में विलंब होगा , फिर भी अपने वित्तीय संकट से खुद को बचाने के लिए आपके पास पर्याप्त आय है। बस आप अपनी वस्तु को सरंक्षित कर के रखे और आप आसानी से विषम स्थिति से बाहर आ जायेंगे ।

वृष ई, उ, ए, जो, वा, वी, वू, वे, वो,

यह समय अपने कार्य क्षेत्र को दिशा या बदलाव देने का उचित समय है । कुछ समय से आप अस्थिरता को महसूस कर रहे है । नए और जोश भर देने वाले अवसर आज आपके सामने आ सकते है और आपको आशावादी रहकर उन्हें पकड़ना है । यह आपके कार्य क्षेत्र को पुनर्जीवित करने में मदद करेगा और आगे जाकर आपकी कार्य क्षेत्र संबंधित समस्याओं का निराकरण करने में मदद करेगा जो की आपके स्वास्थ्य पर भी प्रतिकूल प्रभाव डाल रहा है।

मिथुन का, की, कू, घ, ड, छ, के, को, ह,

आज आप सबसे बड़े ग्राहकों में से एक के साथ अपने सौदे को अंतिम रूप दे सकते है। उनके साथ एक लंबी अवधि के अनुबंध पर आप हस्ताक्षर करने के लिए आगे बढे । ग्राहक वित्तीय संसाधनों से परिपूर्ण है , जिससे की आपके कार्यालय पर वित्तीय बोझ कम होगा । आपको अगर ग्राहकों से और सौदे लेने है तो आपको अपने सामान्य ज्ञान का अच्छा परिचय देना होगा और साथ ही साथ उन्हें एक अच्छी व्यापारिक सेवा देनी होगी ।

कर्क ही, हू ,हे , हो, डा , डी, डू, डे, डो,

आज आपको कुछ छुपे हुए शत्रु से सावधान रहने की जरुरत है । यह व्यक्ति आपके साथ मित्रतापूर्ण भाव से आपके साथ काम कर रहा है पर जैसे की इतिहास अपने आप को दोहराता है यह व्यक्ति प्रतिकार कर सकता है या इसके विचार आपसे भिन्न हो सकते है ।आज आपके लिए ये अछा होगा की आप अपने सारे कार्यो का निष्पादन सही समय पर कर ले ताकि काम का कोई बोझ न रहे और आपको अपने मालिक की डाट न सुननी पड़े ।

सिंह मा, मी ,मू ,मे, मो, टा, टी ,टू ,टे,

संतुलन बनाना आज का प्रमुख विषय रहेगा और आप अपनी आय और व्यय के बीच एक संतुलन हासिल करने की कोशिश करेंगे । आप अपनी आय के पूरक के लिए एक दूसरी नौकरी की तलाश शुरू कर सकते है और आज आपको एक बहुत अच्छा अवसर मिलने की संभावना है। साथ ही साथ आप अपने व्यय को भी नियंत्रित करने के लिए खर्चों पर लगाम लगाएंगे ।

कन्या टो पा पी पू ष ण ठ पे पो

आज आप वह प्यार और ख़ुशी को पाएंगे जो आप अपने कार्य क्षेत्र में महसूस करते थे । बाहरी दबावों और काम के बोझ की वजह से वह ख़ुशी कही दब सी गई थी पर एक खुशनुमा पल आपको ये एहसास कराएगा की क्यों अपने ये कार्य क्षेत्र चुना था और ये क्यों आप पर इतना जचता है । आज का दिन अपने कार्य क्षेत्र में अपना रवैया बदलने के लिए अति उत्तम है ।

तुला रा, री, रू ,रे ,रो , ता, ती, तू ,ते,

शिक्षण, लेखन, पत्रकारिता और साहित्य में लगे हुए लोग आज अपने कैरियर में बड़ी सफलता का आनंद ले सकते हैं और आपको अपनी उपलब्धियों के लिए सम्मानित भी किया जा सकता है। आज का दिन शैक्षिक संस्थानों और निर्माण के कारोबार में निवेश के लिए उपयुक्त है। सामान्य रूप से आपको पिछले कुछ दिनों के तनाव को पीछे छोड़ कर एक शांत दिन का आनंद मिलेगा ।

वृश्चिक तो,ना,नी, ने,नू, नो, या, यी ,यू,

आप आगे बढ़ रहे हैं , वहीं लोग आपको नीचे खींचने की और कोशिश कर सकते हैं। मौखिक विवाद में न फंसे । आप प्रयास करे की आपका कार्य बोले । आप एक ऐसी स्थिति में पहुंच जायेंगे जहा से आपको नीचे धकेलना मुश्किल होगा । अच्छा काम करते रहे । अपने सहयोगियों और अधीनस्थों के साथ सौहार्द बनाए एवं मधुर वाक्यों का प्रयोग करे।

धनु ये, यो,भा, भी, भू धा ,फा, ढा, भे

अगर आपने व्यावसायिक साझेदारी को तोड़ने का फैसला कर लिया है , तो आप एक विनम्र और यथार्थवादी तरीके से ऐसा करे । आपको इस शीत युद्ध के अंत के लिए बहुत प्रभावी ढंग से और आसानी से संवाद स्थापित करना होगा और हो सके तो आपको ही पहल करनी होगी ताकि बर्फ कुछ पिघले । आपका ध्यान हर किसी चीज़ पर बहुत अच्छी तरह से केंद्रित है।

मकर भो, जा, जी, खो, खू, खे, खो, गा, गी

आज उन परियोजनाओं पर एक अच्छी शुरुआत करें जिनको लंबे समय से आपने ठंडे बस्ते में डाल दिया था । आप एक सफल भविष्य के लिए अच्छी नींव बिछाने में बस एक कदम दूर है। चीजों को आसान तरीके से ले और बिना सोच समझे कुछ भी न करे । अपने काम को करने के लिए दूसरों पर भरोसा न करे । जो उचित है , इस विचार को रखने में आप जरा भी न घबरायें ।

कुंभ गू, गे ,गो, सा, सी, सू, से, सो, दा,

एक परिवर्तन आपके कार्य क्षेत्र में आने का संकेत दे रहा है। आप अपनी नौकरी बदल सकते हैं या अपने कार्यालय में एक से दूसरे विभाग में आपका स्थानांतरण हो सकता है । यह ऐसी स्थिति होगी जिसको आप पसंद करेंगे और इन संभावनाओ का आप लंबे समय से इंतजार भी कर रहे थे , इसलिए आप को इन अवसरों का पूरा लाभ उठाने की जरुरत है , ताकि आपका करियर उचित दिशा में चलता रहे ।

मीन दी, दू,थ, झ, ञ, दे, दो, चा,ची

जिन परियोजनाओं पर आप लम्बे समय से लग्न के साथ कार्य कर रहे थे , इस मोड़ पर आप उन्हें सार्वजनिक कर सकते है, और इस तरह से आप अपनी शैली में मंच पर आगे की और शान से रुख कर सकते है । आपके काम की विशिष्टता आपको सम्मान दिलाएगी जब यह सबके सामने आएगी , हालांकि गोपनीयता बना कर रखना समय की मांग है ।

श्री पंचागुली ज्योतिष केन्द्र

छत्तीसगढ़ विधानसभा में महतारी वंदन का मुद्दा उठा

कांग्रेस विधायक बोले–बुजुर्गों को 500 काटकर दे रही सरकार, पीडीएस और कन्या विवाह योजना पर भी बहस

रायपुर, 20 मार्च (एजेंसियां)। छत्तीसगढ़ विधानसभा के बजट सत्र के 16वें दिन प्रश्नकाल में कई योजनाओं में अनियमितताओं पर बहस हुई। महतारी वंदन योजना, प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना और मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना को लेकर सवाल जवाब हुए। कांग्रेस विधायक ने कहा कि, बुजुर्गों को महतारी वंदन योजना में 500 रुपए काटकर मिल रहे हैं। पहले ही उन्हें 500 रुपए पेंशन के तहत मिलते थे जो अब ना मिलकर सिर्फ महतारी वंदन के 1000 रुपए मिल रहे।

मंत्री लक्ष्मी राजवाड़े ने दिया जवाब

महतारी वंदन योजना पर कांग्रेस विधायक अटल श्रीवास्तव ने सवाल उठाया था।

मंत्री लक्ष्मी राजवाड़े ने जवाब में कहा- अंतर की राशि दी जा रही है।

कांग्रेस विधायक संगीता सिन्हा ने पूछा- यह राशि किस तरह दी जा रही है?

मंत्री राजवाड़े का जवाब- पेंशनधारी महिलाओं को अंतर की राशि सरकार की ओर से दी जा रही है। (यानी अगर पहले 500 रुपए पेंशन के मिल रहे तो महतारी वंदन के 500 ही और मिलेंगे)

संगीता सिन्हा ने आगे सवाल किया- जिन महिलाओं का अभी तक रजिस्ट्रेशन नहीं हुआ, उनका रजिस्ट्रेशन कब तक पूरा होगा?

मंत्री राजवाड़े- सरकार इस पर ध्यान दे रही है और जल्द से जल्द रजिस्ट्रेशन प्रक्रिया पूरी की जाएगी।

दिव्यांगों के लिए बना कानून लागू नहीं होने का मुद्दा

विधानसभा में भाजपा विधायक प्रबोध मिंज ने दिव्यांगों के लिए पदों के चिन्हांकन को लेकर सवाल किया। उन्होंने पूछा कि 2016 में बने अधिनियम को अब तक क्यों लागू नहीं किया गया।

मंत्री लक्ष्मी राजवाड़े ने बताया कि दिव्यांगजन अधिनियम 2016 को लागू करने की प्रक्रिया जारी है, विभिन्न विभागों से अभिमत लेने की प्रक्रिया अभी भी चल रही है। इस पर प्रबोध मिंज ने सरकार पर तंज कसते हुए कहा कि 7 सालों से केवल प्रक्रिया ही चल रही है, लेकिन अब तक न पद चिन्हांकित हुए और न ही भर्ती हो सकी है। मंत्री लक्ष्मी राजवाड़े ने जवाब में कहा कि 24 विभागों से अभिमत आ चुका है, जबकि 26 विभागों से आना बाकी है। अभिमत आने के बाद इसे लागू किया जाएगा।

विधानसभा अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह ने निर्देश दिए कि विभाग दिव्यांगजनों के प्रति संवेदनशील हो और प्रक्रिया पूरी करने की समय-सीमा तय करे। नेता प्रतिपक्ष डॉ. चरणदास महंत ने सरकार पर हमला बोलते हुए कहा कि सरकार दिव्यांगजनों के साथ धोखा कर रही है, यह व्यवहार अमानवीय है।

विधानसभा अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह ने मुख्य सचिव को निर्देश दिए कि 6 महीने के भीतर पदों का चिन्हांकन किया जाए।

कांग्रेस विधायक विक्रम मंडावी ने पालना योजना को लेकर सवाल उठाया। उन्होंने बताया कि प्रदेश में 175 पालना केंद्र चल रहे हैं, लेकिन सरकार ने अभी तक कोई राशि खर्च नहीं की।

मंत्री लक्ष्मी राजवाड़े ने जवाब देते हुए बताया कि 15 फरवरी तक कोई राशि खर्च नहीं की गई, क्योंकि 40 फीसदी राज्यांश नहीं मिल पाया।

विपक्षी विधायकों ने सवाल उठाया कि यदि कोई राशि खर्च ही नहीं हुई, तो फिर योजना कैसे चल रही है?

विधानसभा अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह ने सरकार को निर्देश दिए कि इस संबंध में पूरी जानकारी उपलब्ध कराई जाए।

भाजपा विधायक भावना बोहरा ने प्रश्नकाल में कहा- कई लोगों को प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना का फायदा नहीं मिल रहा है और 5 किलो चांवल पाने से लोग वंचित है। कोरोना काल में 5 किलो अनाज कई लोगों को नहीं मिला, इस पर भी जांच होनी चाहिए।

मंत्री दयालदास बघेल- 97% लोगों को योजना का लाभ मिला है, और अब तक कोई शिकायत दर्ज नहीं हुई है।

भाजपा विधायक राजेश मूणत- कितने लोग वंचित रह गए थे?

मंत्री दयालदास बघेल- प्रश्न 23 से 25 के बीच का है, इसमें तत्काल जानकारी देना संभव नहीं।

नशे में धुत तीन युवकों से पिस्टल बरामद

पुलिस को देखकर की भागने की कोशिश, तलाशी में मिली जिंदा गोलियां

पलामू, 20 मार्च (एजेंसियां)। पलामू हुसैनाबाद थाना क्षेत्र में पुलिस ने एक बड़ी कार्रवाई करते हुए तीन संदिग्ध युवकों को गिरफ्तार किया है। महुअरी नहर मोड़ पुल पर नशा करते हुए मिले इन युवकों के पास से एक देसी पिस्टल और दो जिंदा गोलियां बरामद की गई हैं। थाना प्रभारी सोनू कुमार चौधरी के नेतृत्व में गुप्त सूचना के आधार पर की गई इस कार्रवाई में पुलिस टीम जैसे ही मौके पर पहुंची, तीनों युवक भागने लगे।

सशस्त्र बल की मदद से घेराबंदी कर तीनों को पकड़ लिया गया। आरोपियों में गणेश पूरी के विवेक कुमार उर्फ सिद्धार्थ सिंह, कजरात नावाडीह के अभिनंदन प्रजापति और नहर मोड़ जपला के शशि कुमार पासवान शामिल हैं।

तलाशी के दौरान शशि कुमार पासवान के बाएं कमर से देसी पिस्टल और दाहिने पैंट की जेब से दो जिंदा गोलियां मिलीं।

गोलियों के पेंदी पर केएफ 7.65 अंकित है। इसके अलावा तीनों के पास से अलग-अलग कंपनियों के मोबाइल फोन भी

बरामद किए गए। पिस्टल के बारे में पूछताछ में तीनों ने कोई संतोषजनक जवाब नहीं दिया। पुलिस ने मामला दर्ज कर तीनों आरोपियों को न्यायिक हिरासत में भेज दिया है।

95 हजार के गहने और नकदी चोरी

गली से होकर घर की बालकनी में घुसे चोर, ताला तोड़कर गहने और कैश उड़ाया

जमशेदपुर, 20 मार्च (एजेंसियां)। जमशेदपुर के उलीडीह थाना क्षेत्र में एक बड़ी चोरी की वारदात सामने आई है। जवाहरनगर रोड नंबर 13 बी निवासी मोहम्मद अखलाक खान के घर से चोर 95 हजार रुपए के गहने और 6 हजार रुपए नकद लेकर फरार हो गए।

अखलाक खान दो मंजिला मकान में अपनी पत्नी के साथ रहते हैं। चोर गली से होकर घर की बालकनी में घुसे। उन्होंने ग्रिल का ताला तोड़कर निचले तल्ले में प्रवेश किया। चोरों ने अलमारी तोड़कर सोने-चांदी के गहने और नकदी चुरा ली। घटना के समय घर में कोई अन्य सदस्य मौजूद नहीं था। सूचना मिलते ही उलीडीह पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिस आसपास लगे सीसीटीवी की फुटेज खंगाल रही है। अधिकारियों का कहना है कि जल्द ही आरोपियों को पकड़ लिया जाएगा। इस घटना से शहरवासियों में सुरक्षा को लेकर चिंता बढ़ गई है।

बेंगलुरु से झारखंड जा रहा था युवक, भिलाई में मौत

दोस्तों के साथ ट्रेन से निकला, अचानक भिलाई में उतरा, अगले दिन खेत में लाश मिली

भिलाई, 20 मार्च (एजेंसियां)। दुर्ग जिले के पुरानी भिलाई थाना क्षेत्र में मक्के के खेत के पास युवक का शव पड़ा मिला। युवक झारखंड का रहने वाला है और बेंगलुरु में काम करता था। वह अपने 2 दोस्तों के साथ ट्रेन से झारखंड जाने निकला था, लेकिन अचानक भिलाई में उतरा और अगले दिन उसकी लाश मिली है।

पुरानी भिलाई थाना प्रभारी महेश ध्रुव ने बताया कि, भिलाई के एक किसान पुनीत निर्मलकर के बेटे चूड़ामणि निर्मलकर ने बुधवार सुबह मामले की सूचना दी। उसने बताया कि सिरसा कला से देवबलौदा जाने वाले रास्ते में उसका खेत है, वहीं एक युवक का शव पड़ा हुआ है।

सूचना पर पुलिस टीम मौके पर पहुंची। छानबीन करने पर पता चला कि युवक झारखंड के सिमडेगा जिले का रहने वाला था। युवक का नाम आनंद साय है। वह 2 दोस्तों के साथ बेंगलुरु की एक फिशरीज कंपनी में काम करता था।

2 दिन पहले उसने परिजनों को बताया था कि वह दोस्त भक्तू पैंकरा और प्रकाश के साथ घर आ रहा है। भक्तू सुंदरगढ़ का रहने वाला है। तीनों ट्रेन से झारखंड के लिए निकले। इस दौरान दोस्तों ने परिजनों को फोन करके बताया कि आनंद लापता हो गया है।

दोस्तों ने परिजनों को बताया कि आनंद दुर्ग और रायपुर के बीच कहीं उतर गया है या किसी हादसे का शिकार हो गया है। इसके बाद परिजनों ने लोकल कुर्डेग पुलिस को सूचना दी। कुर्डेग पुलिस की सूचना के आधार पर भिलाई पुलिस ने युवक की पहचान की।

जानकारी के मुताबिक मंगलवार की रात उसे सिरसाकला स्थित एक होटल में नाश्ता करते हुए देखा गया था। उसके बाद अगले दिन बुधवार को उसकी लाश मक्के के खेत के किनारे पड़ी हुई मिली। इधर पुलिस ने पंचनामा कार्रवाई के बाद शव को पोस्टमॉर्टम के लिए लाल बहादुर शास्त्री अस्पताल भिजवा दिया है।

सूचना मिलने पर एसीसीयू क्राइम की टीम मौके पर पहुंची। टीम ने आसपास के क्षेत्रों में मृतक के बारे जानकारी जुटाने का प्रयास किया। टीम को गांव के लोगों ने बताया कि रात में कुत्ते काफी भौंक रहे थे। उन्होंने देखा कि कुत्ते किसी आदमी को दौड़ा रहे हैं और वो खेत की तरफ ही भागते हुए गया था।

मर्डर या हादसे के सवाल पर सीएसपी ने कहा कि युवक औंधे मुंह गिरा हुआ था, कंधे पर जलने के निशान मिले हैं। शरीर पर ऊपर कपड़ा नहीं था। हॉफ पेंट के जेब में टीशर्ट मिला है। अभी कुछ स्पष्ट नहीं कहा जा सकता। मामले की जांच की जा रही है।

बोकारो रेलवे स्टेशन पर अवैध वसूली पर विवाद

बोकारो, 20 मार्च (एजेंसियां)। बोकारो रेलवे स्टेशन पर पार्किंग शुल्क को लेकर विवाद गहरा गया है। झारखंड डीजल ऑटो ड्राइवर एसोसिएशन ने पार्किंग ठेकेदार पर अवैध वसूली का आरोप लगाया है। ऑटो चालकों का कहना है कि एक बार 15 रुपए का टिकट काटने के बाद भी ठेकेदार के लोग बार-बार पैसे मांगते हैं। नियम के अनुसार एक दिन में एक बार टिकट काटने के बाद दोबारा शुल्क नहीं लिया जाना चाहिए। एसोसिएशन ने आरोप लगाया कि ठेकेदार के लोग दबंगई दिखाते हुए स्टेशन के बाहर खड़ी गाड़ियों का फोटो खींचकर अवैध चालान काट रहे हैं। बालीडीह थाना में शिकायत दर्ज कराई गई है। ऑटो चालक संघ ने चेतावनी दी है कि अगर उनकी शिकायत पर कार्रवाई नहीं हुई तो वे आंदोलन करेंगे। दूसरी तरफ, पार्किंग ठेके की जिम्मेदारी संभाल रही मां भवानी कंस्ट्रक्शन के प्रतिनिधियों ने अवैध वसूली के आरोपों को खारिज किया है।

मामा ने ढाई-साल की भांजी का काटा गला

सालभर के भांजे पर भी ब्लेड से वार, बहन की दूसरी शादी से नाराज था

रायपुर, 20 मार्च (एजेंसियां)। रायपुर में एक भाई ने अपनी बहन की दूसरी शादी करने से नाराज होकर ढाई साल की भांजी की गला काटकर हत्या कर दी है। वह इतने में नहीं रुका, उसने सोते हुए भांजे के भी गले पर ब्लेड चला दिया। इस बात की भनक जैसे ही घर में मौजूद बहन को लगी उसने दौड़कर रोकने की कोशिश की। लेकिन आरोपी ने उस पर भी हमला कर दिया। मामले में पुलिस ने आरोपी युवक को बिहार से गिरफ्तार कर लिया है।

ये पूरी घटना रायपुर से सटे गोबरा नवापारा थाना क्षेत्र के दम्मानी कॉलोनी की है। नवापारा थाना प्रभारी जितेंद्र एसैया ने बताया कि घटना 10 मार्च की है। जितेश ताती पत्नी सोनी कुमारी और दो बच्चों के साथ दम्मानी कॉलोनी के किराए के मकान में रहता है।

सोनी कुमारी ने पहले पति के मारपीट से तंग आकर 2 साल पहले जितेश से दूसरी शादी की थी। पहले पति से सोनी की एक ढाई साल की बेटी सुरुचि है, जबकि 1 साल का बेटा शिवम कुमार, दूसरे पति जितेश का है।

10 मार्च को जितेश ट्रक ड्राइवरी के काम में गया था। इस दौरान सोनी कुमारी ने अपने पति जितेश ताती को फोन करके बताया कि बिहार से उसका भाई साहेब कुमार ताती आया है। उसे मायके ले जाना चाहता है। वह हमारी दूसरी शादी से नाराज है और झगड़ा भी कर रहा था। फिलहाल उसे और बच्चों को खाना खिलाकर वह बर्तन मांज रही थी। बच्चे सो रहे थे। तभी अचानक भीतर से जोरदार बच्चों के रोने की आवाज आई। वह दौड़कर भीतर गई। सोनी ने देखा कि भाई साहेब ताती के हाथों में ब्लेड था। उसने ढाई और 1 साल के बच्चे सुरुचि और शिवम के गले पर ब्लेड से वारकर बेरहमी से काट दिया था। बिस्तर के चारों तरफ खून बिखरा हुआ था। सोनी यह देखकर डर गई। उसने भाई को रोकने की कोशिश की तो वह उसे भी जान से मारने के लिए ब्लेड से हमला कर दिया। ब्लेड सोनी के पीठ में लगा, जिससे लंबा कट लग गया।

इस वारदात के बाद आरोपी साहेब मौके से फरार हो गया। शोरगुल की आवाज सुनकर पड़ोसी जब घर के भीतर पहुंचे। तो दोनों बच्चे और मां बुरी तरह घायल थे। जिन्हें अस्पताल पहुंचाया गया, लेकिन इलाज के दौरान बच्ची की मौत हो गई।

पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक, इस घटना के बाद क्राइम ब्रांच और गोबरा नवापारा थाने की टीम जमुई जिला, बिहार के लिए रवाना हुई। आरोपी इतना शातिर था कि वह लगातार अपना लोकेशन बदल रहा था।

हालांकि पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर लिया। आरोपी साहेब कुमार ताती को पुलिस ने हत्या के मामले में न्यायिक रिमांड पर जेल भेज दिया है।

सिलेंडर ब्लास्ट से 7 झोपड़ियों में लगी आग

साहिबगंज, 20 मार्च (एजेंसियां)। साहिबगंज में नगर थाना क्षेत्र स्थित सूर्या नर्सिंग होम के सामने गुरुवार तड़के भीषण आग लग गई। इस घटना में सात झोपड़ियां जलकर राख हो गईं। लाखों का सामान और आभूषण खाक हो गए। आग में झुलसी एक वृद्ध महिला का सूर्या नर्सिंग होम में इलाज चल रहा है। घटना के वक्त सभी लोग गहरी नींद में थे। इसी बीच गणेश शर्मा की चाय दुकान में अचानक आग भड़क उठी। आग तेजी से फैली और सिलेंडर तक पहुंच गई। सिलेंडर में धमाका हुआ। तेज धमाके से लोगों की नींद खुली और अफरातफरी मच गई। इसी बीच आग ने सात झोपड़ियों को अपनी चपेट में ले लिया। पीड़ितों के अनुसार, दो घंटे तक आग जलती रही। इस दौरान दो सिलेंडर और एक बैटरी में भी धमाका हुआ। धमाका इतना तेज था कि सिलेंडर का ऊपरी हिस्सा करीब 100 मीटर दूर जा गिरा।

महिला आयोग ने एक चौंकाने वाला फैसला दिया

बुआ के भड़काने पर युवक पत्नी को करता था परेशान, आयोग ने बुआ को ही सुधरने भेज दिया एक महीने के लिए नारी निकेतन

रायपुर, 20 मार्च (एजेंसियां)। छत्तीसगढ़ राज्य महिला आयोग में बुधवार को महिला उत्पीड़न से संबंधित मामलों की सुनवाई के दौरान आयोग ने एक चौंकाने वाला फैसला दिया। जिस बुआ के कहने पर पति अपनी पत्नी को प्रताड़ित करता था उसे ही सुधारने के लिए एक महीने तक नारी निकेतन में रहने को कहा गया है। ताकि पति पत्नी के बीच संबंध पहले से बेहतर हो सके।

मामलों की सुनवाई के दौरान आवेदिका ने बताया कि उसका पति अपनी बुआ के भड़काने पर उसे लगातार शारीरिक व मानसिक रुप से प्रताड़ित करता था। वो कई बार अपने पति को समझा चुकी थी, लेकिन पति बुआ की ही बातों को सच मानता था। पत्नी को प्रताड़ित करने के साथ ही उसके तीनों बच्चों को भी मां से छिन लिया गया। इसके बाद भी उसकी बुआ सास लगातार उससे विवाद करती रहती थी। यह विवाद एक बार इतना बढ़ा कि पति को जेल तक जाना पड़ गया।

तीन दिन पहले ही उसका पति जेल से छूटा है। लेकिन जेल से आने के बाद भी उसका व्यवहार नहीं बदला। वो वही करता तो जो उसकी बुआ कहती। सभी पक्षों को सुनने के बाद आयोग ने कहा कि आवेदिका का दाम्पत्य जीवन उसकी बुआ सास की वजह से टूटने की कगार पर आ चुका है। इसलिए बुआ सास को ही एक माह के लिए नारी निकेतन भेजा जाए। ताकि वो वहां रहकर सुधर सके। एक महीने तक घर में बुआ सास नहीं रहेगी तो पति-पत्नी को भी अपनी बातों को समझाने में आसानी होगी। सुनवाई के दौरान छत्तीसगढ़ राज्य महिला आयोग की अध्यक्ष डॉ. किरणमयी नायक और सदस्यगण लक्ष्मी वर्मा एवं सरला कोसरिया मौजूद थे।

भतीजे ने बैंक मैनेजर के साथ मिलकर धोखा दिया एक प्रकरण में महिला ने बताया कि उसके भतीजे ने बैंक मैनेजर के साथ मिलकर उसके नाम की जमीन गिरवी रखकर 10 लाख का लोन ले लिया है। पिछली सुनवाई में महिला आयोग के निर्देश पर आरोपी तत्कालीन बैंक मैनेजर, महिला के भतीजे और एक अन्य गारंटर के खिलाफ एफआईआर कराई गई थी। पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार भी कर लिया। एक अन्य मामले में आवेदिका ने बताया कि उसकी शादी 2006 में हुई थी। उसका एक 18 साल का लड़का व 16 साल की बेटी है। उसके पति ने आवेदिका व बच्चों को बीते पांच साल से छोड़ दिया है।

पांच साल की बच्ची की हत्या

जामताड़ा, 20 मार्च (एजेंसियां)। जामताड़ा जिले के मिहिजाम थाना क्षेत्र में 5 साल की बच्ची की हत्या के मामले में ग्रामीणों ने गुरुवार को थाने का घेराव किया। दो माह पूर्व पिपला गांव की मति मुर्मू नामक बच्ची का शव गांव के तालाब से बरामद हुआ था। पुलिस ने बच्ची के पिता की शिकायत पर एक आरोपी को गिरफ्तार किया है।

ग्रामीणों का आरोप है कि पुलिस अन्य आरोपियों की गिरफ्तारी में लापरवाही बरत रही है। प्रदर्शनकारियों ने थाना के बाहर पुलिस प्रशासन के खिलाफ नारेबाजी की।

एक करोड़ के जेवरात की चोरी करने वाला गिरफ्तार

बस में सवार यात्री से की थी चोरी, धनबाद पुलिस ने मध्य प्रदेश से दबोचा

धनबाद, 20 मार्च (एजेंसियां)। धनबाद की गोविंदपुर पुलिस ने एक करोड़ रुपए के जेवरात चोरी के मामले में बड़ी सफलता हासिल की है। पुलिस ने मध्य प्रदेश के धार जिले से अकरम खान नामक अपराधी को गिरफ्तार किया है।

आरोपी के पास से एक करोड़ के सोने-चांदी और हीरे के आभूषण बरामद किए गए हैं। इसके अलावा राडो कंपनी की दो डायमंड घड़ियां, एक टाइटन घड़ी और दो लाख रुपए नकद भी मिले हैं। डीएसपी मुख्यालय शंकर कामती ने बताया कि 19 मार्च को मोतिर्जरहमान अपनी बेटी की शादी के लिए कोलकाता से जेवरात खरीदकर मुजफ्फरपुर जा रहे थे। गोविंदपुर के न्यू मां तारा एसी फैमिली रेस्टोरेंट के पास बस रुकी। जब मोतिर्जरहमान अपने बेटे के साथ खाना खाने गए, तब अकरम खान ने बस में रखे जेवरात के बैग को चुरा लिया। मामले की गंभीरता को देखते हुए एक विशेष जांच टीम (एसआईटी) का गठन किया गया। धनबाद पुलिस की टीम मध्य प्रदेश गई। वहां धार जिले के मनावर थाना क्षेत्र के खेरवा जागीर से एक व्यक्ति की निशानदेही पर अकरम खान को चोरी के सामान के साथ गिरफ्तार कर लिया गया।

भारत लाया जाएगा अमन साव गैंग का गुर्गा

अजरबैजान में गिरफ्तार हुआ था सुनील सिंह मीणा, झारखंड पुलिस करेगी पूछताछ

रांची, 20 मार्च (एजेंसियां)। अमन साहू (अब मृत) गिरोह का गुर्गा सुनील सिंह मीणा उर्फ मयंक सिंह को अब अजरबैजान से भारत लाया जाएगा। इसकी तैयारी की जा रही है। झारखंड पुलिस इसे ही मयंक सिंह बताती है। अजरबैजान ने सुनील को प्रत्यर्पण संधि के तहत भारत को सौंपने पर सहमति दे दी है। अजरबैजान पुलिस ने उसे अक्टूबर 2024 में वीजा रिन्युअल में दो घंटे देरी हो जाने पर पकड़ा था। उसे वहां डिटेंशन सेंटर में रखा गया है।

पुलिस मुख्यालय से मिली जानकारी के अनुसार अजरबैजान जैसे ही सुनील को भारत को सौंपेगा, झारखंड पुलिस तत्काल उसे यहां लाएगी और पूछताछ करेगी। क्योंकि उसपर झारखंड के विभिन्न थानों में कई मामले दर्ज हैं। पुलिस का दावा है कि सुनील सिंह मीना ही मयंक सिंह है। वह अमन साहू गिरोह का सबसे खास गुर्गा है। वह अमन के सोशल मीडिया अकाउंट से अपने अकाउंट को टैग कर हर घटना

की जिम्मेदारी लेता है। इससे पहले झारखंड एटीएस के अनुरोध पर सुनील के खिलाफ रेड कॉर्नर नोटिस भी जारी हो चुका है।

मयंक सिंह के खिलाफ न केवल रांची बल्कि चतरा, लातेहार, गिरिडीह, हजारीबाग, रामगढ़, पलामू सहित अन्य जिलों में करीब 43 मामले दर्ज हैं। चाहे लातेहार में रंगदारी को लेकर फायरिंग कराने की बात हो, धमकी देना हो या फिर रंगदारी मांगने का मामला, सब में मयंक का नाम सामने आया है।

राजधानी रांची के तीन थाने में भी मयंक के खिलाफ मामला दर्ज है। 2 सितंबर को कांग्रेस नेता ईश्वर आनंद कुमार ने पुंदाग ओपी में मयंक सिंह के खिलाफ एक करोड़ रुपए की रंगदारी मांगने को लेकर मामला दर्ज कराया है।

वहीं, 7 अक्तूबर को एक मामला गोंदा थाने में दर्ज हुआ है। इसमें कांके रोड के कुछ बड़े व्यवसायियों से मयंक सिंह के नाम पर फोन कर रंगदारी मांगने की बात सामने आई थी। इसके अलावा अरगोड़ा थाने में एक जमीन कारोबारी से अमन साव गिरोह के मयंक सिंह के नाम पर पांच करोड़ रुपए मांगने को लेकर मामला दर्ज हुआ है।

सुनील सिंह मीणा ऊर्फ मयंक सिंह को अमन साव और लॉरेंस बिश्नोई के बीच की अहम कड़ी कहा जाता है। जब अजरबैजान में सुनील सिंह मीणा की गिरफ्तारी हुई थी तब मयंक सिंह ने नाम से फेसबुक पर पोस्ट लिखा गया था, जिसमें उसने बताया था कि कुछ माध्यमों से पता चला कि सुनील कुमार मीणा और मयंक सिंह को एक समझा और बोला जा रहा है। जो सही नहीं है। सुनील मीणा सिर्फ मेरा मित्र है। पोस्ट में दावा किया गया था कि मैं आज भी आजाद हूं और रहूंगा।

झारखंड के कुख्यात अपराधी अमन साव का लॉरेंस विश्नोई के साथ संपर्क की बात एनआईए की जांच से सामने आया था। मयंक सिंह को इन दोनों के बीच की कड़ी माना जाता है। इंटरनेट कॉल के जरिए कारोबारियों को धमकी देना मयंक सिंह का प्रमुख काम है।

झारखंड के लिए वह यह काम अमन साव के लिए करता है। अमन साव अब नहीं रहा। एक मामले में पूछताछ के दौरान अमन ने बालूमाथ पुलिस के समक्ष चौंकाने वाला खुलासा किया था।

उसने बताया था कि देशभर में सुर्खियां बटोरने वाले गैंगस्टर लॉरेंस बिश्नोई से उसका संबंध है। बिश्नोई से वह सोशल मीडिया के जरिए बातचीत करता है।

फायरिंग के बाद दहशत

वाट्सएप मैसेज से शुरू हुआ विवाद, तीन आरोपी गिरफ्तार, पिस्टल और खोखा बरामद

बोकारो, 20 मार्च (एजेंसियां)। बोकारो में देर रात अपराधियों ने अंधाधुंध फायरिंग कर दहशत फैला दी। चास मुफ्फसिल थाना क्षेत्र के पत्थर कट्टा में हुई इस घटना में पुलिस ने तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया है।

घटना रात साढ़े 11 बजे की है। अपराधी बाइक और एसयूवी कार से आए थे। पीड़ित के चाचा प्रफुल्ल गोराई के अनुसार, किसी ने उनके भतीजे को वाट्सएप मैसेज कर तेलमोचो पुल के पास बुलाया था। वहां विवाद के बाद अपराधी घर पहुंच गए। जब घर के लोग सो रहे थे, तभी बाहर से चिल्लाने की आवाजें आईं। दरवाजा खोलने पर देखा कि पीड़ित का भतीजा किसी से बहस कर रहा था। अचानक अपराधियों ने फायरिंग शुरू कर दी। मौके पर मौजूद लोग किसी तरह जान बचाकर भागे। ग्रामीणों के जमा होने की आशंका से अपराधी भागने लगे। इसी दौरान सूचना पाकर चास मुफ्फसिल थाना पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिस ने बाइक सवार तीन अपराधियों को पकड़ लिया। उनके पास से एक पिस्टल और तीन खोखे बरामद किए गए। कुछ अपराधी अंधेरे का फायदा उठाकर भागने में सफल रहे।

तीन दिन आंधी-बारिश और ओले का अलर्ट

रायपुर, बिलासपुर, दुर्ग में गरज-चमक के साथ पड़ेंगी बौछारें, बस्तर में 22 मार्च को बदला रहेगा मौसम

रायपुर, 20 मार्च (एजेंसियां)। छत्तीसगढ़ के रायपुर, बिलासपुर, दुर्ग और सरगुजा संभाग के जिलों में शुक्रवार गरज-चमक के साथ बौछारें पड़ सकती हैं।

कई हिस्सों में तेज आंधी चल सकती है और ओले गिर सकते हैं। वहीं बिलासपुर, रायपुर, दुर्ग और बस्तर संभाग के जिलों में 22 मार्च को हल्की बारिश होने का अलर्ट है। इसके बाद तापमान में 2 से 4 डिग्री तक गिरावट हो सकती है।

मौसम वैज्ञानिकों के मुताबिक दक्षिण छत्तीसगढ़ से लेकर मध्य ओडिशा तक टर्फ लाइन (द्रोणिका) बनी हुई है। इसके अलावा वेस्टर्न डिस्टरबेंस के असर से आंधी, बारिश की स्थिति बन रही है। बुधवार को रायगढ़ 39.8 डिग्री के साथ प्रदेश में सबसे गर्म रहा।

प्रदेश में 19 मार्च 2025 को मौसम पूरी तरह ड्राई रहा। रायपुर और बिलासपुर में टेम्प्रेचर 38°C रिकॉर्ड किया गया, जबकि सबसे कम तापमान अंबिकापुर में 14°C दर्ज किया गया।

रायपुर में भी अगले दो दिन बादल छाने और गरज-चमक के साथ हल्की बारिश होने की संभावना है।

जस्टिन ट्रूडो के जाते ही लाइन पर आया कनाडा

नई दिल्ली से संबंध सुधारने को बेकरार, भारत उठा सकता है बड़ा कदम

ओटावा, 20 मार्च (एजेंसियां)। कनाडा में जस्टिन ट्रूडो के प्रधानमंत्री पद से हटने के बाद अब नई भारत-कनाडा संबंध में सुधार के संकेत दिखाई देने लगे हैं। रिपोर्ट के अनुसार, दोनों देशों की सुरक्षा एजेंसियों के बीच फिर से संपर्क शुरू हो गया है और नए उच्चायुक्तों की नियुक्ति की संभावना पर नजर गड़ाए हुए हैं। इसके पहले खालिस्तानी आतंकवादी हरदीप सिंह निज्जर की जून 2023 में हत्या के बाद राजनयिक तनाव पैदा हो गया था, जिसने दोनों देशों के संबंधों को निचले स्तर पर पहुंचा दिया था। कनाडा के पूर्व प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो ने भारत पर हत्या में शामिल होने का बेबुनियाद आरोप लगाया था।

दोनों देशों के बीच राजनयिक और सुरक्षा चैनलों के माध्यम से दिसम्बर के आसपास चर्चा फिर से शुरू हुई। इसके पहले अक्टूबर में दोनों पक्षों के बीच रिश्तों में तनाव आ गया। भारत ने अपने उच्चायुक्त और 5 अन्य राजनियकों को वापस बुला दिया था, जिन्हें निज्जर की हत्या में पर्सन ऑफ इंटरेस्ट घोषित किया गया था। बदले में भारत ने 6 कनाडाई राजनियकों को निष्कासित कर दिया था।

अब एक बार फिर दोनों देश राजनयिकों की तैनाती पर विचार कर रहे हैं। ओट्टावा में राजदूत पद के लिए नई दिल्ली ने कुछ नामों पर विचार किया है। एचटी की रिपोर्ट के अनुसार, नियुक्ति के लिए स्पेन में भारत के राजदूत दिनेश के पटनायक का नाम इस पद के लिए सबसे आगे हैं। पटनायक 1990 बैच के भारतीय विदेश सेवा के अधिकारी हैं और भारत के वरिष्ठ राजनयिकों में से एक हैं। वे 2016-18 के दौरान ब्रिटेन में उप-राजदूत के रूप में काम कर चुके हैं।

ब्रिटेन में काम करने के चलते उनके पास खालिस्तान मामले को लेकर भी समझ का अनुभव है, जो कनाडा में नियुक्ति के लिए अहम है। मामले से परिचित लोगों ने बताया है कि नई दिल्ली में उच्चायुक्त पद के लिए कनाडा की तरफ से क्रिस्टोफर कूटर का नाम है, जो हाल तक दक्षिण अफ्रीका में राजदूत थे। कूटर का नाम कनाडा ने पहले ही प्रस्तावित किया था। इसे साल 2024 के मध्य में भारत की तरफ से भी सैद्धांतिक मंजूरी मिल गई थी।

पाकिस्तान के परमाणु बम पर बीएलए की नजर

पाकिस्तानी एक्सपर्ट ने जताया बड़ा खतरा

दावा- बलूचिस्तान में लहरा रहा भारत का झंडा

इस्लामाबाद, 20 मार्च (एजेंसियां)। बलूचिस्तान की आजादी की मुहिम चलाने वाले हथियारबंध विद्रोही समूह बलूचिस्तान लिबरेशन आर्मी ने हाल ही में अपने हमलों से पाकिस्तान को हिलाकर रख दिया है। बीएलए के एक के बाद एक हमलों ने पाकिस्तानी सेना और सुरक्षाबलों की नींद उड़ा दी है। इस बीच एक हैरान करने वाली जानकारी सामने आई है कि बलूच विद्रोहियों के निशाने पाकिस्तान के परमाणु बम हैं। पाकिस्तान के पत्रकार मंसूर अली खान ने ये दावा किया है। उन्होंने बताया कि बलूच अलगाववादी पाकिस्तान के न्यूक्लियर परमाणु को निशाने पर ले रहे हैं।

मंसूर अली खान ने नीदरलैंड में बलूचिस्तान की आजादी के समर्थकों का एक वीडियो अपने चैनल पर शेयर किया है, जिसमें पाकिस्तान के परमाणु बम को खत्म करने की मांग की जा रही है। मंसूर अली खान ने इसके अलावा एक और वीडियो किसी अन्य देश का ही दिखाया है। इस वीडियो में पाकिस्तानी परमाणु बम को खतरा बताया जा रहा है। हालांकि, खान ने इस वीडियो को एक साल पुराना बताया है, लेकिन साथ ही सवाल खड़े किए हैं।

बलूच विद्रोहियों का भारत कनेक्शन

मंसूर अली खान ने बलूच अलगाववादियों पर भारत से जुड़े होने का आरोप तक लगा दिया। इसके लिए उन्होंने एक एक्स अकाउंट पर दो कथित बलूच बच्चों को भारत और संभावित आजाद बलूचिस्तान का झंडा पकड़े दिखाया गया है। दिलचस्प बात ये है कि मंसूर अली खान खुद ही स्वीकार भी करते हैं कि उन्हें पता नहीं है कि ये झंडा किस इलाके का है, लेकिन इसके आधार पर वे भारत को बलूचिस्तान के आजादी आंदोलन में शामिल बता देते हैं।

सोने का वजन 1,000 मिट्रिक टन, कीमत 83 अरब डॉलर

चीन में मिला गोल्ड का महाभंडार, बदल जाएगी ड्रैगन की किस्मत

बीजिंग, 20 मार्च (एजेंसियां)। चीन में सोने का विशाल भंडार मिला है। चीन में यह खोज बीते साल के आखिरी महीनों में हुई है। खोजे गए इस भंडार में करीब 1,000 मिट्रिक टन सोना होने का अनुमान है। हालांकि इस खोज पर कुछ सवाल भी उठे हैं। अगर ये दावा सही साबित होता है तो फिर यह अब तक खोजा गया सोने का सबसे बड़ा भंडार होगा। यह दक्षिण अफ्रीका की साउथ डीप माइन से भी बड़ा गोल्ड रिजर्व बन जाएगा। चीन में मिले सोने के इस भंडार की कीमत 83 अरब अमेरिकी डॉलर (600 अरब युआन) आंकी गई है। इससे चीन की अर्थव्यवस्था को बड़ी ताकत मिलेगी। साथ ही दुनियाभर में सोने की कीमतें भी प्रभावित हो सकती है।

साइंस अलर्ट की रिपोर्ट के मुताबिक, चीन के हुनान प्रांत के भूवैज्ञानिक ब्यूरो ने पिंगजियांग काउंटी में 2 किलोमीटर की गहराई में 40 गोल्ड वाइन्स खोजी हैं। माना जा रहा है कि इनमें 300 मिट्रिक टन सोना है। 3डी मॉडलिंग से पता चला है कि तीन किलोमीटर की गहराई तक और भी भंडार मिल सकते हैं, इससे सोने का भंडार 1,000 मिट्रिक तक पहुंच सकता है। हुनान प्रांत के भूवैज्ञानिक आपदा सर्वेक्षण और निगरानी संस्थान के तकनीशियन पिंगजियांग काउंटी में सोने की खान के नमूनों जांच रहे हैं। ब्यूरो के खोजकर्ता चेन रुलिन ने अपने बयान में कहा, 'पत्थरों में ड्रिल किए गए तो रॉक कोर में सोना दिखाई दिया। कोर के नमूनों से पता चलता है कि हर मिट्रिक टन अयस्क में 138 ग्राम तक सोना है। यह बहुत अच्छी गुणवत्ता है। भूमिगत खानों से निकाले गए अयस्क में 8 ग्राम से ज्यादा सोना होने पर उसे उच्च श्रेणी का माना जाता है।

चीन को सोने के खनन में काफी अहम योगदान है। विशेषज्ञों का मानना है कि चीन में अभी भी सोने के कई भंडार छिपे हुए हैं। चीन पहले से ही दुनिया के सोने के बाजार में सबसे आगे है। चीन का खनन उद्योग दुनिया के उत्पादन का करीब 10 प्रतिशत योगदान करता है। साल 2024 की शुरुआत में चीन के पास 2,000 टन से ज्यादा सोना था।

चीन में दुर्लभ खनिज तत्वों (रेयर अर्थ एलिमेंट) के भंडार की भी खोज हुई है। इससे चीन को इलेक्ट्रिक वाहनों और रक्षा क्षेत्र में दबदबा बढ़ जाएगा।

चीन के भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण (सीजीएस) ने बताया है कि युन्नान प्रांत में ये खोज हुई है।

अमेरिका में भारतीय छात्र बदर खान सूरी गिरफ्तार

हमास के लिए प्रोपेगेंडा फैलाने का आरोप, वापस भारत भेजा जा सकता है

वॉशिंगटन, 20 मार्च (एजेंसियां)। अमेरिका के इमिग्रेशन अधिकारियों ने सोमवार रात एक भारतीय छात्र बदर खान सूरी को वर्जीनिया से गिरफ्तार किया है। सूरी पर अमेरिका में हमास के समर्थन में प्रोपगेंडा फैलाने का आरोप है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प विदेश नीति का विरोध करने वाले छात्र कार्यकर्ताओं पर कार्रवाई कर रही है।

सूरी को भी इसी कार्रवाई के तहत गिरफ्तार किया गया है। उस पर इजराइल का विरोध करने के आरोप लगे हैं। सूरी स्टूडेंट एक्सचेंज प्रोग्राम के तहत अमेरिका की जॉर्जटाउन यूनिवर्सिटी का छात्र है। वह सेंटर फॉर मुस्लिम-क्रिश्चियन अंडरस्टैंडिंग में पोस्टडॉक्टोरल फैलो के रूप में पढाई कर रहा है।

अमेरिकी गृह सुरक्षा विभाग में सहायक सचिव ट्रिशिया मैकलॉघलिन ने X पर पोस्ट कर आरोप लगाया कि सूरी सक्रिय तौर पर हमास का प्रचार कर रहा था और सोशल मीडिया पर यहूदी विरोधी भावना को बढ़ावा दे रहा था। उसे अमेरिका से निर्वासित किया जा सकता है। अमेरिका की कोलंबिया यूनिवर्सिटी में पढ़ रही भारतीय छात्रा रंजनी श्रीनिवासन का इसी महीने वीजा रद्द कर दिया गया था। अमेरिकी गृह सुरक्षा विभाग (डीएचएस) ने आरोप लगाया है कि श्रीनिवासन 'हिंसा-आतंकवाद को बढ़ावा देने' और हमास का समर्थन करने वाली गतिविधियों में शामिल थीं। वीजा रद्द होने के बाद रंजनी अमेरिका छोड़ चुकी है। डीएचएस के मुताबिक रंजनी को एफ-1 स्टूडेंट वीजा के तहत कोलंबिया यूनिवर्सिटी के अर्बन प्लानिंग में पीएचडी करने के लिए एडमिशन मिला था। अमेरिकी विदेश विभाग ने 5 मार्च को उनका वीजा निरस्त कर दिया था। इसके बाद रंजनी ने 11 मार्च को अमेरिका छोड़ दिया। डीएचएस की सचिव क्रिस्टी नोएम ने कहा कि यदि कोई व्यक्ति हिंसा और आतंकवाद का समर्थन करता है, तो उसे इस देश

में रहने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए। ट्रम्प प्रशासन ने मार्च की शुरुआत में कोलंबिया यूनिवर्सिटी के खिलाफ सख्त कदम उठाते हुए 400 मिलियन अमेरिकी डॉलर (करीब 33 अरब रुपए) के अनुदान को रद्द कर दिया था। प्रशासन ने यूनिवर्सिटी पर यहूदी छात्रों के हो रहे उत्पीड़न को रोकने में विफल रहने का आरोप लगाया है। अमेरिकी शिक्षा विभाग, स्वास्थ्य एवं मानव सेवा विभाग, न्याय विभाग और सामान्य सेवा प्रशासन की जॉइंट टास्क फोर्स टु कॉम्बैट एंटी-सेमिटिज्म ने यह कार्रवाई की। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने यहूदी छात्रों की सुरक्षा करने में विफल रहने और विरोध-प्रदर्शनों की इजाजत देने वाली यूनिवर्सिटीज को फेडरल ग्रांट (संघीय वित्तीय सहायता) न देने की चेतावनी दी है। कोलंबिया यूनिवर्सिटी ज्यूडिशियल बोर्ड ने गाजा को लेकर हुए विरोध-प्रदर्शन के दौरान हैमिल्टन हॉल पर कब्जे में शामिल छात्रों पर सख्त कार्रवाई की है। अमेरिकी इमिग्रेशन विभाग के अधिकारियों ने वेस्ट बैंक की एक फिलिस्तीनी छात्रा लेका कोर्डिया को गिरफ्तार किया था। लेका 2022 से एक्सपायर स्टूडेंट वीजा पर अमेरिका में रह रही थी। उसे अप्रैल 2024 में कोलंबिया यूनिवर्सिटी में हमास समर्थक प्रदर्शनों में शामिल होने की वजह से हिरासत में लिया गया था।

इसके अलावा ट्रम्प प्रशासन ने कोलंबिया यूनिवर्सिटी में ग्रेजुएशन के स्टूडेंट महमूद खलील को गिरफ्तार किया है।

इजराइल ने गाजा में टैंक उतारे, जमीनी हमले शुरू

रक्षामंत्री काट्ज बोले- बंधक नहीं लौटाए तो हमास को पूरी तरह बर्बाद कर देंगे

तेल अवीव, 20 मार्च (एजेंसियां)। इजराइल ने गाजा में एक बार फिर से टैंक उतारकर जमीनी हमले शुरू कर दिए हैं। इजराइली डिफेंस फोर्स (आईडीएफ) के मुताबिक उसने गाजा पट्टी के सेंट्रल और साउथ के हिस्सों में ग्राउंड ऑपरेशन चालू किया हैं।

आईडीएफ के इस ग्राउंड ऑपरेशन का मकसद नॉर्थ और साउथ गाजा के बीच एक बफर जोन बनाना और इजराइल बॉर्डर से लगे सिक्योरिटी जोन का विस्तार करना है। नॉर्थ और साउथ गाजा को अलग करने वाले नेतजारिम कॉरिडोर में आईडीएफ की 252वीं डिवीजन के सैनिक दाखिल हो गए हैं। इसके आधे से ज्यादा इलाके पर सेना ने कब्जा भी कर लिया है। दूसरी तरफ रक्षा मंत्री इजरायल काट्ज ने बंधकों को नहीं लौटाने पर हमास को पूरी तरह बर्बाद करने की धमकी दी है।

बुधवार रात यरूशलम में नेतन्याहू के खिलाफ हजारों लोग सड़क पर प्रदर्शन करने उतरे। ये प्रदर्शनकारी इजराइली खुफिया एजेंसी शिन बेट के चीफ रोनन बार और अटॉर्नी जनरल गली बहाराव-मियारा को पद से हटाने और गाजा में दोबारा जंग शुरू करने के फैसले का विरोध कर रहे थे। इस दौरान पुलिस और प्रदर्शनकारियों के बीच झड़प भी हुई। पुलिस ने भीड़ को तितर-बितर करने के लिए वाटर कैनन से पानी की बौछार की। सड़कें जाम करने के आरोप में पुलिस ने 12 लोगों को गिरफ्तार भी किया है। अटॉर्नी जनरल गली बहाराव-मियारा ने शिन बेट के चीफ रोनन बार को हटाने के फैसले को अवैध करार दिया था। इसके बाद नेतन्याहू ने मियारा को भी पद से हाटने का फैसला किया है। नेतन्याहू पर आरोप है कि वो रोनन को इसलिए हटाना चाहते हैं, जिससे हमास और कतर के साथ नेतन्याहू के सहयोगियों की गुप्त डील की जांच रोकी जा सके।

टाइम्स ऑफ इजराइल की रिपोर्ट के मुताबिक इजराइल की खुफिया एजेंसी मोसाद के पूर्व चीफ तामिर पारदो ने नेतन्याहू को देश की सुरक्षा के लिए बड़ा खतरा बताया है।

इजराइल ने गाजा में हमास के प्रधानमंत्री इस्साम दिब अब्दुल्ला अल-दालीस को मार गिराया है। इजराइल डिफेंस फोर्सेस ने बुधवार को अब्दुल्ला की मौत की पुष्टि की। अब्दुल्ला ने जुलाई 2024 में रूही मुश्ताहा की मौत के बाद उसकी जगह ली थी।

अब्दुल्ला गाजा में हमास की सरकार चलाता था। उसके पास हमास के संगठन और लड़ाकों की गतिविधियों की जिम्मेदारी भी थी। पिछले 24 घंटे में इजराइल ने हवाई हमलों में हमास के 3 बड़े लीडर्स को भी मार गिराया है।

इनमें हमास के कमांडर और पॉलिटिकल लीडर महमूद मारजूक अहमद अबू-वत्फा, बहजत हसन मोहम्मद अबू-सल्तान और अहमद ओमर अब्दुल्ला अल-हाता शामिल हैं।

मुंबई हमले के दोषी तहव्वुर राणा ने प्रत्यर्पण के खिलाफ अमेरिकी सुप्रीम कोर्ट में दोबारा अपील दायर की

मुंबई, 20 मार्च (एजेंसियां)। मुंबई हमले (26/11) के दोषी तहव्वुर राणा ने प्रत्यर्पण के खिलाफ अमेरिकी सुप्रीम कोर्ट में अपील दायर की है। राणा की याचिका पर सुनवाई के लिए 4 अप्रैल 2025 की तारीख तय की गई है। उसने प्रत्यर्पण पर रोक लगाने की अपील दोबारा दायर की है। इससे पहले जस्टिस एलेना केगन ने उनकी पुनर्विचार याचिका खारिज कर दी थी। राणा ने दावा किया कि भारत प्रत्यर्पित होने पर उनकी जान को खतरा है, क्योंकि वह पाकिस्तानी मूल का मुस्लिम है और मुंबई हमलों से जुड़े आरोपों के चलते उसे प्रताड़ना का सामना करना पड़ सकता है। साथ ही, उन्होंने अपनी बिगड़ती सेहत का हवाला देते हुए कहा कि वह मुकदमे तक जीवित नहीं रह पाएंगा। इससे पहले फरवरी में, अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने राणा के भारत प्रत्यर्पण की घोषणा की थी। राणा पाकिस्तानी-अमेरिकी आतंकी डेविड कोलमैन हेडली का सहयोगी रहा है।

जेलेंस्की से ट्रम्प बोले- पावर प्लांट का कंट्रोल हमें सौंपें

कहा- यह सुरक्षा के लिए जरूरी, रूस-यूक्रेन में सैनिकों की अदला-बदली

वॉशिंगटन/कीव, 20 मार्च (एजेंसियां)। यूक्रेन जंग पर अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने बुधवार को यूक्रेनी राष्ट्रपति वोलोदिमिर जेलेंस्की से 1 घंटे बात की है। अमेरिका विदेश मंत्री और एनएसए ने बयान जारी कर बताया कि व्हाइट हाउस ने यूक्रेन के पावर प्लांट्स की सुरक्षा के लिए उनका कंट्रोल अमेरिका को देने का सुझाव दिया है।

वहीं, जेलेंस्की ने X पर लिखा, मैंने जंग खत्म करने की दिशा में पहले कदम के तौर पर ऊर्जा और अन्य इन्फ्रास्ट्रक्चर पर हमला न करने का समर्थन किया। हम इसे लागू करने के लिए तैयार हैं। अपनी टीम को आंशिक सीजफायर लागू करने और अन्य तकनीकी मुद्दों को हल करने का निर्देश दिया है। यूक्रेन अमेरिका कॉ-ऑर्डिनेशन बनाए रखने के लिए सऊदी अरब में मिलने को तैयार हैं। बैठक से

पहले जेलेंस्की ने बताया था कि रूस और यूक्रेन के बीच आज 175 कैदियों की अदला-बदली हुई है। इसके अलावा रूस ने गंभीर रूप से घायल 22 यूक्रेनी सैनिकों को भी रिहा किया है। एक दिन पहले ट्रम्प ने यूक्रेन जंग रोकने को लेकर रूसी राष्ट्रपति पुतिन को भी फोन किया था। इसके बाद पुतिन ने कहा था कि वो अगले 30 दिनों तक यूक्रेन के ऊर्जा ठिकानों पर हमला नहीं करेंगे।

मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक रूसी राष्ट्रपति पुतिन ने फोन कॉल के लिए डोनाल्ड ट्रम्प को 1 घंटा इंतजार कराया था। दोनों के बीच बातचीत के लिए स्थानीय समयानुसार शाम 4 से 6 बजे (भारतीय समयानुसार शाम 6:30 से रात 8:30 तक) का वक्त रखा गया था। पुतिन 1 घंटे की देरी से यानी करीब 5 बजे क्रेमलिन (राष्ट्रपति कार्यालय) पहुंचे। दरअसल पुतिन मॉस्को में एक कार्यक्रम में उद्योगपतियों और व्यापारियों को संबोधित कर रहे थे। यह कार्यक्रम ट्रम्प से बातचीत के ठीक पहले हुआ। शाम के 4 बजने के बाद कार्यक्रम के होस्ट और पुतिन के करीबी अलेक्जेंडर शॉखिन ने अपनी घड़ी की तरफ देखा और पुतिन से कहा कि कॉल 6 बजे से पहले होनी है।

दरअसल क्रेमलिन के प्रवक्ता दिमित्री पेस्कोव ने ट्रम्प से बातचीत के वक्त की तरफ इशारा किया था। इस पर हंसते हुए पुतिन ने कहा कि उसकी बात मत सुनो। पुतिन 30 दिनों तक यूक्रेन के ऊर्जा ठिकानों पर हमला नहीं करने के लिए राजी हो गए हैं, बशर्ते यूक्रेन भी रूस के एनर्जी ठिकानों पर हमला नहीं करेगा।

बलूचिस्तान और कश्मीर में एलओसी

दो मोर्चों पर लड़ने में समर्थ नहीं है पाकिस्तानी आर्मी शहबाज और मुनीर को पाक एक्सपर्ट की चेतावनी

इस्लामाबाद, 20 मार्च (एजेंसियां)। पाकिस्तान के बलूचिस्तान प्रांत में बीते कुछ महीनों में हालात तेजी से बदले हैं। प्रांत के कई इलाकों में हिंसा की वारदातें हुई हैं, खासतौर से पाक सेना को यहां निशाना बनाया गया है। कई इलाकों के विद्रोही गुटों के नियंत्रण में चले जाने का दावा किया जा रहा है। हाल में जाफर एक्सप्रेस ट्रेन के हाईजैक होने और नोशकी में सेना के काफिले पर हमले ने साफ कर दिया है कि बलूचिस्तान में पाकिस्तान के हाथ से चीजें निकल रही हैं। पाकिस्तान में बलूचिस्तान पर नियंत्रण के लिए सैन्य ऑपरेशन पर जोर दिया जा रहा है। हालांकि पाक सेना के लिए ये आसान नहीं हैं। इंडियन बॉर्डर पर पहले ही पाक सेना की बड़ी तैनाती है। ऐसे में दो फ्रंट पर लड़ना पाकिस्तानी फौज के लिए मुश्किल हो सकता है।

द प्रिंट की रिपोर्ट के मुताबिक, पाकिस्तान का खैबर-पख्तूनख्वा 101,741 वर्ग किलोमीटर और बलूचिस्तान 347,190 वर्ग किलोमीटर में फैला हुआ है। एक अध्ययन के अनुसार, पाकिस्तान ने 2009-2010 के अपने अभियानों के दौरान करीब 140,000 सैनिक और फ्रंटियर कोर के जवान इन सूबों में तैनात किए थे। दूसरी ओर कश्मीर में नियंत्रण रेखा (एलओसी) पर घुसपैठ रोकने के लिए भारत करीब 320,000 सैनिकों तैनात करता है। जबकि जम्मू और कश्मीर का क्षेत्रफल 42,241 वर्ग किलोमीटर है, जो खैबर-पख्तूनख्वा से भी कम है।

इससे साफ है कि पाक सेना की हिंसा से जूझते इन सूबों में तैनाती पर्याप्त नहीं है। पाकिस्तान के सामने बीचे कुछ समय से आर्थिक चुनौतियां भी बढ़ी हुई हैं।

टेक्सास की सीनेट ने होली को मान्यता देते हुए प्रस्ताव पारित किया

ऐसा करने वाला अमेरिका का तीसरा राज्य

वॉशिंगटन, 20 मार्च (एजेंसियां)। अमेरिकी राज्य टेक्सास की सीनेट में एक प्रस्ताव पारित किया गया है। इस प्रस्ताव में हिंदुओं के त्योहार होली को सांस्कृतिक उत्सव के रूप में मान्यता दी गई है। इसके साथ ही टेक्सास अमेरिका का तीसरा राज्य बन गया है, जहां होली को औपचारिक रूप से मान्यता दी गई है। टेक्सास से पहले जॉर्जिया और न्यूयॉर्क भी होली को सांस्कृतिक उत्सव के रूप में मान्यता दे चुके हैं। टेक्सास की सीनेट में यह प्रस्ताव सीनेटर सारा एकहार्ट ने पेश किया। यह प्रस्ताव 14 मार्च को पारित कर दिया गया। प्रस्ताव

में होली के सांस्कृतिक और आध्यात्मिक महत्व के बारे में बताया गया और इसे बसंत, नवीनीकरण, एकता और बुराई पर अच्छाई की जीत के त्योहार के रूप में वर्णित किया गया। प्रस्ताव में कहा गया कि 'इस उल्लासपूर्ण त्योहार की उत्पत्ति कई सदियों पहले की है, और दुनिया भर में विभिन्न पृष्ठभूमि के लोगों द्वारा होली का त्योहार मनाया जाता है। यह त्योहार प्रेम और नवीनीकरण के बारे में है। प्रस्ताव में सामुदायिक संबंधों को मजबूत करने और टेक्सास की सांस्कृतिक विविधता को समृद्ध करने में भी होली की भूमिका बताई गई है।

ह्यूस्टन में भारत के महावाणिज्यदूत मंजूनाथ ने टेक्सास द्वारा होली को मान्यता देने पर खुशी जताई और कहा कि यह टेक्सास के लिए गौरवपूर्ण और ऐतिहासिक क्षण है। राज्य की सीनेट द्वारा होली को मान्यता देना विविधता, एकता, दोस्ती और सांस्कृतिक विरासत के प्रति प्रतिबद्धता की पुष्टि है।

रूस के स्ट्रैटजिक बॉम्बर बेस पर यूक्रेन का जबरदस्त हमला

पुतिन के टीयू-160 बमवर्षकों को भारी नुकसान

मॉस्को, 20 मार्च (एजेंसियां)। यूक्रेन ने रूस के स्ट्रैटजिक बॉम्बर ठिकाने पर जबरदस्त ड्रोन हमला किया है। इस हमले में रूस के एंगेल्स रणनीतिक बमवर्षक अड्डे को भारी नुकसान पहुंचा है। यूक्रेनी हमला इतना जोरदार था कि युद्ध क्षेत्र से लगभग 700 किमी दूर स्थित इस एयरबेस पर एक बड़ा विस्फोट हुआ और आग लग गई। रूसी टेलीग्राम चैनलों पर अपुष्ट वीडियो में हवाई क्षेत्र से फैलते हुए एक बड़ा विस्फोट दिखाया गया, जिसने आस-पास की ढाचों को तहस-नहस कर दिया। रूस के रक्षा मंत्रालय ने कहा कि उसके एयर डिफेंस ने रूसी क्षेत्रों में 132 यूक्रेनी ड्रोन को मार गिराया है।

एंगेल्स में स्थित इस रूसी एयरबेस को सोवियत काल में स्थापित किया गया था। इस एयरबेस पर टुपोलेव टीयू 160 परमाणु-सक्षम भारी रणनीतिक बमवर्षक विमानों को तैनात किया गया है। इन्हें अनौपचारिक रूप से व्हाइट स्वान भी कहा जाता है। टीयू-160 रूस के सबसे आधुनिक परमाणु बमवर्षक विमान हैं। रूस ने इस विमान की मदद से सीमित संख्या में यूक्रेन के कई ठिकानों पर बमबारी भी की है। अब इस हमले से एयरबेस डिसफंक्शनल हो गया है, जिससे टीयू-160 की उड़ानें नहीं हो पा रही हैं। सारातोव के गवर्नर रोमन बुसार्गिन ने कहा कि एंगेल्स शहर पर यूक्रेनी ड्रोन हमला हुआ था, जिससे एक एयरफील्ड में आग लग गई थी और आस-पास के निवासियों को निकाला गया था। उन्होंने विशेष रूप से एंगेल्स बेस का उल्लेख नहीं किया, लेकिन यह क्षेत्र का मुख्य हवाई क्षेत्र है। एंगेल्स जिला प्रमुख मैक्सिम लियोनोव ने कहा कि स्थानीय आपातकाल की घोषणा की गई थी, लेकिन उन्होंने बहुत कम विवरण दिए।

यूक्रेन ने दिसंबर 2022 के बाद एंगेल्स एयर बेस पर कई हमले किए हैं। जनवरी में यूक्रेन ने बेस की सेवा करने वाले एक तेल डिपो पर हमला करने का दावा किया, जिससे भीषण आग लग गई जिसे बुझाने में पांच दिन लग गए। उस समय एक यूक्रेनी सुरक्षा सूत्र ने कहा था कि ड्रोन हमले ने एंगेल्स बेस पर गाइडेड बम और मिसाइलों को रखने वाली एक भंडारण सुविधा को निशाना बनाया था।

विधानसभा में गूंजा गर्भवती महिलाओं को 'देसी घी' देने का मामला

सड़कों पर हुई नोकझोंक; स्पीकर बोले- मंत्री दें पॉइंट टू पॉइंट जवाब

जयपुर, 20 मार्च (एजेंसियां)। राजस्थान विधानसभा के बजट सत्र में गुरुवार को सड़क निर्माण, एचपीवी वैक्सीन, सर्वाइकल कैंसर जांच और संकल्प पत्र में किए गए वादों पर अहम चर्चा हुई। आमेर विधानसभा क्षेत्र में क्षतिग्रस्त सड़कों को लेकर विधायक प्रशांत शर्मा ने सवाल उठाया। इस पर डिप्टी सीएम दीया कुमारी ने कहा कि हर विधानसभा क्षेत्र के लिए 10 करोड़ रुपये का फंड निर्धारित किया गया है।

दीया कुमारी ने कहा कि यदि किसी क्षेत्र में सड़क की आवश्यकता है, तो विधायक इसकी जानकारी दें, हम उसे बनवाएंगे। उन्होंने स्पष्ट किया कि सड़क निर्माण का निर्णय एक विशेष कमेटी द्वारा लिया जाता है, जो कलेक्टर की अध्यक्षता में कार्य करती है। नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली ने सरकार से सवाल किया कि क्या सड़क निर्माण केवल विधायक की

अनुशंसा से होगा या कमेटी खुद भी निर्णय ले सकती है?

इस पर डिप्टी सीएम दीया कुमारी ने जवाब दिया कि यदि कोई सड़क खराब है और जरूरत है, तो कमेटी प्राथमिकता के आधार पर निर्णय लेकर निर्माण कार्य करेगी। विधायक व्यक्तिगत रूप से भी जानकारी भेज सकते हैं, हम निरीक्षण करवा कर काम करवाएंगे। उन्होंने आश्वासन दिया कि सभी विधायकों की सिफारिशों को प्राथमिकता दी जाएगी, भले ही वे किसी भी पार्टी से हों।

गर्भवती महिलाओं के देसी घी पर हंगामा

विधानसभा में विधायक मनीष यादव ने सवाल किया कि सरकार ने संकल्प पत्र में प्रत्येक गर्भवती महिला को 5 लीटर देसी घी देने की घोषणा की थी, लेकिन अभी तक कई महिलाओं को यह लाभ नहीं मिला। इस पर चिकित्सा मंत्री गजेंद्र सिंह खींवसर ने जवाब दिया कि प्रदेश के 6 जिलों- झुंझुनूं, जैसलमेर समेत कुछ अन्य स्थानों पर BPL परिवारों की पहली डिलीवरी पर 3 लीटर घी दिया जा रहा है। डिलीवरी के बाद 2 लीटर और दिया जाता है। अन्य जिलों में बीपीएल और जनजातीय गर्भवती महिलाओं को सरस का कूपन देकर 5 लीटर घी दिया जाता है।

उन्होंने यह भी कहा कि सरकार के कार्यकाल में अभी साढ़े तीन साल बाकी हैं और इस योजना को अधिक व्यापक बनाया जाएगा। वहीं, विधायक मनीष यादव और टीकाराम जूली ने आरोप लगाया कि सरकार इस मामले में गुमराह कर रही है और अभी तक सभी लाभार्थियों को यह सुविधा नहीं मिली।

वहीं, इस पर चिकित्सा मंत्री ने सफाई दी कि संकल्प पत्र में कोई तिथि तय नहीं की गई थी। सरकार जल्द ही इस योजना को संपूर्ण रूप से लागू करेगी।

वासुदेव देवनानी ने दी हिदायत

विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने सदन में मौजूद सदस्यों को स्पष्ट हिदायत दी है कि वे प्रश्नकाल के दौरान अपनी तैयारी को बेहतर करें। उन्होंने सुझाव दिया कि विधायक कुछ पुराने और कुछ नए प्रश्नों को शामिल करें, साथ ही प्रश्नों के उत्तर पहले से तैयार रखें और पूरक प्रश्नों की भी अच्छी तैयारी करें। उन्हें यह भी ध्यान रखना चाहिए कि कौन से प्रश्न पूछने हैं और क्या पूछना है।

उन्होंने विधायकों को प्रश्न पूछने की ट्रेनिंग देने की बात कही और मंत्रियों से आग्रह किया कि वे जवाब देते समय संक्षिप्त और बिंदुवार (पॉइंट टू पॉइंट) उत्तर दें। उनका कहना था कि लंबे जवाब देने से कोई लाभ नहीं होगा। मंत्रियों को विधायकों के सवालों की मंशा समझकर उसी के अनुरूप सटीक उत्तर देना चाहिए। ऐसा करने से न केवल अधिक विषयों को कवर किया जा सकेगा, बल्कि अधिक प्रश्नों के जवाब भी संभव हो पाएंगे।

भीलवाड़ा में ईडी ने मोबाइल व्यापारी के घर मारी रेड

दुबई से कनेक्शन की आशंका; हवाला कारोबार की भी चर्चा

भीलवाड़ा, 20 मार्च (एजेंसियां)। भीलवाड़ा जिले में गुरुवार को प्रवर्तन निदेशालय ने बड़ी कार्रवाई करते हुए एक मोबाइल व्यापारी के घर पर छापेमारी की।

ईडी की टीम ने शहर के बापू नगर क्षेत्र में स्थित व्यापारी के आवास पर सुबह से सर्च ऑपरेशन शुरू किया, जिसके बाद इलाके में हड़कंप मच गया।

सूत्रों के मुताबिक, इस कार्रवाई के पीछे व्यापारी के दुबई से कनेक्शन और बड़े हवाला कारोबारियों से संबंध होने की आशंका जताई जा रही है। जानकारी के अनुसार, जिस मोबाइल व्यापारी के यहां यह कार्रवाई की गई उसका नाम गिरिश एलानी बताया जा रहा है।

दरअसल, ईडी की टीम ने भीलवाड़ा में व्यापारी के आवास और ठिकानों पर दस्तावेजों की

गहन जांच शुरू की है। इस दौरान बड़ी संख्या में पुलिस और सुरक्षा बल भी मौके पर मौजूद रहे। हालांकि, ईडी ने अभी तक कार्रवाई के ठोस कारणों का खुलासा नहीं किया है, लेकिन माना जा रहा है कि यह मामला हवाला कारोबार से जुड़ा हो सकता है।

सूत्रों का कहना है कि गिरिश एलानी का मोबाइल व्यवसाय के साथ-साथ संदिग्ध पैसों के लेनदेन से संबंध हो सकता है। दुबई से कनेक्शन की चर्चा के बीच यह भी संभावना जताई जा रही है कि ईडी इस मामले में बड़े हवाला नेटवर्क को निशाना बना रही है। फिलहाल, ईडी की टीम दस्तावेजों और सबूतों की पड़ताल में जुटी है।

बीजेपी नेता की 25 बीघा जमीन पर 9 घंटे तक चले 8 बुलडोजर

कृषि भूमि पर कर रहे थे अवैध प्लॉटिंग, नेता राजस्थान के इस विधानसभा क्षेत्र से थे प्रत्याशी

अलवर, 20 मार्च (एजेंसियां)। जयसमंद बांध के पीछे केसरपुर में भाजपा नेता की 25 बीघा जमीन पर चल रही अवैध प्लॉटिंग पर यूआईटी ने बुलडोजर चलाए। आठ बुलडोजर ने करीब 9 घंटे में चारदीवारी और ग्रेवल सड़कों को ध्वस्त कर दिया। बताया जा रहा है कि इस जमीन का कुछ हिस्सा मत्स्य विभाग के नाम है। कुछ भूमि चारागाह की है। हालांकि अधिकारी इस बात को स्वीकार नहीं कर रहे हैं। उनका तर्क है कि कृषि भूमि का भू-उपयोग नहीं बदलवाने के कारण यह कार्रवाई की गई है।

आरोप है कि भाजपा के टिकट से राजगढ़-लक्ष्मणगढ़ विधानसभा क्षेत्र से प्रत्याशी रहे बन्ना राम मीणा इस जमीन पर पिछले छह महीने से अवैध प्लॉटिंग कर रहे थे। बाउंड्रीवॉल बनाई गई थी और ग्रेवल सड़क डाली गई थी। इस जमीन को किसी दूसरे भूमाफिया के नाम करने की तैयारी थी, लेकिन सौदा नहीं बन पाया। इस जमीन पर आठ बोरवेल हैं, जो सूखे हुए हैं।

इनके अलावा खटाना सिंह, भोपाल सिंह, रूप सिंह डेरा व हीरालाल गुर्जर ने भी कृषि भूमि पर

अवैध प्लाटिंग की थी। पूरे मामले को राजस्थान पत्रिका ने प्रमुखता से उठाया तो लोग जागे। उन्होंने यह प्रकरण जिला प्रभारी मंत्री किरोड़ी लाल मीणा को बताया। उसके बाद सरकारी मशीनरी व प्रशासन हरकत में आया। तहसीलदार रश्मि शर्मा के नेतृत्व में यूआईटी के अतिक्रमण निरोधक अधिकारी अनिल शर्मा और पुलिस प्रशासन की टीम पहुंची और कार्रवाई की।

गांव केसरपुर के संवत 2071-2074 खाता संख्या 701 पर मत्स्य विभाग फिशरिंग रिफॉर्म के नाम चली आ रही है। जिसको अवैध तरीके से अधिकारियों के साथ मिलीभगत से बिना विभाग को पक्षकार बनाए एवं बिना किसी जानकारी के खसरा नंबर 865/701 बदल दिया गया। विभाग की जमीन तीन खातेदार के नाम नामांतरण कर दिया गया। आरोप है कि दो माह बाद ही षड्यंत्र करके बन्नाराम मीणा ने इस भूमि का नामांतरण अपनी पत्नी के नाम खुलवा लिया।

ग्राम केसरपुर की आराजी खसरा नंबर 544 रकबा 1.30 हेक्टेयर, किस्म चारागाह वाके, जिसमें एक हेक्टेयर भूमि कब्रिस्तान के लिए आरक्षित की गई थी, जिस पर कब्जा किया गया। प्रशासन से लेकर कई अफसरों तक शिकायत की, लेकिन कार्रवाई नहीं हो पाई। मंदिरमाफी जमीन पर भी कब्जा किया गया।

कृषि भूमि पर अवैध प्लॉटिंग की जा रही थी। इसके लिए भू-उपयोग परिवर्तन जरूरी था। इसी कारण यूआईटी ने यह कार्रवाई की है। कुछ कार्रवाई शेष है, जो गुरुवार को होगी।

जिला प्रशासन की ओर से हमारी जमीन मामले में कार्रवाई अपेक्षित है। आने वाले दिनों में भी ऐसी कार्रवाई होगी तो सरकारी जमीन पर कब्जा नहीं होगा। यह मामला कोर्ट में चल रहा है।

इस जमीन का 11 बीघा हिस्सा हमारे पास है। 5 बीघा पत्नी के नाम है और बाकी 6 बीघा जमीन निजी खातेदार के पास है। हमने बाउंड्रीवाल करवाई थी, इसके अलावा कोई निर्माण नहीं किया है। जमीन सरकारी नहीं है। आसपास आबादी बसी हुई है। भू रूपांतरण नहीं करवाया गया था।

अवैध प्लॉटिंग शहर में कई जगह हो रही है। कृषि भूमि हो या फिर मंदिरमाफी की जमीन। सभी पर भूमाफिया कब्जा कर रहे हैं। शिकायतों के बाद भी कार्रवाई नहीं होती। जयपुर, दिल्ली, भूगोर से लेकर बहरोड़, तिजारा, राजगढ़ आदि मार्गों पर अवैध प्लॉटिंग चल रही है, लेकिन रसूखदारों के प्रभाव के कारण कार्रवाई नहीं की जाती। हालांकि अब यूआईटी कार्रवाई की बात कर रही है।

अवैध खनन को लेकर नेता प्रतिपक्ष ने साधा निशाना

कहा- कुंभकर्णी नींद में सो रही है सरकार

अलवर, 20 मार्च (एजेंसियां)। राजस्थान विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली ने अवैध खनन को लेकर सरकार पर तीखा हमला बोला है। उन्होंने सरकार की निष्क्रियता पर सवाल उठाते हुए कहा कि प्रदेश में अवैध खनन चरम पर है और सरकार इस पर आंखें मूंदे बैठी है। नेता प्रतिपक्ष के आरोपों पर सरकार की ओर से संतोषजनक जवाब नहीं मिलने पर कांग्रेस ने सदन से बहिर्गमन कर दिया।

नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली ने कहा कि प्रदेश में खनन माफिया बेखौफ हैं और सरकार की उदासीनता के चलते अवैध खनन को बढ़ावा मिल रहा है। उन्होंने कहा कि यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि सत्तापक्ष के विधायक और मंत्री तक

अवैध खनन को लेकर सवाल उठा रहे हैं, लेकिन सरकार कुंभकर्णी नींद में सो रही है।

उन्होंने मंत्री अविनाश गहलोत के बयान पर भी सवाल उठाए। उन्होंने आरोप लगाया कि सरकार के मंत्री डीएसपी को अवैध खनन करने वालों को न पकड़ने की सलाह दे रहे हैं। उन्होंने इसे सरकार द्वारा खनन माफिया को दिए जा रहे संरक्षण का प्रमाण बताया।

जूली ने मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा और गृह राज्यमंत्री पर भी सवाल उठाते हुए कहा कि मुख्यमंत्री और गृह राज्य मंत्री के क्षेत्रों में भी अवैध खनन चरम पर है। भरतपुर और डीग में 413 खनन पट्टों में से पिछले दो सालों में 322 अवैध खनन के मामले दर्ज हुए हैं, जो सरकार की नाकामी को दर्शाता है।

राजस्थान भूजल संरक्षण और प्रबंधन प्राधिकरण विधेयक पर बोलते हुए जूली ने कहा कि यह विधेयक राज्य की जनता के साथ अन्याय है। उन्होंने आरोप लगाया कि इसमें भूजल संरक्षण की कोई ठोस योजना नहीं है। जूली ने कहा, ₹राजस्थान में जितनी जरूरत है, उससे अधिक बारिश होती है, लेकिन जल संरक्षण की व्यवस्था न होने के कारण हालात बिगड़ते जा रहे हैं।₹

उन्होंने यह भी कहा कि नए कानून के तहत हैंडपंप और बोरिंग पर भी प्रतिबंध लगाया गया है, जिससे आम जनता को पानी की समस्या का सामना करना पड़ेगा। जूली ने इसे तानाशाही बताते हुए विधेयक को जनमत के लिए भेजने की मांग की।

वन विभाग की टीम को दोहरी सफलता

सलूंबर वन रेंज से दो दिन के भीतर पकड़े दो पैंथर

उदयपुर, 20 मार्च (एजेंसियां)। सलूंबर वन रेंज में वन विभाग को दोहरी सफलता मिली है। दो दिनों के भीतर क्षेत्र में दो पैंथर पिंजरे में कैद हो गए। ये दोनों पैंथर शिकार के फेर में खुद ही वन विभाग के जाल में फंस गए। क्षेत्रीय वन अधिकारी दिलीप सिंह ने बताया कि कल्याणा कला और आसपास के गांवों में पैंथर का मूवमेंट काफी समय से देखा जा रहा था। ग्रामीणों ने इसे कई बार कैमरे में भी कैद किया। पैंथर लगातार मवेशियों का शिकार कर रहा था, जिससे ग्रामीणों में दहशत का माहौल था। वन विभाग ने पैंथर को पकड़ने के लिए रणनीति बनाई और पिंजरा लगाया। मंगलवार रात पैंथर शिकार की तलाश में पहुंचा। पिंजरे में पहले से ही एक बकरा बांधा गया था।

बिना मुआवजा दिए नहर का काम शुरू करने पर हंगामा

विधायक और उप अधीक्षक में हुई बहस

बांसवाड़ा, 20 मार्च (एजेंसियां)। जिले के बागीदौरा विधानसभा क्षेत्र के जूनी गांगड़तलाई में हाई लेवल नहर का निर्माण कार्य शुरू होते ही हंगामा हो गया। जिन जमीनों पर काम शुरू किया गया, उनके मालिकों ने मुआवजा न मिलने तक काम नहीं होने देने की बात कही। सूचना मिलने पर विधायक जयकृष्ण पटेल और बागीदौरा पुलिस उप अधीक्षक मौके पर पहुंचे, जहां दोनों के बीच बहस भी हो गई।

बागीदौरा विधानसभा क्षेत्र का बड़ा हिस्सा असिंचित है। राज्य सरकार ने माही बांध का पानी लाकर किसानों को सिंचाई सुविधा देने के लिए हाई लेवल नहर के निर्माण की घोषणा की थी। इसी क्रम में गुरुवार को गांगड़तलाई पंचायत समिति के जूनी गांगड़तलाई गांव में जेसीबी मशीन से खुदाई शुरू की गई।

ग्रामीणों और किसानों ने विरोध जताते हुए कहा कि बिना मुआवजा दिए उनकी जमीन पर काम शुरू किया गया है। उन्होंने मुआवजा देने या जमीन के बदले जमीन देने की मांग की। ग्रामीणों ने आरोप लगाया कि निर्माण एजेंसी और पुलिस किसानों को धमकाकर जबरन काम करवा रही है। सूचना मिलने पर विधायक जयकृष्ण पटेल मौके पर पहुंचे और ग्रामीणों की बात सुनी। उन्होंने आरोप लगाया कि किसानों को डराकर काम करवाना गलत है। उन्होंने अधिकारियों से कहा कि जब तक किसानों को मुआवजा या जमीन के बदले जमीन नहीं दी जाती, तब तक काम बंद किया जाए। बागीदौरा पुलिस उप अधीक्षक ने कहा कि पुलिस शांति बनाए रखने के लिए मौके पर मौजूद थी और किसी पर दबाव नहीं डाला गया। इसी दौरान विधायक और उप अधीक्षक के बीच बहस भी हो गई। विधायक ने जेसीबी बंद करने को कहा लेकिन अधिकारियों ने तर्क दिया कि जिन किसानों ने अपनी जमीन पर काम की अनुमति दी है, वहीं खुदाई हो रही है। विवादित स्थल पर काम बंद करा दिया गया है।

रोडवेज बस ने मारी टक्कर पिता-पुत्र की मौके पर हुई मौत

टोंक, 20 मार्च (एजेंसियां)। टोडारायसिंह। दूदू-छाण स्टेट हाइवे पर राजस्थान रोडवेज बस ने बाइक टक्कर मार दी। इसमें बाइक सवार पिता-पुत्र की मौके पर ही मौत हो गई। भीषण टक्कर के बाद लगी आग से बाइक जलकर राख हो गई। उपजिला अस्पताल में पोस्टमार्टम के बाद मामला दर्ज कर शव परिजनों के सुपुर्द कर दिया। थानाप्रभारी हरिराम जाट ने बताया कि मृतक बावड़ी पंचायत के कल्याणपुरा जाटान निवासी नाथू (55) पुत्र छोटू रैगर व उसका पुत्र सोनू (26) है। खरेड़ा से दोनों बाइक से गांव लौट रहे थे। इसी बीच दूदू-छाण स्टेट हाइवे पर बासेड़ा-रघुनाथपुरा के निकट रोडवेज बस ने बाइक के टक्कर मार दी। टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि बाइक के परखच्चे उड़ गए। पेट्रोल की टंकी फटने के बाद लगी आग में बाइक जलकर राख हो गई। घटना के बाद मौके पर राहगीरों की भीड़ जमा हो गई। सूचना मिलते ही टोडारायसिंह थाने से हैडकांस्टेबल राजेंद्र यादव मय जाप्ते के मौके पर पहुंचे। घटना के बाद रोडवेज बस चालक मौके से फरार हो गया। अचेतावस्था में बाइक सवार दोनों घायलों को उपजिला अस्पताल लेकर आए, जहां चिकित्सकों ने दोंनों को मृत घोषित कर दिया। पुलिस ने मृतक के बड़े पुत्र रामपाल की ओर से रोडवेज बस चालक के खिलाफ गफलत व लापरवाही से बस चलाकर टक्कर मारने का मामला दर्ज कराया है।

बीकानेर में कार पर पलटा डंपर, एक ही परिवार के छह लोगों की मौत, सभी शादी समारोह से लौट रहे थे

बीकानेर, 20 मार्च (एजेंसियां)। कल देर रात जिले के देशनोक में हुए भीषण सड़क हादसा हुआ, जिसमें 6 लोगों की दर्दनाक मौत हो गई। हादसा उस समय हुआ जब राख से भरा हुआ एक ट्राला ओवरब्रिज पर गुजर रही कार पर पलट गया। सभी मृतक एक ही परिवार के बताए जा रहे हैं, जो शादी समारोह में शामिल होकर नोखा लौट रहे थे। हेड कांस्टेबल सुनील यादव ने बताया कि कार बीकानेर से नोखा जा रही थी, जबकि ट्रोला नोखा से बीकानेर की ओर आ रहा था। ओवरटेक के दौरान ट्राला असंतुलित होकर कार पर पलट गया। हादसे की सूचना मिलते ही देशनोक थाने के एएसआई हनुमंत सिंह पुलिस टीम के साथ मौके पर पहुंचे।

ट्राला पलटने से कार में सवार लोगों को बचने का कोई मौका नहीं मिला। घटना की जानकारी मिलने के बाद मौके पर पहुंची देशनोक पुलिस ने कार में सवार लोगों की मदद के लिए क्रेन और तीन जेसीबी के सहारे ट्रोले को किनारे करने की कोशिश की। मौके पर पहुंचे कांस्टेबल सुनील ने बताया कि कार में 6 लोग सवार थे। हालांकि तब तक सभी की मौत हो चुकी थी। शवों को बीकानेर के पीबीएम अस्पताल की मोर्चरी में भेजा गया है। मृतकों की पहचान अशोक (45) पुत्र जगनाथ नाई, मूलचंद (45), पप्पूराम (55) पुत्र गंगाराम नाई, श्यामसुंदर (60), द्वारकाप्रसाद (45) पुत्र चेतनराम नाई और करणीराम (50) पुत्र मोहनराम नाई के रूप में हुई है।

हादसे की सूचना मिलते ही आईजी ओमप्रकाश और एसपी कावेंद्र सिंह सागर मौके पर पहुंचे। एसडीएम कविता गोदारा ने राहत और बचाव कार्यों का जायजा लिया। शवों को स्थानीय लोगों की मदद से बाहर निकालकर बीकानेर के पीबीएम अस्पताल भेजा गया है।

एक ही परिवार के तीन लोगों की सामूहिक आत्महत्या

बदबू आने पर दस दिन बाद खुला राज

बीकानेर, 20 मार्च (एजेंसियां)। बीकानेर के जेएनवीसी थाना क्षेत्र के वल्लभ गार्डन इलाके में एक ही परिवार के तीन सदस्यों की सामूहिक आत्महत्या का मामला सामने आया है। घटना का खुलासा तब हुआ जब मकान से आ रही बदबू के कारण पड़ोसियों ने मकान मालिक के रिश्तेदारों को सूचना दी। संपर्क करने की कई कोशिशों के बाद जब कोई प्रतिक्रिया नहीं मिली तो पुलिस को बुलाया गया। पुलिस के अनुसार मकान के अंदर एक पुरुष, एक महिला और एक युवती का शव मिला है। मृतकों की पहचान नीतिन खत्री, उनकी पत्नी रजनी और बेटी जसिका के रूप में हुई है। पुलिस ने बताया कि नीतिन का शव पंखे के हुक से लटका हुआ था, जबकि रजनी और जसिका के शव फर्श पर पड़े थे। शव लगभग दस दिन पुराने बताए जा रहे हैं। सीओ विशाल जांगिड़ ने जानकारी दी कि जय नारायण व्यास कॉलोनी थाना पुलिस को देर रात मामले की सूचना मिली थी। इसके बाद पुलिस ने मौके पर एफएसएल टीम को बुलाकर आवश्यक साक्ष्य जुटाए। बताया जा रहा है कि नीतिन वल्लभ गार्डन में ही एक बिजली की दुकान चलाते थे और उनकी आर्थिक स्थिति भी अच्छी थी। पड़ोसियों के अनुसार वे कम ही लोगों से बातचीत करते थे।

जयपुर में 'मेरठ' जैसा कांड, पति को बेरहमी से मारा

बोरे में ठूंसकर प्रेमी के साथ मिलकर शव को जलाया

जयपुर, 20 मार्च (एजेंसियां)। जयपुर के मुहाना थाना क्षेत्र में एक पत्नी ने प्रेम प्रसंग में बाधा बन रहे पति की अपने प्रेमी के साथ मिलकर हत्या कर दी। पुलिस ने हत्या के आरोप में पत्नी गोपाली देवी और उसके प्रेमी दीनदयाल को गिरफ्तार कर लिया है।

मृतक धन्नालाल सैनी सब्जी बेचने का काम करता था। उसकी पत्नी गोपाली देवी का पिछले पांच वर्षों से दीनदयाल नामक युवक के साथ प्रेम संबंध था। धन्नालाल को अपनी पत्नी के चरित्र पर शक था और इसकी जांच करने के लिए वह 15 मार्च को दीनदयाल की कपड़े की दुकान 'श्याम फैशन' पहुंचा, जहां उसने अपनी पत्नी को दीनदयाल के साथ रंगे हाथों पकड़ लिया। इसके बाद गोपाली देवी और दीनदयाल ने धन्नालाल को रास्ते से हटाने की साजिश रची और धन्नालाल को दुकान की ऊपरी मंजिल पर बुलाया, जहां लोहे के पाइप से उसके सिर पर वार कर गंभीर रूप से घायल कर दिया। इसके बाद रस्सी से गला घोंटकर उसकी हत्या कर दी।

हत्या के बाद पहचान छुपाने के इरादे से गोपाली देवी और दीनदयाल ने शव को प्लास्टिक के बोरे में डाल दिया। इसके बाद बाइक पर शव को लादकर नेवटा पुलिया के पास ले गए और जंगल में शव को ज्वलनशील पदार्थ डालकर आग लगा दी। पुलिस ने जांच के दौरान सीसीटीवी फुटेज में आरोपी दीनदयाल और गोपाली देवी को बाइक पर शव ले जाते हुए देखा और फुटेज की मदद से दोनों को गिरफ्तार कर लिया। मुहाना थाना पुलिस ने बताया कि हत्या का मामला पूरी तरह से प्रेम प्रसंग का नतीजा है। दोनों आरोपियों ने अपना जुर्म कबूल कर लिया है।

कृषि विश्वविद्यालय कुलपति के खिलाफ जांच कमेटी गठित

15 दिन में राज्यपाल को सौंपेगी रिपोर्ट

जोधपुर, 20 मार्च (एजेंसियां)। राजस्थान के कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर के कुलपति प्रो. अरुण कुमार के खिलाफ मिली शिकायतों की जांच के लिए राज्यपाल एवं कुलाधिपति हरिभाऊ बागडे.ने जांच कमेटी का गठन किया है। राज्यपाल ने आदेश जारी कर इस हाई पॉवर कमेटी को 15 दिनों के भीतर अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करने को कहा है। राज्यपाल ने कमेटी को निर्देश दिए हैं कि वे शिकायतों की निष्पक्ष और विस्तृत जांच करें। इस दौरान कुलपति को अपना पक्ष रखने का अवसर दिया जाएगा। समस्त दस्तावेजों की समीक्षा कर कमेटी अपनी रिपोर्ट 15 दिनों में राजभवन को सौंपेगी। सूत्रों के अनुसार कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति पर नए निर्माण कार्यों में अनियमितता और नवाचार योजनाओं में वित्तीय गड़बड़ियों के आरोप लगे हैं। हालांकि इन आरोपों की अब तक आधिकारिक पुष्टि नहीं की गई है। जांच कमेटी की रिपोर्ट के बाद ही पूरे मामले की सच्चाई सामने आ पाएगी। यह पहली बार नहीं है जब राज्यपाल ने किसी विश्वविद्यालय के कुलपति के खिलाफ जांच के आदेश दिए हैं। कुछ समय पहले भी जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय के कुलपति के खिलाफ शिकायतें मिलने पर राज्यपाल ने कार्रवाई की थी।

मिस वर्ल्ड प्रतियोगिता

तेलंगाना में आयोजन को लेकर सियासी तूफान

हैदराबाद, 20 मार्च (स्वतंत्र वार्ता)। भारत में इस साल दुनिया की सबसे चर्चित ब्यूटी और मॉडलिंग प्रतियोगिता- मिस वर्ल्ड का आयोजन किया जाना है। फिलहाल इस प्रतियोगिता के आयोजन में एक महीने से ज्यादा का समय है, लेकिन इससे पहले ही राज्य में इसका आयोजन कराए जाने पर सियासी घमासान छिड़ गया है।

दरअसल, तेलंगाना की प्रमुख पार्टी भारतीय राष्ट्र समिति (बीआरएस) और भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने मिस वर्ल्ड का आयोजन तेलंगाना में कराए जाने को लेकर सवाल उठाए हैं। जहां सत्तासीन कांग्रेस का कहना है कि इस आयोजन से तेलंगाना वैश्विक नक्शे पर अपनी जगह बनाने में कामयाब रहेगा, वहीं विपक्ष का कहना है कि राज्य पहले ही आर्थिक समस्याओं से जूझ रहा है। सरकार को पहले ही सरकारी कर्मियों की तनख्वाह देने और अहम खर्चे उठाने में मुश्किलें आ रही हैं, लेकिन कांग्रेस मिस वर्ल्ड के भव्य आयोजन के लिए भारी-भरकम रकम खर्च करने के लिए तैयार है।

ऐसे में यह जानना अहम है कि आखिर मिस वर्ल्ड प्रतियोगिता क्या है, जिसके भारत में आयोजन को लेकर कांग्रेस विवादों में घिर गई है? कार्यक्रम को लेकर कांग्रेस की तरफ से ऐसा क्या किया जा रहा है, जो इस पर विवाद खड़ा हो गया? विपक्ष ने इस मामले में क्या कहा है? तेलंगाना सरकार मिस वर्ल्ड प्रतियोगिता को राज्य में पर्यटन को बढ़ावा देने का अहम जरिया बताती रही है।

मंगलवार को ही मौजूदा मिस वर्ल्ड क्रिस्टीना पिस्जकोवा ने तेलंगाना टूरिज्म का प्रचार करते हुए यदागिरीगुट्टा श्री लक्ष्मी नरसिम्हा स्वामी मंदिर के बाहर अलग-अलग जगहों पर गुलाबी साड़ी में फोटो खिंचवाईं। इस पोस्ट में क्रिस्टीना ने लिखा, यदागिरी गुट्टा मंदिर में आने से मुझे खुशी और शांति मिली। और यह सिर्फ शुरूआत है। मैं तेलंगाना और इसके छिपे हुए खजाने को देखने का इंतजार नहीं कर सकती। इस बार भारत की तरफ से मिस वर्ल्ड

प्रतियोगिता में निकिता पोरवाल हिस्सा ले रही हैं, जो 2024 के फेमिना मिस इंडिया वर्ल्ड कॉन्टेस्ट में जीती थीं।

मिस वर्ल्ड प्रतियोगिता पर सियासत क्यों शुरू हो गई

तेलंगाना में मिस वर्ल्ड प्रतियोगिता के आयोजन पर बीआरएस के कार्यकारी अध्यक्ष केटी रामाराव (केटीआर) ने सबसे पहले मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी के नेतृत्व वाली कांग्रेस सरकार की आलोचना की। उन्होंने तेलंगाना सरकार पर एक ब्यूटी पेजेंट के लिए 200 करोड़ रुपये आवंटित करने के फैसले पर सवाल उठाए। उन्होंने कहा कि पेंशन के भुगतान, सरकारी कर्मियों की तनख्वाह, कल्याणकारी योजनाओं के लिए वित्तीय प्रबंधन में लगातार देरी हो रही है और 'जनता के पैसे' को ब्यूटी कॉन्टेस्ट में लगाया जा रहा है। कांग्रेस सरकार हमें यह मनवाना चाहती है कि तेलंगाना में सबकुछ ठीक है। जाहिर तौर पर उनके हिसाब से निवेश लगातार आ रहा है। कृषि क्षेत्र बढ़ रहा है। कल्याणकारी योजनाएं उच्चतम स्तर पर हैं और मुख्यमंत्री दिन में 18 घंटे काम कर रहे हैं।

जिस मामले में कांग्रेस ने बिठाई केटीआर के खिलाफ जांच, उस पर क्या बोले :

इतना ही नहीं केटीआर ने तेलंगाना सरकार पर पाखंड करने का आरोप भी लगाया। उन्होंने मिस वर्ल्ड प्रतियोगिता की तुलना अपनी सरकार के दौरान कराई गई फॉर्मूला-ई रेस से की, जो कि वैश्विक मोटरस्पोर्ट इवेंट के तौर पर प्रचारित किया गया था। कांग्रेस ने बाद में इस रेस के आयोजन में ज्यादा वित्तीय खर्च का हवाला देते हुए इसे रद्द कर दिया था।

केटीआर ने कहा, अगर फॉर्मूला-ई रेस को पैसों की बर्बादी कहा गया, तो अब एक ब्यूटी कॉन्टेस्ट पर उसके मुकाबले चार गुना खर्च कैसे न्यायसंगत हो गया? हैदराबाद में ई-रेस के लिए 46 करोड़ रुपये खर्च करना गलत था और इसके चलते मुझ पर केस दर्ज किए जा रहे हैं। लेकिन मिस वर्ल्ड के लिए 200 करोड़ खर्च करना ठीक है। यह कैसा भ्रष्ट तर्क है?

गौरतलब है कि फॉर्मूला-ई रेस को लेकर केटीआर पर कांग्रेस सरकार ने जांच बिठाई है। उनके खिलाफ आर्थिक अनियमितता के आरोप में भ्रष्टाचार रोधी ब्यूरो (एसीबी) की जांच चल रही है। केटी रामा राव ने कांग्रेस नेता राहुल गांधी को चुनौती देते हुए इस पर जवाब मांगा।

विपक्ष ने चुनावी वादों को लेकर कांग्रेस को घेरा

गौरतलब है कि बीआरएस लगातार राज्य की कांग्रेस सरकार को वित्तीय योजनाओं के मसले पर घेर रही है। विपक्ष का आरोप है कि कांग्रेस ने 2023 के चुनावी अभियान के दौरान वादे किए थे, वह उन्हें पूरा नहीं कर पा रही है। फिर चाहे वह किसानों की कर्ज माफी का वादा हो या लोक कल्याण से जुड़ी योजनाएं। बीआरएस का कहना है कि कांग्रेस सरकार उन कार्यक्रमों को बढ़ावा दे रही है, जिससे लोगों को सीधे तौर पर कोई फायदा नहीं होता। इसी मंगलवार को जब तेलंगाना विधानसभा में बजट पेश किया गया, तब बीआरएस के सांसदों ने प्रदर्शन किया था। इस दौरान कुछ सांसद सूखी हुई फसलें लेकर सदन में पहुंचे थे और उन्होंने इसे कांग्रेस-निर्मित सूखा करार दिया था। बीआरएस ने मिस वर्ल्ड प्रतियोगिता के आयोजन का भी विरोध किया था और परेशान किसानों को 25 हजार रुपये प्रति एकड़ के हिसाब से मुआवजा देने की मांग उठाई थी।

बीआरएस के इन आरोपों पर तेलंगाना के मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी ने पलटवार किया। उन्होंने मिस वर्ल्ड प्रतियोगिता आयोजित करने का बचाव करते हुए राज्य के पूर्व सीएम और बीआरएस नेता के. चंद्रशेखर राव (केसीआर) पर तेलंगाना को दिवालिया करने का आरोप लगाया। रेड्डी ने कहा कि बीआरएस की पूर्व सरकार की वजह से कांग्रेस सरकार को हर महीने कर्ज पर सिर्फ ब्याज के तौर पर 1.53 लाख करोड़ रुपये चुकाने होते हैं। सीएम ने कहा कि अगर इतनी बड़ी रकम बचा ली जाती तो सरकार सबके लिए घर बना सकती थी। किसानों के साथ 70 लाख और लोगों के कर्ज माफ किए जा सकते थे।

अंतरराज्यीय नकली बीज रैकेट का भंडाफोड़, एक गिरफ्तार

98 लाख रुपये का नकली कपास का बीज बरामद

हैदराबाद, 20 मार्च (स्वतंत्र वार्ता)। नकली कपास के बीजों के प्रसार को रोकने के लिए एक सक्रिय दृष्टिकोण अपनाते हुए, विशेष सूचना पर कार्रवाई करते हुए, मेडचल क्षेत्र के विशेष अभियान दल (एसओटी) के अधिकारियों ने कृषि विभाग और शमीरपेट पुलिस के अधिकारियों के साथ मिलकर एक संयुक्त अभियान चलाया। इस दौरान किसानों को बेचने के इरादे से नकली कपास के बीज ले जाने में शामिल एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया। इस अभियान के परिणामस्वरूप 3750 किलोग्राम नकली बीजी-III कपास के बीज (जो तेलंगाना सरकार द्वारा प्रतिबंधित हैं), एक डीसीएम वाहन और एक मोबाइल फोन जब्त किया गया, जिसकी कुल कीमत 98.75 लाख रुपये है। पुलिस उपायुक्त मेडचल जोन, साइबराबाद एन. कोटि रेड्डी ने बताया कि पुलिस ने इस मामले में मालिक और वाहन का ड्राइवर नरेश को गिरफ्तार किया है। जबकि दो अन्य आरोपी फरार है।

उन्होंने बताया कि मंचेरियल निवासी सोलू सुरेश ने गिरफ्तार व्यक्ति नरेश (ड्राइवर) को कुष्टगी, कर्नाटक में रमण @ रामय्या नामक व्यक्ति से प्रतिबंधित (बीजी-III) कपास के बीज मंचेरियल तक पहुंचाने के लिए काम पर रखा था। सोलू सुरेश ने नरेश को इस काम के लिए 50 हजार रुपये का किराया देने का वादा किया था। नरेश को अधिक पैसे की उम्मीद थी, इसलिए उसने अपनी डीसीएम आयशर गाड़ी नंबर: टीएस-19-टी-3447 ली और कुष्टगी, कर्नाटक गया, जहां रामैया उर्फ रमना ने खाली गाड़ी को अज्ञात स्थान पर ले जाकर 150 बैग (3750 किलोग्राम) प्रतिबंधित कपास के बीज से लदा वाहन वापस लौटा दिया।

डीजीपी ने अखिल भारतीय पुलिस वॉलीबॉल टूर्नामेंट के विजेताओं की सराहना की

हैदराबाद, 20 मार्च (स्वतंत्र वार्ता)। हरियाणा के करनाल में 7 से 11 मार्च 2025 तक आयोजित 73वां अखिल भारतीय पुलिस वॉलीबॉल क्लस्टर के खिलाड़ियों ने अच्छा प्रदर्शन किया और टीम इवेंट (ए, बी और सी) में 11 कांस्य पदक जीते।

तेलंगाना पुलिस वॉलीबॉल क्लस्टर खिलाड़ियों ने मधुबन, करनाल, हरियाणा में आयोजित 73वें अखिल भारतीय पुलिस वॉलीबॉल क्लस्टर 2024-25 में भाग लिया है। इसमें सेपकटकरा खिलाड़ियों ने 3 टीम इवेंट में 11 कांस्य पदक जीते हैं, टीम-ए, आर.वेंकटेश, पीसी, चिक्कड़पल्ली पीएस, हैदराबाद, एन.मनोज कुमार, पीसी, सीएआर मुख्यालय, साइबराबाद और बी.रमेश, जेसी, ग्रेहाउंड्स ने टीम इवेंट में कांस्य पदक जीता है, टीम-बी, ए.राजेंदर, पीसी, 13वीं बटालियन टीजीएसपी, मंचेरियल, पी.गोपी, पीसी, एआर मुख्यालय, कोमाराम भीम असिफाबाद, बी.रितेश, पीसी, आईटी और संचार और बी.मनोज कुमार, पीसी, चौथी बटालियन टीजीएसपी, मामूनूर, वारंगल ने टीम स्पर्धा में कांस्य पदक जीता है, टीम-सी, के.नरेश, एचसी, चिक्कड़पल्ली पीएस, हैदराबाद, एम.मोहन लाल, पीसी, सीएआर मुख्यालय, हैदराबाद, बी.संजीव कुमार, पीसी, सीएआर मुख्यालय, हैदराबाद ने टीम स्पर्धा में कांस्य पदक जीता है। कोच जी.शशिकांत, आईटी सेल डीजीपी कार्यालय रहे। इस संबंध में, डॉ. जितेन्द्र डीजीपी, टीजी ने पदक विजेताओं को बधाई दी और सम्मानित किया।

दुर्घटना में दो लोगों की मौत, 11 घायल

मेदक, 20 मार्च (स्वतंत्र वार्ता)। पेड्डा शंकरमपेट मंडल के कोलापल्ली में एनएच-161 पर गुरुवार तड़के एक डीसीएम वैन ने एक निजी ट्रैवल्स बस को टक्कर मार दी, जिससे दो यात्रियों की मौत हो गई और कम से कम 11 अन्य गंभीर रूप से घायल हो गए। बस श्रीशैलम से महाराष्ट्र के तुलजा भवानी मंदिर की ओर जा रही थी। मृतकों में नारायणम्मा (50) और सुरपम्मा (60) थे। घायल यात्रियों में से कई की हालत गंभीर बताई जा रही है। उन्हें इलाज के लिए अस्पताल ले जाया गया है।

डीजीपी ने एवाईसीए और टीडीसीए क्रिकेट टूर्नामेंट शील्ड और लोगो का अनावरण किया

हैदराबाद, 20 मार्च (स्वतंत्र वार्ता)। पुलिस महानिदेशक डॉ. जितेन्द्र ने तेलंगाना जिला क्रिकेट संघ (टीडीसीए) को अमेरिकन यूथ क्रिकेट अकादमी (एवाईसीए) के खिलाड़ियों के साथ एक दिवसीय क्रिकेट मैच आयोजित करने के लिए बधाई दी। डीजीपी ने गुरुवार को डीजीपी कार्यालय में आयोजित एक कार्यक्रम में क्रिकेट टूर्नामेंट शील्ड और लोगो का अनावरण किया। इस अवसर पर बोलते हुए, डीजीपी डॉ. जितेन्द्र ने सुझाव दिया कि 24 से 31 मार्च तक आयोजित होने वाले छह एक दिवसीय मैचों का सफलतापूर्वक आयोजन किया जाना चाहिए। उन्होंने अंडर-17 टीम में भाग लेने वाले एवाईसीए और टीडीसीए के खिलाड़ियों को अपनी शुभकामनाएं दीं। कार्यक्रम में अमेरिकन यूथ क्रिकेटर अकादमी के अध्यक्ष कोलीपाका अरुण, तेलंगाना जिला क्रिकेट संघ के अध्यक्ष अल्लीपुरम वेंकटेश्वर रेड्डी, के. रामिरेड्डी और अन्य ने भाग लिया।

एनजीआरआई में संयुक्त हिन्दी कार्यशाला संपन्न

हैदराबाद, 20 मार्च (स्वतंत्र वार्ता)। दिनांक 19 मार्च को सीएसआईआर-एनजीआरआई के मुख्य भवन में स्थित ई-कक्षा में हैदराबाद स्थित सीएसआईआर के तीनों प्रयोगशालाओं, सीएसआईआर-एनजीआरआई, सीएसआईआर-आईआईसीटी तथा सीएसआईआई -सीसीएमबी के संयुक्त तत्वावधान में एक पूर्णदिवसीय संयुक्त हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया।

इस कार्यशाला में संकाय के रूप में डॉ.वी.वी. राव, केनरा बैंक के विश्रांत मुख्य प्रबंधक (राजभाषा), श्री कमालुद्दीन जी, विश्रांत हिन्दी प्राध्यापक, हिन्दी शिक्षण योजना, गृह मंत्रालय भारत सरकार, श्री चिलुकूरि वेंकट सुब्बाराव, वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी, सीएसआईआर-एनजीआरआई तथा डॉ. सौरभ कुमार, हिन्दी अधिकारी, सीएसआईआर-आईआईसीटी उपस्थित थे। इन्होंने क्रमशः राजभाषा नीति एवं कर्मचारियों की भूमिका, हिन्दी में टिप्पण एवं प्रारुपण लेखन, राजभाषा कार्यन्वयन में डिजिटल उपकरणों की भूमिका तथा हिन्दी में पठन-पाठन एवं लेखन अभ्यास विषयों पर आयोजित सत्रों का संचालन किया।

इस पूर्णदिवसीय संयुक्त हिन्दी कार्यशाला के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता सीएसआईआर-एनजीआरआई के निदेशक डॉ. प्रकाश कुमार जी ने की। इस दौरान मंच पर कार्यशाला के मुख्य अतिथि एवं संकाय सदस्य डॉ.वी.वी. राव, सीएसआईआर-एनजीआरआई के प्रशासन नियंत्रक श्री अंटोनी पीटर राजा, सीएसआईआर-एनजीआरआई के वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी श्री चिलुकूरि वेंकट सुब्बाराव उपस्थित थे। इस कार्यशाला में तीनों प्रयोगशालाओं से 80 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस कार्यशाला का समन्वयन तीनों प्रयोगशालाओं के हिन्दी अधिकारियों ने किया।

पित्ती ट्रस्ट एवं अग्रवाल सेवा दल का, 142वां निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर 23 को

हैदराबाद, 20 मार्च (स्वतंत्र वार्ता)। बदरीविशाल पन्नालाल पित्ती ट्रस्ट एवं अग्रवाल सेवा दल द्वारा श्री बालाजी मंदिर ट्रस्ट राजस्थानी समाज शेर लिंगमपल्ली के सहयोग से 142वां निःशुल्क मेगा स्वास्थ्य जांच शिविर रविवार 23 मार्च को सुबह 10 से दोपहर 2 बजे तक शेर लिंगमपल्ली तारा नगर स्थित श्री बालाजी मंदिर में आयोजित किया जाएगा।

अग्रवाल सेवा दल के अजीत गुप्ता द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, मेगा मेडिकल कैंप में एलसीएस साधुराम नेत्र अस्पताल दोमलगुडा द्वारा निःशुल्क नेत्रों की जांच की जाएगी एवं जरूरतमंदों को चश्मों का वितरण एवं मोतियाबिंद के ऑपरेशन की व्यवस्था की जाएगी। डॉ. अखिला क्लिनिक के जनरल फिजिशियन डॉ. अखिल सुगंधी एवं डॉ. मीनल खिरिया सुगंधी द्वारा सामान्य जांच की जाएगी। अवसर पर किम्स सनशाइन अस्पताल द्वारा ईएनटी, आर्थोपेडिक, कार्डियोलॉजी, ईसीजी-2डी इको-बीएमडी, आरबीएस, रक्तचाप आदि की जांच की जाएगी। अवसर पर श्री भगवान महावीर विकलांग सहायता समिति हैदराबाद द्वारा कृत्रिम अंग वितरण का शिविर लगाया जाएगा और जरूरतमंदों को निशुल्क कृत्रिम अंग, कैलिपर्स आदि का वितरण किया जाएगा। साथ ही निशुल्क डायलिसिस की व्यवस्था की जाएगी। शिविर में ललिता डेंटल क्लीनिक के डॉ.संजय सूर्यवंशी द्वारा दांतों की जांच तथा फिजियोथैरेपी की व्यवस्था, बजाज फिजियोकेयर की डॉ.मीता बजाज द्वारा की जाएगी। स्त्री रोग की जांच एनईओ एशियन क्लीनिक्स की डॉ.सी.नाग जयंती द्वारा की जाएगी। शिविर 23 मार्च को सुबह 10 से दोपहर 2 बजे तक किया जाएगा जबकि रोगियों के नाम का पंजीकरण सुबह 10 से दोपहर 12 बजे तक रहेगा सभी से शिविर का अधिक से अधिक लाभ लेने का आग्रह किया गया है।

सीरवी फ्रेंड्स क्लब करियर काउंसलिंग 23 मार्च को

हैदराबाद, 20 मार्च (स्वतंत्र वार्ता)। सिकंदराबाद पारसीगुटा स्थित सीरवी समाज मंदिर (बडेर) में करियर काउंसलिंग सेशन का आयोजन 23 मार्च कों सिरवी फ्रेंड्स क्लब हैदराबाद द्वारा किया जायेगा। जहां विशेषज्ञों द्वारा मार्गदर्शन दिया जाएगा। परामर्शदाता एवं विभिन्न क्षेत्रों के अनुभवी काउंसलर छात्रों को मार्गदर्शन देंगे। जिससे छात्र अपने भविष्य को बेहतर बना सकें। छात्रों और युवाओं के मार्गदर्शन के लिए नागरिक सेवाएं में अधिकारी, खेल कूद, चार्टड अकाउंटेंट, वकालत, मेडिकल, डाक्टर, आयुवेदिक, आर्किटेक्ट, इन्टेरियर डिज़ाइनर, पायलट, इन्डियन आर्मी, कैप्टन और मेजर, इंजिनियर डीआरडीओ व समाज बन्धु उपस्थित रहेंगे।

बूट कैंप 22 और 23 मार्च को

आसिफाबाद, 20 मार्च (स्वतंत्र वार्ता)। शक्ति अभियान, इंदिरा फेलोशिप आदिलाबाद लोकसभा समन्वयक और कांग्रेस पार्टी संसद प्रभारी आत्रम सुगुनक्का ने कहा कि इंदिरा फेलोशिप तेलंगाना राज्य बूट कैंप इस महीने की 22 और 23 तारीख को कोमारमभीम जिले के लिंगापुर मंडल के चोरपल्ली गांव में आयोजित किया जाएगा। सुगुनक्का ने गुरुवार को जिला मुख्यालय स्थित डीसीसी कार्यालय में आयोजित मीडिया सम्मेलन में यह बात कही। उन्होंने कहा कि कांग्रेस पार्टी की राज्य मामलों की प्रभारी मीनाक्षी नटराजन, टीपीसीसी अध्यक्ष महेश कुमार गौड़ और संयुक्त जिला प्रभारी मंत्री सीतक्का कार्यक्रम की मुख्य अतिथि होंगी। उन्होंने कहा कि पूर्व प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी की स्मृति में, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने राजनीति और शासन सहित हर क्षेत्र में महिलाओं का 50 प्रतिशत प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने के लिए इंदिरा फेलोशिप कार्यक्रम शुरू किया है। इसे सबसे पहले 14 अक्टूबर 2023 को राहुल गांधी द्वारा लॉन्च किया गया था। उन्होंने कहा कि इस कार्यक्रम का उद्देश्य महिलाओं को राजनीति में लाना और उन्हें नेतृत्व गुणों के लिए प्रशिक्षित करना है ताकि वे हर क्षेत्र में अपनी पहचान बना सकें। उन्होंने कहा कि महिला सशक्तिकरण के लिए सभी महिलाओं को इंदिरा फेलोशिप से जुड़ना चाहिए।

महिलाओं का शोषण करने वाला फर्जी 'बाबा' गिरफ्तार

मेदक, 20 मार्च (स्वतंत्र वार्ता)। एक स्वयंभू बाबा, जिसने कथित तौर पर दर्जनों महिलाओं के नग्न वीडियो और तस्वीरें लेने के बाद उन्हें धोखा दिया, को एक पीड़िता की शिकायत के बाद नरसापुर पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। मेदक के पुलिस अधीक्षक डी. उदय कुमार रेड्डी के अनुसार, वेमुलावाड़ा के निकट अनुपुरम निवासी बोम्मेरा बापू स्वामी उर्फ शिवा स्वामी ज्योतिष सेवाएं देने का झांसा देकर महिलाओं को आकर्षित करता था। शिव स्वामी विशेष पूजा करके मानसिक और शारीरिक बीमारियों का स्थायी इलाज भी करता था। पूजा करते समय ठग पानी में नींद की गोलियां मिलाकर महिलाओं को सुला देता था।

अखिल भारतीय बैंक द्वारा 23 मार्च से 25 मार्च तक हड़ताल

हैदराबाद, 20 मार्च (स्वतंत्र वार्ता)। तत्संबंधित वैध मांगों के सौहार्दपूर्ण समाधान की मांग करते हुए, यूनाइटेड फोरम ऑफ बैंक यूनियंस ने 23 मार्च की मध्यरात्रि से 25 मार्च, 2025 की मध्यरात्रि तक 2 दिनों की अखिल भारतीय बैंक हड़ताल का आह्वान किया है। इस संदर्भ में यहां जारी प्रेस विज्ञप्ति में, यूनाइटेड फोरम ऑफ बैंक यूनियंस के आधिकारिक सूत्रों नुसार, अपनी वैध मांगों के तुरंत सौहार्दपूर्ण समाधान हेतु, अखिल भारतीय बैंक द्वारा 23 मार्च से 25 मार्च 2025 तक 2 दिनों की हड़ताल का आह्वान किया है।

इस हडताल का समर्थन करने में यूएफबीयू से यूएफबीयू तेलंगाना राज्य इकाई संयोजक कॉमरेड के आंजनेया प्रसाद, कॉमरेड राम बाबू, कॉमरेड केएस शांडिल्य, कॉमरेड आई कृष्णम राजू, कॉमरेड हटकर शंकर, कॉमरेड वेंकटरामैया, कॉमरेड फणी, आदि शामिल हैं। तत्संबंधित अधिकारियों ने आगे बताया कि, यूनाइटेड फोरम ऑफ बैंक यूनियंस निम्नलिखित 9 बैंक यूनियनों का संयुक्त समन्वय निकाय है, जो सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों, निजी क्षेत्र के बैंकों, विदेशी बैंकों, सहकारी बैंकों और क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों के 8 लाख से अधिक कर्मचारियों और अधिकारियों का प्रतिनिधित्व करते हैं। जिनमें अखिल भारतीय बैंक कर्मचारी संघ, अखिल भारतीय बैंक अधिकारी परिसंघ, राष्ट्रीय बैंक कर्मचारी परिसंघ, अखिल भारतीय बैंक अधिकारी संघ, भारतीय बैंक कर्मचारी महासंघ, भारतीय राष्ट्रीय बैंक कर्मचारी महासंघ, भारतीय राष्ट्रीय बैंक अधिकारी कांग्रेस, बैंक श्रमिकों का राष्ट्रीय संगठन, बैंक अधिकारियों का राष्ट्रीय संगठन आदि शामिल है।

प्रथम पृष्ठ का शेष भाग...

सीनियर आईएएस अभिषेक ...

वो लखनऊ, हमीरपुर, बरेली और अलीगढ़ जिले में डीएम और कलेक्टर की जिम्मेदारी संभाल चुके हैं। अभिषेक प्रकाश राजधानी लखनऊ में 31 अक्टूबर 2019 से 7 जून 2022 तक जिलाधिकारी रह चुके है। 23 अक्टूबर 2020 से 25 जुलाई 2021 तक लखनऊ डीएम के साथ ही एलडीए वीसी की भी जिम्मेदारी संभाल चुके हैं। अभिषेक प्रकाश ने अपने कार्यकाल में कई महत्वपूर्ण पदों की जिम्मेदारी संभाली है।

अभिषेक प्रकाश पर भ्रष्टाचार का आरोप :

आईएएस अभिषेक प्रकाश मौजूदा समय में औद्योगिक विकास विभाग के सचिव और यूपी इन्वेस्ट के सीईओ हैं। उन्हें योगी सरकार ने सस्पेंड कर दिया है। मिल रही जानकारी के मुताबिक, आईएएस अभिषेक प्रकाश पर भ्रष्टाचार का आरोप लगा है।

एसटीएफ की जांच में आरोप सही :

बताया जा रहा है कि एक उद्यमी ने सोलर इंडस्ट्री लगाने के लिए इन्वेस्ट यूपी में आवेदन किया था। आरोप है कि उस उद्यमी से कमीशन मांगा गया था। इसको लेकर उद्यमी ने सीएम योगी से की थी। मामले में एसटीएफ ने जांच की तो आरोप सही पाए थे। इस मामले में निकांत जैन को गिरफ्तार कर लिया गया है। जबकि आईएएस अभिषेक प्रकाश को सस्पेंड कर दिया गया है। उनपर भी गंभीर आरोप लगे हैं।

एलन मस्क की ...

अपनी याचिका में 'एक्स' ने दावा किया कि केंद्र का रुख श्रेया सिंघल मामले में सुप्रीम कोर्ट के 2015 के फैसले से उलट है। उस फैसले में शीर्ष कोर्ट ने कहा था कि कंटेंट को केवल उचित न्यायिक प्रक्रिया या धारा 69ए के तहत कानूनी रूप से रोका जा सकता है। सूचना और प्रसारण मंत्रालय (आई एंड बी) के अनुसार, धारा 79 (3) (बी) ऑनलाइन प्लेटफार्मों को अदालत के आदेश या सरकारी अधिसूचना द्वारा निर्देशित होने पर अवैध सामग्री को हटाने का आदेश देती है।

ममता ने लंदन ...

मुख्यमंत्री ने यह भी कहा कि उनका विदेश दौरा राजनीति से जुड़ा हुआ नहीं है, बल्कि एक सम्मानजनक अवसर है, जहां वह लंदन के ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में व्याख्यान देने जा रही हैं। इस दौरे के दौरान वह 25 मार्च को कुछ उद्योगपतियों से मुलाकात करने वाली हैं, ताकि राज्य में निवेश लाया जा सके। सीएम ममता ने अपनी यात्रा के दौरान प्रशासन में किसी भी तरह की समस्या से निपटने के लिए एक पांच सदस्यीय कार्यदल और मंत्रियों का समूह (जीओएम) बनाया है। उन्होंने कहा, मैं भले ही विदेश में रहूं, लेकिन किसी भी आपात स्थिति में मुख्यमंत्री सचिवालय के प्रमुख, मनोज पंत, और मैं फोन पर उपलब्ध रहेंगे। पार्टी के कार्यों को सुब्रत बक्शी और अभिषेक बनर्जी देखेंगे। ममता बनर्जी 21 मार्च को लंदन के लिए रवाना होंगी, और उनका व्याख्यान 27 मार्च को निर्धारित है। इसके बाद, वह 28-29 मार्च के बीच कोलकाता लौटेंगी। उनके इस दौरे को केंद्र सरकार ने पिछले सप्ताह मंजूरी दी थी। इसके साथ ही सीएम ममता बनर्जी ने गुरुवार को महाराष्ट्र के नागपुर में हुई हिंसा की निंदा की और कहा कि भारत विविधता में एकता के लिए जाना जाता है। राज्य सचिवालय में पत्रकारों से बात करते हुए, सीएम ने इस मुद्दे पर ज्यादा कुछ बोलने से परहेज किया और कहा, मैं इस पर टिप्पणी नहीं करना चाहती। लेकिन हम इस हिंसा की निंदा करते हैं। हमारा देश विविधता में एकता के लिए जाना जाता है। बाबरी मस्जिद के विध्वंस के बाद, मैं सांप्रदायिक सद्भाव की रक्षा के लिए सड़कों पर उतरी। मैं नागपुर की स्थिति पर कोई टिप्पणी नहीं करना चाहती। हालांकि, इस दौरान उन्होंने कहा कि उनके इंडिया गठबंधन के सहयोगी, शिवसेना (यूबीटी) के अध्यक्ष उद्धव ठाकरे स्थिति पर टिप्पणी करेंगे।

इधर भाजपा विधायकों ने गुरुवार को पश्चिम बंगाल विधानसभा से वॉकआउट किया, काले झंडे लहराए और स्पीकर बिमान बनर्जी के खिलाफ नारे लगाए और उनके इस्तीफे की भी मांग की। दिन की कार्यवाही शुरू होते ही विपक्षी भाजपा विधायकों ने काले झंडे लहराने शुरू कर दिए और स्पीकर के खिलाफ नारेबाजी की, आरोप लगाया कि वह निष्पक्ष नहीं हैं और सदन में लोकतंत्र को कुचला जा रहा है। भाजपा नेताओं के हंगामे के बीच सदन में विनियोग विधेयक पर चर्चा हुई।

इस दौरान कुछ भाजपा विधायक सदन के वेल में आ गए और विरोध करते हुए विधानसभा के दस्तावेज फाड़ दिए। 35 मिनट से अधिक समय तक प्रदर्शन करने के बाद भाजपा विधायकों ने विधानसभा से वॉकआउट कर दिया। इसके बाद पार्टी के विधायकों ने विधानसभा परिसर के बाहर स्पीकर का पुतला भी फूंका।

स्वतंत्र वार्ता
Email :
svaarttha2006@gmail.com
svaarttha@rediffmail.com
svaarttha2006@yahoo.com
Epaper :
epaper.swatantravaartha.com
For Advertisement :
swadds1@gmail.com

संजू सैमसन की जगह रियान पराग बने कप्तान

राजस्थान रॉयल्स का बड़ा फैसला

मुंबई, 20 मार्च (एजेंसियां)। आईपीएल 2025 सीजन से पहले राजस्थान रॉयल्स पर एक बड़ी आफत टूट गई है. टीम के कप्तान संजू सैमसन अपनी चोट से पूरी तरह उबर नहीं पाए हैं. इसके चलते राजस्थान रॉयल्स ने बड़ा फैसला लेते हुए कप्तानी में बदलाव किया है और स्टार ऑलराउंडर रियान पराग को टीम की कमान सौंपी है. सैमसन इस दौरान रियान पराग की कप्तानी में खेलते दिखेंगे. राजस्थान रॉयल्स का पहला मैच 23 मार्च को सनराइजर्स हैदराबाद से है. इसमें पहली बार रियान पराग कप्तानी की जिम्मेदारी संभालेंगे.

3 मैचों के लिए कप्तान बने रियान

पिछले कुछ हफ्तों से उंगली की चोट से जूझ रहे संजू सैमसन अभी तक पूरी तरह इससे उबर नहीं पाए हैं. सैमसन को बीसीसीआई के सेंटर ऑफ एक्सिलेंस से बैटिंग की इजाजत तो मिल गई लेकिन अभी तक विकेटकीपिंग के लिए हरी झंडी नहीं मिली है. ऐसे में राजस्थान रॉयल्स ने कप्तानी में बदलाव का फैसला किया है. फ्रेंचाइजी ने गुरुवार 20 मार्च को ऐलान किया कि टीम के शुरुआती 3 मुकाबलों के लिए रियान पराग टीम की कमान संभालेंगे, जबकि संजू सैमसन बतौर बल्लेबाज खेलते रहेंगे. हालांकि, पूरी तरह फिट होने के बाद संजू ही कप्तान के रूप में लौटेंगे.

संजू सैमसन ने खुद पूरी टीम के सामने रियान पराग को कप्तानी देने का ऐलान किया. संजू सैमसन को इंग्लैंड के खिलाफ पिछले महीने पांचवें टी20 मैच के दौरान उंगली में चोट लगी थी. इसके बाद से ही वो मैदान से बाहर चल रहे थे. हालांकि, बीसीसीआई की मेडिकल टीम से बैटिंग के लिए फिट घोषित किए जाने के बाद वो हाल ही में राजस्थान रॉयल्स की ट्रेनिंग में लौटे थे. मगर सवाल उनकी विकेटकीपिंग को लेकर था, जहां अभी तक उन्हें बीसीसीआई से फिटनेस सर्टिफिकेट मिलने का इंतजार है.

पहली बार कप्तानी करेंगे रियान

रियान पराग पहली बार राजस्थान रॉयल्स की कप्तानी करेंगे. उन्होंने इससे पहले कभी भी आईपीएल में किसी टीम की कमान नहीं संभाली है. उनके नेतृत्व में राजस्थान रॉयल्स 23 मार्च को हैदराबाद, 26 मार्च को डिफेंडिंग चैंपियन कोलकाता नाइट राइडर्स और 30 मार्च को चेन्नई सुपर किंग्स से भिड़ेगी. रियान को फिलहाल सिर्फ 3 मुकाबलों के लिए कप्तानी मिली है लेकिन सैमसन को पूरी तरह से फिट घोषित किए जाने में अगर देरी होती है तो वो इन मुकाबलों से आगे भी टीम की बागडोर संभाल सकते हैं. रियान इससे पहले घरेलू क्रिकेट में अपनी टीम असम की कप्तानी कर चुके हैं.

आईपीएल में 2029 तक खेलेंगे धोनी ?

सीएसके के साथी क्रिकेटर उथप्पा ने कर दिया बड़ा खुलासा

मुंबई, 20 मार्च (एजेंसियां)। टीम इंडिया के पूर्व कप्तान महेंद्र सिंह धोनी ने 2019 के वनडे वर्ल्ड कप के बाद इंटरनेशनल क्रिकेट से संन्यास का ऐलान कर दिया था. हालांकि, इसके बाद भी उन्होंने आईपीएल में खेलना जारी रखा. आईपीएल 2023 के सीजन के बाद उन्होंने चेन्नई सुपर किंग्स की कप्तानी भी छोड़ दी थी. इससे लगने लगा था कि 2024 उनका आखिरी सीजन होगा. लेकिन उन्होंने सभी को चौंकाते हुए इस साल भी खेलने का फैसला लिया. अब फैंस और क्रिकेट एक्सपर्ट्स यही अनुमान लगा रहे हैं कि वह इस टूर्नामेंट से कब संन्यास लेंगे. हालांकि, अब सीएसके के उनके साथी क्रिकेटर रॉबिन उथप्पा ने उनके खेलने को लेकर एक चौंकाने वाला बयान दिया है. उनका मानना है कि धोनी 2029 तक भी खेल सकते हैं.

धोनी के साथ खेलने वाले ज्यादातर क्रिकेटर आईपीएल से संन्यास ले चुके हैं. अब उन पर ही सबकी नजरें टिकी हुई हैं. हर सीजन की तरह इस बार भी सीजन शुरू होने से पहले यही बात चल रही है कि क्या यह धोनी का आखिरी सीजन होने वाला है? खुद धोनी ने तो कुछ नहीं कहा, लेकिन उनके साथी उथप्पा ने इसका जवाब दिया है.

जियोहॉटस्टार के शो में उन्होंने कहा कि, 'अगर आपके पास स्किल्स हैं और आपके अंदर जुनून है, तो मुझे नहीं लगता कि किसी को रोकना चाहिए। अगर वह इस सीजन के बाद रिटायर हो जाते हैं, तो मुझे हैरानी नहीं होगी। लेकिन अगर वह अगले 4 सीजन खेल जाते हैं, तो भी मुझे हैरानी नहीं होगी.' हालांकि, धोनी ने अभी अपने संन्यास को लेकर कुछ नहीं कहा है.

पहले जैसी नहीं रही धोनी की फिटनेस

उथप्पा के इस बयान ने सभी को चौंका दिया है, क्योंकि धोनी की फिटनेस पहले जैसी नहीं रही. पिछले दो सीजन में उन्होंने सिर्फ 130 गेंदों का सामना किया है. वहीं आईपीएल 2024 में खेलने के लिए उन्हें घुटने की सर्जरी करानी पड़ी थी. टूर्नामेंट के दौरान वह रन दौड़ने में संघर्ष करते हुए भी नजर आए थे. हालांकि, इन सभी परेशानियों के बावजूद उन्होंने पूरे सीजन में विकेटकीपिंग की थी. इसलिए उथप्पा का मानना है कि धोनी के दिमाग में क्या चल रहा है, उसे कोई नहीं पढ़ सकता है. हर चीज को करने का उनका अपना तरीका है, जिसमें वह सफल रहते हैं.

22 मार्च से आईपीएल के 18वें सीजन की शुरुआत हो रही है. वहीं 23 मार्च को चेन्नई सुपरकिंग्स और मुंबई इंडियंस की टक्कर एमए चिदंबरम स्टेडियम में होगी. इस मैच के लिए धोनी ने तैयारी शुरू कर दी है. 43 साल के धोनी 10 महीनों के बाद क्रिकेट के मैदान पर खेलने के लिए उतरने वाले हैं. हाल ही में वो ट्रेनिंग सेशन के दौरान बड़े शॉट्स की प्रैक्टिस करते नजर आए.

जहीर खान बोले- ऋषभ पंत अच्छे कप्तान

हम आक्रामक क्रिकेट खेलने आए हैं, गेंदबाजों की फिटनेस अहम

लखनऊ, 20 मार्च (एजेंसियां)। लखनऊ सुपरजायंट्स के मेंटर जहीर खान बोले कि महेंद्र सिंह धोनी जब तक खेलेंगे, तब तक आईपीएल में उनका जलवा बना रहेगा। उनकी लोकप्रियता लखनऊ ही नहीं, पूरे देश के मैदानों में हैं। उसे कम नहीं किया जा सकता। हमारी टीम के कप्तान ऋषभ पंत समेत आईपीएल खेल रहे सभी बड़े भी माही को अपना आदर्श मानते हैं। लखनऊ में होने वाले मुकाबले में हम चेन्नई सुपरकिंग्स को टीम को कड़ी टक्कर देंगे। बाकी अगर उस दिन (14 अप्रैल) को इकाना स्टेडियम धोनी की शर्ट से रंग भी जाए तो हमें कोई हैरत नहीं होगी।

ऋषभ पंत के नेतृत्व में चढ़कर खेलेगी एलएसजी की टीम

जहीर खान ने ऋषभ पंत अच्छे कप्तान हैं। वह टीम को आगे ले जाएंगे। हमें उनसे बहुत उम्मीद है। एक अच्छा लीडर टीम को आगे ले जाने का काम करता है। ऋषभ पंत पर मैदान में चुटीले अंदाज के बारे में पूछे गए एक प्रश्न के जवाब में उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा कि मैं, समझता हूं। उनका अंदाज इसी तरह से क्रिकेट खेलने का है। इसी तरह का क्रिकेट एलएसजी आईपीएल में खेलेगी, लेकिन टीम के सभी खिलाड़ी आक्रमक खेल को तरहीज देंगे। इससे बेहतर परिणाम सामने आएंगे।

गेंदबाजों को फिटनेस का ख्याल रखना होगा

खिलाड़ियों के तेज गेंदबाजी करने की कोशिश में चोटिल होने पर कहा कि अपनी स्ट्रेंथ के हिसाब से काम करना होगा। इससे बेहतर परिणाम सामने आएंगे। तेज गेंदबाजों को इंजरी से परेशान होने की जरूरत नहीं है। यह तो खेल का एक हिस्सा है, जिसे नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। आईपीएल के लिए अच्छी टीम हमें चाहिए, अच्छी क्रिकेट खेलनी है। हमारे पास पॉजिटिव आउटलुक वाली क्रिकेट टीम है। गेंदबाज भी इस टीम का अहम हिस्सा हैं।

ऋषभ पंत से बात करते जहीर खान। - फोटो : अमर उजाला।

मुकाबलों के दौरान आईपीएल के लिए टीम कॉम्बिनेशन पर पूछे गए सवाल के जवाब में उन्होंने कहा अभी उस पर नहीं जाऊंगा, लेकिन इसका अंदाजा पहले मैच तक लग जाएगा। अभी आप लोग इस पर अंदाजा लगाइए। बतौर टीम आप जीतते हैं बतौर टीम आप हारते भी हैं। हर खिलाड़ी को एक रोल दिया गया है, जो मैच में अपने प्रदर्शन से उपस्थिति दर्ज कराएंगे। आईपीएल में कई मैच खेलने हैं। इसलिए अंतिम एकादश में कई बार बदलाव भी होंगे।

सीएम योगी खेलों के बढ़ावे के लिए कर रहे काम

यूपी में खेलों के विकास के लिए काफी काम हो रहा है। यह प्रदेश तेजी से आगे बढ़ रहा है। योगी आदित्यनाथ से मुलाकात के बाद टीम के खिलाड़ियों का उत्साह बढ़ा है। उन्होंने हमारी बातों को ध्यान से सुना। यह अच्छी बात है। खेलों के प्रति उनका विजन शानदार है। हमने उन्हें लखनऊ में होने वाले आईपीएल मुकाबले देखने के लिए आमंत्रित किया है।

कबाब और बिरयानी खिलाड़ियों की पहली पसंद

जहीर खान से लखनऊ में उनके पसंदीदा खान-पान के बारे में पूछा गया तो उन्होंने बताया कि नई चीज यहां पर बहुत आ रही है। कभी कबाब आ रहा है, कभी बिरयानी आ रही है। खिलाड़ियों का ध्यान रखना पड़ता है। हालांकि यह सब उन्हें पसंद भी खूब आ रहा है। पिछले कुछ समय में प्रशंसकों के बीच लखनऊ सुपरजायंट्स को सपोर्ट बढ़ा है, जो आने वाले मुकाबलों में टीम का उत्साह बढ़ाएगा।

वुशू फेडरेशन कप चैंपियनशिप में हिमाचल प्रदेश के 22 खिलाड़ी दिखाएंगे दम

जाहू (हमीरपुर), 20 मार्च (एजेंसियां)। अखिल भारतीय वुशू खेल संघ के उपाध्यक्ष एवं प्रदेश महासचिव पीएन आजाद ने बताया कि पुरुष वर्ग की टीम में सांसू स्पर्धा में सोनू 60 किलोग्राम, पीयूष 65 किलोग्राम, उत्तम चंद 70 किलोग्राम, सुनील कुमार 75 किलोग्राम और हर्षित संसपाल 90 किलोग्राम भार की प्रतियोगिता में भाग लेंगे।

वुशू महिला-पुरुष वर्ग फेडरेशन कप 24 से 28 मार्च तक छत्तीसगढ़ के बिलासपुर में खेला जाएगा। फेडरेशन कप में हिमाचल की दोनों टीमें भाग लेंगी। पुरुष वर्ग में 10 और महिला वर्ग में 12 खिलाड़ी सांसू और तालू स्पर्धा में प्रदेश का प्रतिनिधित्व करेंगे। अखिल भारतीय वुशू खेल संघ के उपाध्यक्ष एवं प्रदेश महासचिव पीएन आजाद ने बताया कि पुरुष वर्ग की टीम में सांसू स्पर्धा में सोनू 60 किलोग्राम, पीयूष 65 किलोग्राम, उत्तम चंद 70 किलोग्राम, सुनील कुमार 75 किलोग्राम और हर्षित संसपाल 90 किलोग्राम भार की प्रतियोगिता में भाग लेंगे।

तालू प्रतियोगिता में ललित चौहान गुनशू, हेमराज ननक्वॉन, अंशुमन ननक्वॉन, शेर सिंह ताईजीक्वॉन व्यावहारिक और अजय कुमार विंगचुंग प्रतियोगिता में भाग लेंगे। महिला वर्ग की सांसू स्पर्धा में गुलशन 75 किलोग्राम भार में भाग लेंगी। तालू स्पर्धा में रिया वर्मा, शीला बगुआझां, शिवानी गुनशू, ज्योति ननदऊ, दीक्षा ननक्वॉन, पायल ननक्वॉन, आर्य ताईजीजियॉन, रजनी देवी ताईजिक्वॉन व्यावहारिक, मनोरमा जियांशू में भाग लेंगी।

पहले ही दौर में हारकर बाहर हुई पीवी सिंधू

प्रणय को हराकर श्रीकांत प्री-क्वार्टरफाइनल में पहुंचे

बेसल, 20 मार्च (एजेंसियां)। दो बार की ओलंपिक पदक विजेता और पूर्व विश्व चैंपियन पीवी सिंधू स्विस ओपन बैडमिंटन टूर्नामेंट के पहले दौर में हारकर बाहर हो गईं। सिंधू का इस साल खराब प्रदर्शन जारी है। दुनिया की 17वें नंबर की खिलाड़ी सिंधू को दुनिया की 31वें नंबर की खिलाड़ी जूली जैकबसेन से 61 मिनट तक चले मुकाबले में 21-17, 21-19 से हरा दिया। सिंधू इस साल लगातार तीसरी बार पहले दौर से बाहर हुई हैं। उन्होंने इंडियन ओपन के क्वार्टर फाइनल में पहुंचकर साल की शुरुआत की थी, लेकिन इंडोनेशिया मास्टर्स, ऑल इंग्लैंड ओपन और अब स्विस ओपन में राउंड एक से आगे नहीं बढ़ सकी। इस टूर्नामेंट को उन्होंने 2022 में जीता था।

पुरुष एकल स्पर्धा की बात करें तो किदांबी श्रीकांत ने शुरुआती दौर के मुकाबले में हमवतन एचएस प्रणय को एक कठिन मैच में 23-21, 23-21 से हराया और प्री क्वार्टर फाइनल में जगह बनाई। पुरुष एकल विश्व रैंकिंग में 49वें स्थान पर खिसक चुके श्रीकांत अब अंतिम-16 के मैच में दुनिया के छठे नंबर के खिलाड़ी चीन के ली शिफेंग से भिड़ेंगे।

वहीं, दुनिया के 64वें नंबर के खिलाड़ी क्वालिफायर शंकर सुब्रमण्यन ने पुरुष एकल में मैग्नस जोहानिसन को 21-5, 21-16 के प्रभावी स्कोर से हराकर दूसरे दौर में प्रवेश किया। अब उनका सामना डेनमार्क के दुनिया के दूसरे नंबर के खिलाड़ी एंडर्स एंटोनसेन से होगा। महिला एकल में अनुपमा उपाध्याय और इशारानी बरुआ अपने-अपने मैच जीतकर आगे बढ़ने में कामयाब रहीं। अनुपमा ने उभरती हुई भारतीय स्टार नमोल खरब को 21-14, 21-13 से हराया, जबकि इशारानी बरुआ ने आकर्षी कश्यप को 21-18, 17-21, 20-22 से शिकस्त दी। मालविका बंसोड़, किरण जॉर्ज और आयुष शेट्टी समेत बाकी भारतीय बैडमिंटन खिलाड़ी पहले दौर से आगे नहीं बढ़ सके।

स्विस ओपन 2025 बैडमिंटन: भारत का दूसरे दिन का परिणाम

पुरुष एकल

आयुष शेट्टी केंटा निशिमोतो से 21-15, 21-19 से हार गए

किदांबी श्रीकांत ने एचएस प्रणय को 23-21, 23-21 से हराया। शंकर सुब्रमण्यन ने मैग्नस जोहानसेन (डेनमार्क) को 21-5, 21-16 से हराया। किरण जॉर्ज रासमस गेम्के (डेनमार्क) से 21-18, 17-21, 10-21 से हार गए।

महिला एकल

वारनिंग बरुआ ने आकर्षी कश्यप को 21-18, 17-21, 20-22 से हराया। आर संतोष रामराज लाइन क्रिस्टोफरसन (डेनमार्क) से 21-11, 21-17 से हार गईं। मालविका बंसोद मिशेल ली से 20-22, 21-14, 21-19 से हार गईं

राष्ट्रीय मुक्केबाजी पर चुनावी आंच, लवलीना को खेलने से रोका

बीएफआई अध्यक्ष ने लगाए गंभीर आरोप

नई दिल्ली, 20 मार्च (एजेंसियां)। भारतीय मुक्केबाजी महासंघ (बीएफआई) के चुनाव की आंच शुक्रवार से ग्रेटर नोएडा में शुरू हो राष्ट्रीय महिला मुक्केबाजी चैंपियनशिप पर पड़ गई है। बीएफआई के अध्यक्ष अजय सिंह की ओर से महासचिव हेमंत कलिता और कोषाध्यक्ष दिग्विजय सिंह को निलंबित किए जाने के बाद असम ने इस चैंपियनशिप में टोक्यो ओलंपिक पदक विजेता मुक्केबाज लवलीना समेत सभी मुक्केबाजों की भागीदारी रोक दी है।

अजय सिंह ने आरोप लगाया है कि असम मुक्केबाजी से जुड़े होने के कारण हेमंत कलिता के कहने पर लवलीना को इस चैंपियनशिप में खेलने से रोका गया है। दावा यहां तक किया गया है कि हिमाचल प्रदेश के मुक्केबाज भी चैंपियनशिप में शिरकत नहीं करेंगे। अजय सिंह ने दावा किया कि कई मुक्केबाजों से रेल और हवाई यात्रा के टिकट रद्द कराए गए हैं, लेकिन वह इन मुक्केबाजों को खिलाने के लिए पूरा जोर लगा रहे है, चाहें इसके लिए उन्हें अपनी जेब से पैसा क्यों नहीं देना पड़े।

कलिता ने आरोपों को खारिज किया...

वहीं, हेमंत कलिता ने अजय सिंह के इन आरोपों को खारिज कर दिया है। उनका कहना है कि टूर्नामेंट को सिर्फ 15 दिन के नोटिस पर कराया जा रहा है। राज्य इसके लिए तैयार नहीं थे। इस बारे में राज्यों ने बीएफआई को लिखा है। यह सब उन्हें बदनाम करने के लिए हो रहा है। चैंपियनशिप के लिए अब तक 22 राज्यों ने एंट्री भेजी है। लवलीना ने पहले वीडियो जारी कर कहा था कि वह राष्ट्रीय चैंपियनशिप में उतरने जा रही हैं।

बीएफआई को झटका, फैसले पर लगी रोक

नई दिल्ली। दिल्ली हाईकोर्ट ने भारतीय मुक्केबाजी महासंघ के चुनाव में केवल निर्वाचित सदस्यों के भाग लेने के आदेश पर रोक लगा दी है। न्यायमूर्ति मिनी पुष्करना ने दिल्ली एमेच्योर मुक्केबाजी संघ की याचिका पर सुनवाई करते हुए आदेश दिया कि बीएफआई की ओर से 7 मार्च के परिपत्र के क्रियान्वयन पर अगली सुनवाई तक रोक लगाई जाती है।

बता दें भाजपा सांसद अनुराग ठाकुर को हाल ही में महासंघ की चुनाव प्रक्रिया के लिए अयोग्य घोषित किया गया था, क्योंकि उनका नामांकन 7 मार्च के परिपत्र का उल्लंघन करता था। न्यायालय ने स्पष्ट किया कि चुनाव की प्रक्रिया परिणामों की घोषणा के साथ जारी रहनी चाहिए, लेकिन यह याचिका के परिणाम के अधीन होगी। न्यायालय ने नोटिस जारी कर केंद्र और महासंघ को चार सप्ताह में जवाब दाखिल करने का समय दिया। बीएफआई के 7 मार्च के नोटिस में कहा गया है कि राज्य इकाइयों की वार्षिक आम बैठक के दौरान केवल विधिवत निर्वाचित सदस्यों ही अपने राज्यों का प्रतिनिधित्व करने के लिए अधिकृत हैं।

पुरुषत्व के आरोपों में घिरीं बॉक्सर खेलीफ को ट्रंप का डर नहीं

महिला वर्ग में खेलना जारी रखेंगी

लंदन, 20 मार्च (एजेंसियां)। पेरिस ओलंपिक में वेल्टरवेट वर्ग का स्वर्ण पदक जीतने वाली और पुरुषत्व के लक्षणों के आरोपों में घिरीं अल्जीरियाई मुक्केबाज इमाने खेलीफ महिला वर्ग में मुक्केबाजी जारी रखेंगी। उनकी यह घोषणा ऐसे समय में आई है, जब अगला ओलंपिक 2028 में लॉस एंजिलिस में होना है और अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने ट्रांसजेंडर एथलीटों के महिला वर्ग में खेलने पर पूरी तरह पाबंदी लगा दी है।

खेलीफ का कहना है कि वह ट्रंप से भयभीत नहीं हैं और उनका अगला लक्ष्य लॉस एंजिलिस ओलंपिक में अपने स्वर्ण पदक की रक्षा करना है। खेलीफ वह मुक्केबाज हैं, जो पेरिस ओलंपिक में महिला वर्ग में खेली थीं और दो महिला मुक्केबाजों ने उनके मुक्के की ताकत से बाउट को बीच में छोड़ दिया था। इसके बाद उनके महिला वर्ग में खेलने पर काफी बवाल मचा।

आईओसी अध्यक्ष थामस बाख ने हाल ही में कहा था कि खेलीफ और यू टिंग का जन्म एक महिला के तौर पर हुआ है। उनकी परवरिश एक महिला के तौर पर हुई है और उन्होंने महिला वर्ग में हमेशा भागीदारी की है और किसी ने भी आज तक यह साबित नहीं किया है वे ट्रांसजेंडर हैं। हालांकि 2023 की दिल्ली में हुई विश्व चैंपियनशिप में दोनों ही मुक्केबाजों को योग्यता टेस्ट में फेल होने के बाद डिसक्वालिफाई कर दिया गया था।

वर्ल्ड बॉक्सिंग ने खेलीफ के खिलाफ अब तक कुछ नहीं कहा, क्यों कि अल्जीरियाई पासपोर्ट के मुताबिक वह एक महिला हैं। खेलीफ के इस बयान के बाद एक बार फिर विवादों को हवा मिल गई है। खेलीफ के खिलाफ दुनिया भर में महिला वर्ग में पूर्ण रूप से महिलाओं को खिलाए जाने की वकालत करने वाले संगठनों ने अभियान छेड़ रखा है, लेकिन उनका देश उनके साथ दीवार की तरह खड़ा है। खेलीफ ने कहा, ट्रंप ने अमेरिका में ट्रांसजेंडरों के खिलाफ आदेश पारित किया है और वह एक बात साफ कर देना चाहती हैं कि वह ट्रांसजेंडर नहीं हैं।

निवर्तमान आईओसी प्रमुख बाक ने बिंद्रा की तारीफ की

अगले आईओसी अध्यक्ष बनने की रेस में जुआन एंटोनियो आगे

खेल डेस्क, 20 मार्च (एजेंसियां)। अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति के निवर्तमान अध्यक्ष थॉमस बाक ने ओलंपिक मूल्य शिक्षा कार्यक्रम में भागीदारी के लिए अपने मित्र और भारत के पहले व्यक्तिगत ओलंपिक स्वर्ण पदक विजेता अभिनव बिंद्रा की प्रशंसा की। बाक ने यहां ऐतिहासिक आईओसी सत्र के दौरान 'ओलंपिज्म 365 कार्यक्रम' के माध्यम से भारतीय बच्चों को 'बांस' के टेबल टेनिस बोर्ड मिलने की कहानी का जिक्र भी किया। आईओसी ने अपना सत्र शुरू किया जिसमें अध्यक्ष का चुनाव गुरुवार को होगा। अगले आईओसी अध्यक्ष बनने की रेस में जुआन एंटोनियो समरंच सबसे आगे हैं। बाक जून में पद छोड़ देंगे, उन्होंने विभिन्न आयोगों की रिपोर्ट की बात करते हुए भारत के मशहूर निशानेबाज बिंद्रा का नाम लिया जो आईओसी. एथलीट आयोग के वर्तमान सदस्य भी हैं। बाक ने कहा, 'हमारे पास ओलंपिक शिक्षा आयोग है जिसकी अध्यक्ष श्रीमती मिकाएला कोजुआंगको जॉर्स्की हैं। मुझे लगता है कि हम सभी को कार्यक्रम की बड़ी संख्या को समझना चाहिए।'

उन्होंने कहा, 'विशेष रूप से भारत में हमारे मित्र अभिनव बिंद्रा को भी धन्यवाद। आपके प्रयास और आपके आयोग के सदस्यों में से एक के लिए धन्यवाद क्योंकि हम महसूस कर सकते हैं कि यह कार्यक्रम वास्तव में मजबूती हासिल कर रहा है।'

हैदराबाद 72वीं मिस वर्ल्ड की मेजबानी करेगा : जूपल्ली

तेलंगाना की सांस्कृतिक भव्यता दिखाई जाएगी

हैदराबाद, 20 मार्च (स्वतंत्र वार्ता)। हैदराबाद शहर 7 से 31 मई, 2025 तक 72वीं मिस वर्ल्ड प्रतियोगिता की मेजबानी करने के लिए तैयार है, जो एक प्रतिष्ठित वैश्विक आयोजन है, जिसमें तेलंगाना की समृद्ध संस्कृति और पर्यटन क्षमता को उजागर करने की उम्मीद है।

राज्य सरकार ने इस आयोजन की सफलता सुनिश्चित करने के लिए व्यापक तैयारी की है, इसे अंतर्राष्ट्रीय मान्यता और आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के एक महत्वपूर्ण अवसर के रूप में देखा है। इस भव्य आयोजन से पहले, ग्रीनलैंड के टूरिज्म प्लाजा में एक प्री-इवेंट प्रेस कॉन्फ्रेंस आयोजित की गई, जिसमें मिस वर्ल्ड 2024 क्रिस्टीना पिस्ज़कोवा, पर्यटन मंत्री जुपल्ली कृष्ण राव, टीजीटीडीसी के अध्यक्ष पटेल रमेश रेड्डी, पर्यटन प्रमुख सचिव स्मिता सबरवाल और मिस वर्ल्ड लिमिटेड की सीईओ जूलिया मोर्ले सहित प्रमुख गणमान्य व्यक्ति शामिल हुए। मिस वर्ल्ड सुश्री क्रिस्टीना पिस्ज़कोवा ने अपना उत्साह व्यक्त करते हुए भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत की प्रशंसा की और विविधता, प्रतिभा और सशक्तिकरण का जश्न मनाने वाले एक कार्यक्रम का हिस्सा बनने के लिए अपना उत्साह साझा किया। मंत्री जूपल्ली कृष्ण राव ने तेलंगाना में वैश्विक सौंदर्य प्रतियोगिता की मेजबानी के महत्व को रेखांकित किया और इसे राज्य के लिए "ऐतिहासिक क्षण" कहा। मंत्री ने कहा कि इस आयोजन पर कुल 54 करोड़ रुपये खर्च हो रहे हैं, जिसमें से 27 करोड़ रुपये पर्यटन निगम द्वारा आवंटित किए जा रहे हैं। इसके अलावा, निगम अतिरिक्त प्रायोजनों के माध्यम से अधिक धन जुटाने की कोशिश कर रहा है। मिस वर्ल्ड प्रतियोगिता सिर्फ एक सौंदर्य प्रतियोगिता नहीं है, यह महिला सशक्तिकरण और 'उद्देश्यपूर्ण सौंदर्य' का प्रतीक है। महिलाएं समाज को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, और यह आयोजन समावेशिता और विविधता को बढ़ावा देने के हमारे दृष्टिकोण के अनुरूप है। स्किड गेम और बीटीएस के माध्यम से दक्षिण कोरिया की वैश्विक सांस्कृतिक सफलता के साथ तुलना करते हुए, मंत्री ने जोर देकर कहा कि मिस वर्ल्ड प्रतियोगिता तेलंगाना को अंतर्राष्ट्रीय मंच पर स्थापित कर सकती है। यह आयोजन न केवल हमारी सांस्कृतिक पहचान को बढ़ाएगा बल्कि युवाओं के लिए वैश्विक निवेश और रोजगार के अवसर भी आकर्षित करेगा।

विभिन्न देशों के 140 से अधिक प्रतियोगियों और हजारों अंतर्राष्ट्रीय आगंतुकों के साथ, हम पर्यटन क्षेत्र को महत्वपूर्ण बढ़ावा देने की उम्मीद करते हैं, जिससे राज्य के लिए पर्याप्त राजस्व उत्पन्न होगा। आधुनिक समय में सौंदर्य प्रतियोगिताओं की प्रासंगिकता पर बहस के बीच, मंत्री ने आलोचकों से आग्रह किया कि वे प्रतियोगिता को राजनीतिक चश्मे से देखने के बजाय महिला सशक्तिकरण के एक मंच के रूप में पहचानें।

हैदराबाद दुनिया भर से प्रतिभागियों और दर्शकों का स्वागत करने की तैयारी कर रहा है, 72वीं मिस वर्ल्ड प्रतियोगिता एक ऐतिहासिक आयोजन होने जा रहा है, जो वैश्विक पर्यटन और सांस्कृतिक केंद्र के रूप में तेलंगाना की प्रतिष्ठा को और मजबूत करेगा। इस प्रतिष्ठित आयोजन को 3,000 वैश्विक मीडिया भागीदारों द्वारा कवर किया जाता है।

आज से शुरू होंगी एसएससी सार्वजनिक परीक्षाएं

हैदराबाद, 20 मार्च (स्वतंत्र वार्ता)। एसएससी पब्लिक परीक्षाएं शुक्रवार से शुरू होने वाली हैं। राज्य भर में स्थापित 2,650 केंद्रों पर आयोजित होने वाली इन परीक्षाओं के लिए कुल 5,09,403 छात्रों ने पंजीकरण कराया है, जिनमें 2,58,895 लड़के और 2,50,508 लड़कियां शामिल हैं। परीक्षा ड्यूटी के लिए 28,100 निरीक्षक और 2,650 मुख्य अधीक्षक और विभागीय अधिकारी तैनात किए गए हैं।

21 मार्च से 4 अप्रैल तक आयोजित होंगी परीक्षाएं

प्रथम भाषा समग्र और विज्ञान विषयों को छोड़कर परीक्षा का समय: सुबह 9.30 बजे से दोपहर 12.30 बजे तक। प्रथम भाषा संयुक्त समय: सुबह 9.30 बजे से दोपहर 12.50 बजे तक। भौतिक एवं जैविक विज्ञान का समय: दो अलग-अलग दिनों में सुबह 9.30 बजे से 11 बजे तक।

राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों के साथ बैठक आयोजित

हैदराबाद, 20 मार्च (स्वतंत्र वार्ता)। रंगारेड्डी जिला एकीकृत जिला कार्यालय परिसर भवन के सम्मेलन हॉल में जिले की अतिरिक्त कलेक्टर प्रतिमा सिंह और डीआरओ संगीताने विभिन्न राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों के साथ बैठक की।

इस दौरान मतदाता सूची, बूथ और बूथ स्तरीय एजेंटों की नियुक्ति पर चर्चा की गई। इस अवसर पर बोलते हुए जिला अतिरिक्त कलेक्टर ने तेलंगाना सीईओ के निर्देशानुसार विधानसभा क्षेत्रों में मतदान केन्द्र और उन्हें आवंटित बूथ स्तर अधिकारियों से संबंधित विवरण समझाया गया। वाईएलबी नगर, महेश्वरम, राजेंद्रनगर, शेरलिंगमपल्ली, चेवेल्ला, शादनगर, कलवाकुर्ती और इब्राहिमपटनम निर्वाचन क्षेत्रों के ग्रामीण क्षेत्रों में 1065 और शहरी क्षेत्रों में 2436 मतदान केन्द्र हैं। उन्होंने कहा कि इनके लिए कुल 3501 बूथ स्तरीय मतदान अधिकारी तैनात किये गये हैं। उन्होंने बताया कि कुल मतदाताओं की संख्या 36,75,050 है। फॉर्म 6, 7, 8, जो अब तक लंबित हैं, उन पर जल्द ही कार्रवाई की जागी। पूर्व में चुनाव लड़ चुके उम्मीदवारों का व्यय लंबित आवेदनों की बात करें तो जिन अभ्यर्थियों ने अभी तक आवेदन जमा नहीं किए हैं, उन्हें शीघ्र आवेदन कर देना चाहिए। चुनाव आयोग इन पर कार्रवाई करेगा।

साथ ही, जिन लोगों को राजनीतिक दलों से नियुक्त किया जाना था।बूथ स्तर के एजेंटों की नियुक्ति शीघ्र की जाए तथा उनका विवरण उपलब्ध कराया जाए। पार्टी नेताओं को सूचित किया गया कि वे ईआरओ शीघ्र सौंप दें। बैठक में कांग्रेस, बीआरएस, सीपीआई (एम), सीपीआई, बीएसपी आदि राजनीतिक दल मौजूद थे।

आईटी मंत्री ने आलीशान महल को लेकर पूर्व सीएम जगन पर साधा निशाना

कहा-वह राज्य के सद्दाम हुसैन

अमरावती, 20 मार्च (स्वतंत्र वार्ता)। आंध्र प्रदेश के पूर्व सीएम वाईएस जगन मोहन रेड्डी के नए बंगले को लेकर सियासत तेज हो गई है। आंध्र प्रदेश के आईटी मंत्री नारा लोकेश ने पूर्व सीएम रेड्डी की तुलना सद्दाम हुसैन से की है। पूर्व सीएम ने विशाखापट्टनम में रुशिकोंडा पहाड़ी पर महल बनवाया है।

आईटी मंत्री ने कहा कि वाईएसआरसीपी नेता ने सोचा था कि वह 30 साल तक सत्ता में रहेंगे। उन्होंने पर्यटकों को समुद्र तट के खूबसूरत नजारे से वंचित कर दिया। उन्हें लगा कि वह आंध्र के सद्दाम हुसैन हैं, इसलिए उन्होंने विशाल महल बनवाया। उन्होंने तीन भव्य इमारतें बनवाई हैं। एक अपने लिए और दो अपनी बेटियों के लिए। साथ ही अपनी पत्नी के लिए एक विशेष कैंप ऑफिस भी बनवाया। उन्होंने आरोप लगाया कि महल में बड़े हॉल, विशाल कमरे, महंगे इतालवी संगमरमर और शानदार फिटिंग शामिल हैं, जो सभी सार्वजनिक धन से वित्त पोषित हैं। इसके अतिरिक्त उनके 1,000 सुरक्षाकर्मियों के लिए एक विशाल घर बनाया गया था, क्योंकि जगन हमेशा डर में रहते थे।

मंत्री ने कहा कि आंध्र प्रदेश पर्यटन विकास निगम (एपीटीडीसी) ने महल पर 500 करोड़ रुपये खर्च किए हैं और पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय ने इसके निर्माण के लिए एक खूबसूरत पहाड़ी को काटने के लिए 200 करोड़ रुपये का जुर्माना भी लगाया है। जुर्माने के साथ इसकी कुल लागत 700 करोड़ रुपये तक पहुंच गई है। मंत्री ने कहा कि यह सब सिर्फ चार लोगों के लिए है, जबकि जगन की मां और बहन को परिवार से बाहर रखा गया है। यहां तक कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के पास भी इतना भव्य महल नहीं है। पूर्व इराकी तानाशाह सद्दाम हुसैन को खूबसूरत महल बनवाने और आलीशान जीवनशैली जीने के लिए जाना जाता है।

जगन का महल विवादों में क्यों...

पूर्व सीएम जगम मोहन रेड्डी का आलीशान बंगला विवादों के घेरे में है। यह महल 10 एकड़ के विशाल क्षेत्र में फैला है। साथ ही इसमें चार बड़े ब्लॉक बनाए गए हैं। सभी ब्लॉक को अत्याधुनिक सुविधाओं और शानदार डिज़ाइन के साथ तैयार किया गया है। महल की बनावट को खास तौर पर सजाया और डिजाइन किया गया है। सत्तारूढ़ टीडीपी ने आरोप लगाया कि इस हवेली में लगाए गए बाथटब की कीमत 40 लाख रुपये है, और एक-एक कमोड की कीमत 10-12 लाख रुपये से अधिक बताई गई है। इसके साथ ही आरोप है कि इस हवेली ने तटीय विनियमन क्षेत्र (सीआरजेड) मानदंडों का घोर उल्लंघन किया है। टीडीपी का कहना है कि पिछली वाईएसआर कांग्रेस पार्टी (वाईएसआरसीपी) सरकार ने कानूनी दिशा-निर्देशों को नजरअंदाज किया।

यंग इंडिया पुलिस स्कूल ने प्रवेश के लिए लॉटरी निकाली

> सभी कक्षाओं के छात्रों के पहले बैच का स्वागत करने के लिए तैयार

हैदराबाद, 20 मार्च (स्वतंत्र वार्ता)। हाल ही में मुख्यमंत्री द्वारा यंग इंडिया पुलिस स्कूल की वेबसाइट के शुभारंभ के बाद, जिसने प्रवेश की औपचारिक शुरूआत को चिह्नित किया, स्कूल ने प्रवेश प्रक्रिया में निष्पक्षता और पारदर्शिता के लिए अपनी प्रतिबद्धता को बनाए रखा है। भारी प्रतिक्रिया और बड़ी संख्या में प्राप्त आवेदनों को देखते हुए, स्कूल समिति ने पारदर्शिता सुनिश्चित करने के लिए लॉटरी-आधारित प्रवेश प्रणाली को अपनाया। आगामी शैक्षणिक वर्ष के प्रवेश के लिए लॉटरी का ड्रा गुरुवार को पुलिस महानिदेशक और पुलिस आयुक्त सी.वी. आनंद की प्रत्यक्ष देखरेख में मंचिरेवुला में वाई.आई.पी.एस. परिसर में आयोजित किया गया। उन्होंने व्यक्तिगत रूप से विभिन्न कक्षाओं (कक्षा 1 से कक्षा 5) के लिए ड्रा निकाला और मौके पर ही अभिभावकों को प्रवेश पत्र सौंपे। इस कार्यक्रम में प्रिंसिपल, अभिभावक और वरिष्ठ पुलिस अधिकारी मौजूद थे। अभिभावकों ने स्कूल द्वारा अपनाए गए पारदर्शी दृष्टिकोण का स्वागत किया। प्रवेश प्रक्रिया के सफलतापूर्वक पूरा होने के साथ, वाईआईपीएस कई कक्षाओं में छात्रों के अपने पहले बैच का स्वागत करने के लिए तैयार है। मुख्यमंत्री 1 अप्रैल के पहले सप्ताह में स्कूल का उद्घाटन करेंगे।

20 क्विंटल पीडीएस चावल की तस्करी के आरोप में 4 गिरफ्तार

आदिलाबाद, 20 मार्च (स्वतंत्र वार्ता)। उटनूर मंडल केंद्र में बुधवार रात को कथित तौर पर पीडीएस चावल की तस्करी करने के आरोप में चार लोगों को गिरफ्तार किया गया। पुलिस ने चारों के पास से 40,000 रुपये मूल्य का 20 क्विंटल चावल जब्त किया। उत्नूर एएसपी काजल सिंह ने एक बयान में कहा कि नल्लन्ना कृष्णैया, ठाकुर अरुण सिंह, ठाकुर धारा सिंह और ज्ञान सिंह को एक गुप्त सूचना के आधार पर अनाज की खेप ले जाते समय गिरफ्तार किया गया। उन्हें आगे की कार्रवाई के लिए उत्नूर पुलिस को सौंप दिया गया। उन्होंने चेतावनी दी कि इस अपराध में लिप्त लोगों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी।

तापमान में गिरावट के कारण चिलचिलाती गर्मी से मिली राहत

हैदराबाद, 20 मार्च (स्वतंत्र वार्ता)। राज्य में मौसम की स्थिति थोड़ी बेहतर होने की उम्मीद है और तापमान में मामूली गिरावट आने की संभावना है। तेलंगाना में गर्मी की लहर जैसी स्थिति की उम्मीद के बाद, अब लोगों को चिलचिलाती धूप से राहत मिल रही है। आईएमडी-हैदराबाद के पूर्वानुमान के अनुसार, शहर में न्यूनतम तापमान 32 डिग्री सेल्सियस रहने का अनुमान है। आंशिक रूप से बादल छाए रहने के कारण अगले दो दिनों में अधिकतम तापमान 36 डिग्री सेल्सियस तक पहुंचने की उम्मीद है।

गुरुवार को जिलों में अधिकतम तापमान 25 से 28 डिग्री सेल्सियस के बीच रहा। रामागुंडम में औसत अधिकतम तापमान 26.6 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। आदिलाबाद में औसत अधिकतम तापमान 27.8 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया जबकि निजामाबाद में तापमान 26.2 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। खम्मम में अधिकतम तापमान 28.4 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया, जबकि हनमकोंडा में 24.5 डिग्री सेल्सियस तापमान दर्ज किया गया।

मेदक में तापमान 25.2 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। मौसम विभाग ने 23 मार्च को राज्य के कई जिलों में बिजली, तेज हवाएं (40 से 50 किमी प्रति घंटे) और ओलावृष्टि के साथ बारिश और गरज के साथ छींटे पड़ने का अनुमान लगाते हुए ऑरेंज अलर्ट जारी किया है, जिससे मौजूदा गर्मी से थोड़ी राहत मिलेगी।

मच्छरों से बचाने के लिए जीएचएमसी का 'फॉगिंग ऑन रिक्वेस्ट' शुरू

हैदराबाद, 20 मार्च (स्वतंत्र वार्ता)। जीएचएमसी में मच्छर नियंत्रण के लिए फॉगिंग को अब डिजिटल कर दिया गया है। यह सुनिश्चित करने के लिए कि फॉगिंग क्षेत्रों का समय बर्बाद किए बिना समस्या-आधारित आधार पर समाधान किया जाए, नागरिकों को "माई जीएचएमसी" मोबाइल ऐप पर फॉगिंग का अनुरोध करने की सुविधा प्रदान की गई है।

कोई भी नागरिक माई जीएचएमसी ऐप पर लॉग इन कर सकता है और जहां भी मच्छरों की बड़ी समस्या हो, वहां अनुरोध कर सकता है। उनका स्थान और अनुरोध स्वतः ही अधिकारी तक पहुंच जाएगा। कीटविज्ञानी इसे फॉगिंग कार्यकर्ता को सौंपता है। वे अक्षांश और देशांतर के साथ फॉगिंग की एक तस्वीर अपलोड करेंगे और यह बताएंगे कि समाधान ढूंढ लिया गया है। जीएचएमसी में फॉगिंग श्रमिक पर्याप्त स्थान पर उपलब्ध हैं। एक बार अनुरोध किए जाने पर, 100 मीटर के क्षेत्र के भीतर से किए जाने वाले अनुरोध एक सप्ताह के लिए अवरूद्ध कर दिए जाएंगे। अनुरोध पर फॉगिंग की यह सुविधा माई जीएचएमसी ऐप में शुरू की जाएगी, शुरूआत में जुबली हिल्स सर्कल में, और बाद में परिणामों के आधार पर इसे पूरे जीएचएमसी में विस्तारित किया जाएगा। ग्रेटर हैदराबाद नगर निगम ने "माई जीएचएमसी" ऐप में एक नया डिजिटल फीचर "फॉगिंग ऑन रिक्वेस्ट" शुरू किया है। जीएचएमसी का कोई भी नागरिक जो मच्छरों के खतरे का सामना कर रहा है, वह माई जीएचएमसी मोबाइल ऐप में लॉग इन कर फॉगिंग के लिए अनुरोध कर सकता है।

यह अनुरोध सहायक कीटविज्ञानी द्वारा प्राप्त किया जाएगा तथा क्षेत्र के फॉगिंग कार्यकर्ता को सौंपा जाएगा। एक बार जब उस क्षेत्र में फॉगिंग द्वारा अनुरोध पूरा कर लिया जाता है तो भौगोलिक स्थान के साथ फोटो अपलोड करके इसका समाधान कर दिया जाता है। सक्षम प्रौद्योगिकी से कई क्षेत्रों को कवर न करने तथा कुछ क्षेत्रों में बार-बार फॉगिंग की सामान्य शिकायत का समाधान हो सकता है तथा संसाधनों का इष्टतम उपयोग किया जा सकता है। क्षेत्र में स्टाफ की उपलब्धता के आधार पर स्लॉट की संख्या उपलब्ध होगी। एक बार फॉगिंग हो जाने के बाद उसी क्षेत्र से अनावश्यक अनुरोधों को रोकने के लिए उस क्षेत्र को एक सप्ताह के लिए प्रतिबंधित कर दिया जाएगा। प्रारंभ में इस सुविधा की कार्यक्षमता का परीक्षण जुबली हिल्स सर्कल में पायलट के रूप में किया जाएगा और बाद में इसे पूरे जीएचएमसी में विस्तारित किया जाएगा। जीएचएमसी का नागरिकों से अनुरोध है कि वे इस अवसर का लाभ उठायें।

राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए विजयवाड़ा मंडल को पुरस्कार

'आचार्य रघुवीर चल वैजयंती शील्ड' मिला

विजयवाड़ा, 20 मार्च (स्वतंत्र वार्ता)। राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए 'विजयवाड़ा मंडल को आदर्श मंडल के रूप में आचार्य रघुवीर चल वैजयंती शील्ड' प्राप्त हुआ है। रेलवे बोर्ड/नई दिल्ली में आयोजित रेलेव बोर्ड राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक के अवसर पर राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए विजयवाड़ा मंडल को आदर्श मंडल के रूप में आचार्य रघुवीर चल वैजयंती शील्ड से सम्मानित किया गया।

विजयवाड़ा मडल के मंडल रेल प्रबंधक नरेन्द्र ए.पाटील ने सतीश कुमार, अध्यक्ष और मुख्य कार्यकारी अधिकारी, रेलवे बोर्ड से रेलमंत्री शील्ड प्राप्त किया है। यह विजयवाड़ा मंडल के लिए राजभाषा कार्यान्वयन में हो रहे उत्कृष्ट कार्य के लिए बहुत बडी गर्व की बात है।

भाजपा विधायक को नोटिस

हैदराबाद, 20 मार्च (स्वतंत्र वार्ता)। मंगलहाट पुलिस ने गोशामहल से भाजपा विधायक टी राजा सिंह को नोटिस जारी कर उन्हें लगातार फोन कॉल्स में नुकसान पहुंचाने की धमकी के मद्देनजर सुरक्षा प्रोटोकॉल का सख्ती से पालन करने को कहा है। नोटिस में पुलिस ने कहा कि आपको सचेत किया जाता है कि आपको लगातार धमकी भरे फोन आ रहे हैं और यह देखा गया है कि आप अक्सर बिना किसी सुरक्षाकर्मी के आवास और कार्यालय से निकलकर जनता के बीच जा रहे हैं, जो आपके जीवन और सुरक्षा के प्रति आपकी लापरवाही को दर्शाता है। इस संबंध में आपसे अनुरोध है कि आप बुलेट प्रूफ वाहन का उपयोग करके अपनी सुरक्षा करें तथा अप्रिय घटनाओं से बचने के लिए सरकार द्वारा आवंटित (1+4) सुरक्षाकर्मियों का अनिवार्य रूप से उपयोग करें। विधायक ने हाल ही में सार्वजनिक रूप से कहा था कि उन्हें कुछ लोगों ने फोन करके जान से मारने की चेतावनी दी है।

सर्जरी के बाद पहलवान चरण ने जीता स्वर्ण पदक

घुटने की चोट पर पाया काबू

हैदराबाद, 20 मार्च (स्वतंत्र वार्ता)। घुटने की गंभीर चोट से जूझ रहे हैदराबाद के 25 वर्षीय युवा पहलवान चरण ने कृष्णा इस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (केआईएमएस) में सफलतापूर्वक सर्जरी और पुनर्वास करवाया और हाल ही में मुंबई में आयोजित अखिल भारतीय सिविल सेवा कुश्ती चैंपियनशिप 2024-25 में स्वर्ण पदक जीतने में सफल रहे। सर्जरी के बाद चरण को तेलंगाना आबकारी कांस्टेबल की नौकरी भी मिल गई, जिसके लिए उन्हें कठोर शारीरिक फिटनेस टेस्ट पास करना पड़ा।

कुछ दिन पहले, चरण अस्पताल में डॉक्टरों और अन्य देखभाल करने वालों को मिठाई बांटने के लिए वापस आए, जिन्होंने उन्हें ठीक होने में मदद की थी। चरण कहते हैं कि मुझे लगा कि घुटने की गंभीर चोट के कारण सब कुछ खत्म हो गया है। मैंने हार मान ली थी क्योंकि चोट के साथ कुश्ती करना मुश्किल होता है। हालांकि, सर्जरी और पुनर्वास ने काम किया। वरिष्ठ ट्रॉमा विशेषज्ञ और जॉइंट रिप्लेसमेंट सर्जन डॉ. श्रीनिवास काशा कहते हैं कि चरण को छात्र होने के बावजूद कुश्ती का शौक था। हालांकि, प्रशिक्षण के दौरान उसके पैर में गंभीर चोट लग गई, जिससे वह लगभग चलने में असमर्थ हो गया। हमने उसे लिगामेंट टियर और अन्य जटिलताओं का निदान किया। सफल सर्जरी के बाद, हमने सर्जरी के बाद फिजियोथेरेपी के महत्व पर जोर दिया, जिसने अंततः उसे ठीक होने के हर चरण में मार्गदर्शन किया।

देखभाल करने वालों की टीम के प्रयासों की बदौलत, चरण ने न केवल चलने की अपनी क्षमता वापस पाई, बल्कि अपनी ताकत और सहनशक्ति भी फिर से हासिल की। डॉ. श्रीनिवास काशा ने निष्कर्ष निकाला, 'यह मामला इस बात का एक आदर्श उदाहरण है कि कैसे समय पर सर्जरी, उचित चिकित्सा देखभाल और समर्पित फिजियोथेरेपी एथलीटों को न केवल चोटों से उबरने में मदद कर सकती है, बल्कि एक बार फिर अपने खेल में बेहतर प्रदर्शन करने में भी मदद कर सकती है। खेल सर्जन डॉ. रोहित, एनेस्थेटिस्ट डॉ. भारती और डॉ. सुष्मित, फिजियोथेरेपिस्ट अहमद, अभिषेक और रमेश ने चरण के पुनर्वास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

जमीन को लेकर झड़प में 6 लोग घायल

मेदक, 20 मार्च (स्वतंत्र वार्ता)। शिववमपेट मंडल के तिम्मापुर गांव में बुधवार देर रात भूमि विवाद को लेकर दो परिवारों के बीच झड़प में एक ही परिवार के छह लोग घायल हो गए। स्थानीय लोगों के अनुसार, बलैया और भिक्षापति नामक दो भाई गांव में अगल-बगल के घरों में रहते थे।

उनमें से एक ने दूसरे को बोरवेल खोदने से मना किया, जिसके बाद दोनों भाइयों में झड़प हो गई। जब परिवार के बीच विवाद के बाद गांव में गहरी नींद आ गई, तो भिक्षापति, उसके बेटे प्रसाद और राजू ने उसके भाई बलैया, पत्नी अंजम्मा, बेटे नरसिम्हुलु, यादगिरी और दो अन्य लोगों पर दरांती और कुल्हाड़ियों से हमला कर दिया। यादगिरी और अंजम्मा की हालत गंभीर है।

सभी घायलों को स्थानीय अस्पताल में प्राथमिक उपचार के बाद गांधी अस्पताल ले जाया गया। झड़प के कारण गांव में तनाव की स्थिति पैदा हो गई। पुलिस ने स्थिति को नियंत्रण में रखने के लिए बल तैनात किया है। पुलिस ने कथित तौर पर आरोपी को हिरासत में ले लिया है। मामले की जांच जारी है।

शमशाबाद स्थित कन्वेंशन हॉल में लगी आग

हैदराबाद, 20 मार्च (स्वतंत्र वार्ता)। शमशाबाद स्थित एकम कन्वेंशन हॉल में गुरुवार को भीषण आग लग गई। आग सुबह करीब 10 बजे लगी और सूचना मिलने पर नजदीकी अग्निशमन केंद्र से दमकल गाड़ियां आग पर काबू पाने के लिए मौके पर पहुंचीं। स्थानीय पुलिस भी मौके पर पहुंच गई। परिसर में बहुत अधिक मात्रा में ज्वलनशील पदार्थ होने के कारण आग तेजी से फैल रही है। अग्निशमन अभियान जारी है।

राज्यपाल से मिले अधिकारी

विजयवाड़ा, 20 मार्च (स्वतंत्र वार्ता)। भारत और विदेशों के वरिष्ठ रक्षा सेवा अधिकारी तथा राष्ट्रीय रक्षा महाविद्यालय, नई दिल्ली में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे वरिष्ठ सिविल सेवा अधिकारी, अध्ययन दौरे पर राज्य के दौरे के तहत गुरुवार को राजभवन में आंध्र प्रदेश के राज्यपाल एस. अब्दुल नजीर से मिले। इस अवसर पर एपीएचआरडी संस्थान के महानिदेशक आर.पी. सिसोदिया, राज्यपाल के सचिव डॉ.एम. हरि जवाहरलाल भी उपस्थित थे।

Printed and published by Dr. Gireesh Sanghi on behalf of AGA Publications Ltd., at 396, Lower Tankbund, Hyderabad-500080 Editor: *Dhirendra Pratap Singh *responsible for selection of news under the PRB Act. Postal Licence H/SD/380/21-22, Phone:27644999. Fax:27642512, RNI No.69340/98, Regd.:No.AP/HIN/00196/01/1/97/TC.